परमेश्वर

अच्छा है।

...और अच्छा मतलब अच्छा है।

परमेश्वर

अच्छा है।

...और अच्छा मतलब अच्छा है।

डैनी कनेडी

ट्रू कनेक्शनज प्रेस

परमेश्वर अच्छा है… और अच्छा मतलब अच्छा है।

कॉपीराइट © 2012 डैनी कनेडी द्वारा

कवर डिज़ाइन: गीनो मोरो द्वारा

सभी बाइबिल के पद, जब तक अन्यथा निर्दिष्ट न हो, पवित्र बाइबिल के किंग जेम्स संस्करण से लिए गए हैं।

(NASB) से चिह्नित बाइबिल उद्धरण न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल® से लिए गए हैं,

कॉपीराइट © 1960, 1962, 1963, 1968, 1971, 1972, 1973, 1975, 1977, 1995

द लॉकमैन फाउंडेशन द्वारा। अनुमति के साथ उपयोग किया गया।

www.Lockman.org

(The Message) से चिह्नित बाइबिल उद्धरण THE MESSAGE से लिए गए हैं।

कॉपीराइट © 1993, 1994, 1995, 1996, 2000, 2001, 2002।

NavPress Publishing Group की अनुमति से उपयोग किया गया।

(YLT) से चिह्नित बाइबिल उद्धरण पवित्र बाइबिल, यंग्स लिट्रल ट्रांसलेशन से लिए गए हैं।

(NLT) से चिह्नित बाइबिल उद्धरण पवित्र बाइबिल, न्यू लिविंग ट्रांसलेशन से लिए गए हैं।

कॉपीराइट © 1996, 2004, 2007 टिंडेल हाउस फाउंडेशन द्वारा।

टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, इंक., कैरोल स्ट्रीम, इलिनोइस 60188 की अनुमति से उपयोग किया गया।

सर्वाधिकार सुरक्षित।

(TLB) से चिह्नित बाइबिल उद्धरण द लिविंग बाइबिल,

कॉपीराइट © 1971 से लिए गए हैं।

टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, इंक., कैरोल स्ट्रीम, इलिनोइस 60188 की अनुमति से उपयोग किया गया।

सर्वाधिकार सुरक्षित।

(NIV) से चिह्नित बाइबिल उद्धरण पवित्र बाइबिल, न्यू इंटरनेशनल वर्ज़न® (NIV®) से लिए गए हैं।

कॉपीराइट © 1973, 1978, 1984, 2011 Biblica, Inc.™ द्वारा।

Zondervan की अनुमति से उपयोग किया गया।

सर्वाधिकार विश्वव्यापी सुरक्षित।

www.zondervan.com

(AMP) से चिह्नित बाइबिल उद्धरण एम्प्लीफाइड बाइबिल से लिए गए हैं,

कॉपीराइट © 1954, 1958, 1962, 1964, 1965, 1987 द लॉकमैन फाउंडेशन द्वारा।

अनुमति के साथ उपयोग किया गया।

(J.B. Phillips) से चिह्नित बाइबिल उद्धरण स्क्रिब्नर,

साइमन एंड शूस्टर, इंक. के एक प्रभाग, की अनुमति से पुनर्मुद्रित किए गए हैं —

THE NEW TESTAMENT IN MODERN ENGLISH — REVISED EDITION

जे. बी. फिलिप्स द्वारा।

कॉपीराइट © 1958, 1960, 1972 जे. बी. फिलिप्स द्वारा।

सर्वाधिकार सुरक्षित।

प्रकाशक: TruConnections Press

ISBN 13: 978-0-9846967-0-3

समर्पण

यह पुस्तक "रिचेस इन क्राइस्ट" परिवार को समर्पित है।

आपके प्रेम, मित्रता, प्रार्थनाओं और सहयोग के बिना यह पुस्तक संभव नहीं हो पाती।

आपका धन्यवाद।

प्रार्थना है कि हम अपने जीवन की दौड़ ऐसे ही दौड़ते रहें

ताकि हम अपनी मंज़िल इस प्रकार पूरी करें कि

हमारे जीवन से परमेश्वर को सर्वोच्च महिमा मिले

और जितने अधिक लोगों के लिए संभव हो सके,

उन्हें अधिकतम भलाई प्राप्त हो।

सूची

परिचय 9

अध्याय 1 परमेश्वर अच्छा है… और अच्छा मतलब अच्छा है। 11

अध्याय 2 यीशु हमें यह दिखाते हैं कि परमेश्वर अच्छे हैं- और “अच्छा” का मतलब अच्छा है।... 16

अध्याय 3 परीक्षाएँ और कठिनाइयाँ कहाँ से आती हैं?... 19

अध्याय 4 परमेश्वर दुख और कष्टों की अनुमति क्यों देते हैं?... 23

अध्याय 5 हाँ, लेकिन पुराने नियम के बारे में क्या?... 34

अध्याय 6 हाँ, लेकिन अय्यूब के बारे में क्या?... 53

अध्याय 7 हाँ, लेकिन मसीही कष्टों के बारे में क्या?... 88

अध्याय 8 हाँ, लेकिन ताड़ना, अनुशासन या सुधार के बारे में क्या?... 109

अध्याय 9 हाँ, लेकिन परमेश्वर की परीक्षाओं के बारे में क्या? 116

अध्याय 10 क्लेश का एक उदाहरण 124

निष्कर्ष 129

नोट्स.. 130

प्राक्कथन

"इस बात का यत्न कर कि तू परमेश्वर का ऐसा ठहराया हुआ सेवक बने, जिसे लज्जित होना न पड़े, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।" (2 तीमुथियुस 2:15)

मैं डैनी कनेडी का वर्णन करने के लिए आपसे इससे बेहतर कोई तरीका नहीं सोच सकता, जितना कि ऊपर दिए गए पवित्रशास्त्र द्वारा किया जा सकता है। मैंने इस पुस्तक का प्राक्कथन लिखने के लिए इसलिए सहमति दी क्योंकि डैनी परमेश्वर के वचन की सबसे अधिक समर्पित और अभिषिक्त शिक्षिकाओं में से एक हैं, जिन्हें मैंने अपनी तीस वर्षों से अधिक की सेवकाई में जाना है। परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने और उसे ठीक रीति से विभाजित करने के प्रति उनकी लगन लगातार स्पष्ट रही है। जब मुझे पता चला कि डैनी यह पुस्तक लिख रही हैं, तो मुझे मालूम था कि यह मसीह की देह के लिए बहुत लाभदायक होगी। " परमेश्वर अच्छा है...और अच्छा मतलब अच्छा है" आपकी आँखें आत्मिक सच्चाइयों के लिए खोलेगी जो आपके जीवन और सेवकाई को प्रभावित करेंगी।

मैंने पहली बार डैनी से 20 वर्ष पहले मुलाकात की थी जब वह हमारे चर्च "ट्रिनिटी" में रविवार की सभा में शामिल होने आई थीं। मेरी पत्नी और मैं हमेशा ऐसे लोगों पर ध्यान रखते हैं जिनके जीवन में कोई विशेष बुलाहट होती है। डैनी के साथ हमारी पहली बातचीत से ही हमें यह समझ आ गया था कि वह उन्हीं लोगों में से एक हैं।

पिछले 20 वर्षों में, डैनी ने हमारे चर्च में और सेंट लुइस क्षेत्र के कई अन्य चर्चों में अनेक बार प्रचार किया है। वह हमारे लिए और कई अन्य लोगों के लिए एक सम्मेलन वक्ता रही हैं। हम हमेशा इस बात से अचंभित रहे हैं कि वह कैसे परमेश्वर के वचन को ग्रहण करती हैं, उसे विभाजित करती हैं और एक शिक्षिका तथा एक प्रतिभाशाली संप्रेषक के रूप में प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती हैं। वह अपनी सेवकाई "रिचेज़ इन क्राइस्ट" में 6 मार्च 1992 से हर शुक्रवार की शाम ट्रिनिटी में प्रचार कर रही हैं।

वह स्थान जहाँ डैनी की प्रतिभा संभवतः सबसे अधिक चमकती है, वह है हमारे "सिटी बाइबल इंस्टिट्यूट सी,बी,आई" इस में प्रमुख व्याख्याताओं में से एक के रूप में। मेरे लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि हमारे विद्यार्थियों को सर्वोत्तम शिक्षा मिले। हमारे विद्यार्थी उनकी शिक्षण शैली और विषयवस्तु दोनों को बहुत पसंद करते हैं। यह पुस्तक उस सामग्री का विस्तार है जिसे उन्होंने सी,बी,आई के पाठ्यक्रम "द कैरेक्टर ऑफ गॉड" में सिखाया था।

तो आशीषित होने के लिए तैयार हो जाइए। “परमेश्वर अच्छा है… और अच्छा मतलब अच्छा है ” पढ़ने, अध्ययन करने और दूसरों के साथ बाँटने योग्य पुस्तक है।

रेव. डॉ. जोएल ए. ओलिवर

सीनियर पादरी, ट्रिनिटी असेंबली ऑफ गॉड चर्च

प्रेसिडेंट, सिटी बाइबल इंस्टिट्यूट

परिचय

समस्याएँ, परीक्षाएँ, परीक्षण, क्लेश और दुख परमेश्वर से नहीं आते हैं। मैं ऐसा साहसिक कथन कैसे कर सकती हूँ? क्योंकि यही बात यीशु ने इस पृथ्वी पर रहते हुए कही थी: "चोर (शैतान) केवल चुराने, मारने और नष्ट करने के लिए आता है; मैं (यीशु) आया हूँ ताकि वे (मेरे लोग) जीवन पाएँ, और वह जीवन पूर्ण रूप से पाएँ" (यूहन्ना 10:10)।

यीशु के अनुसार, भला परमेश्वर से आता है और बुरा शैतान से आता है।

यदि आपके जीवन में कोई ऐसी चीज़ है जो बुरी है, तो वह परमेश्वर से नहीं आई है। मैं समझती हूँ कि यह कथन कई लोगों को असहमत करता है, और हम पूछते है "हाँ, लेकिन कैसे ? और अयूब के बारे में क्या?" यह सवाल खड़े करता है। लेकिन परमेश्वर की संप्रभुता के बारे में क्या? हाँ, लेकिन पुराने नियम के बारे में क्या? इन सभी का उत्तर बाइबल से दिया जा सकता है। हम इन और अन्य सवालों से अगले पृष्ठों में निपटेंगे।

हमें इस विषय पर चर्चा करने की आवश्यकता क्यों है?

- जब हमें यह निश्चित न हो कि हमारी परेशानियाँ परमेश्वर से आई हैं या शैतान से, तो हम जीवन की चुनौतियों का सामना अनिश्चितता के साथ करते हैं: "परमेश्वर, यदि यह परीक्षा आपसे है, तो मैं इसे स्वीकार करता हूँ और जो कुछ आप मुझे सिखाना चाहते हैं, उसके लिए समर्पित हूँ। शैतान, यदि यह तुमसे है, तो मैं यीशु के नाम में तुम्हारा विरोध करता हूँ।" यह कमजोरी की स्थिति है, शक्ति की नहीं।

- जब लोग मानते हैं कि उनकी कठिनाइयों के लिए किसी न किसी तरह परमेश्वर जिम्मेदार हैं, तो कई बार वे परमेश्वर के प्रति क्रोधित हो जाते हैं।
- मसीहियों के रूप में, हमें विश्वास के साथ जीने और चलने के लिए बुलाया गया है।

  विश्वास के साथ जीने का एक हिस्सा है परमेश्वर पर भरोसा करना। आप किसी ऐसे व्यक्ति पर पूरी तरह भरोसा नहीं कर सकते जिसे आप मानते हैं कि उसने आपको हानि पहुँचाई है या किसी भी तरह हानि पहुँचा सकता है। यही वह स्थिति है जिसमें

हम में से कई हैं— एक ऐसे प्राणी पर भरोसा करने के लिए संघर्ष करना जिस पर हमें यकीन न हो कि हम पूरी तरह निर्भर हो सकते हैं।

भजन 9:10 कहता है, "और जो तेरे नाम को जानते हैं, वे तुझ पर भरोसा करेंगे।" "नाम" शब्द का अर्थ यहाँ चरित्र है। जो लोग परमेश्वर के चरित्र को जानते हैं, जो जानते हैं कि वह वास्तव में कैसा है, वे उसी पर भरोसा करेंगे।

परमेश्वर के चरित्र का सही ज्ञान आपके हृदय में परमेश्वर के प्रति एक अटूट आत्मविश्वास उत्पन्न करेगा। इस पुस्तक के माध्यम से, परमेश्वर की कृपा से, आप सीखेंगे कि बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि परमेश्वर अच्छे हैं… और अच्छा का अर्थ वास्तव में अच्छा ही होता है।

1

परमेश्वर अच्छा हैं... और अच्छा का मतलब अच्छा है।

अधिकांश मसीही कहेंगे कि वे विश्वास करते हैं कि परमेश्वर अच्छे हैं।

जब प्रचारक कहते हैं, "परमेश्वर एक अच्छे भगवान हैं," तो हम सभी सहमति में सिर हिलाते हैं और "आमीन!" कहते हैं। लेकिन अगले ही पल, हम सुनते हैं कि लोग कहते हैं कि परमेश्वर ने उनके मित्र की एक कार दुर्घटना होने दी ताकि उसे सबक सिखाया जा सके, या उन्होंने उनके प्रियजन को कोई बीमारी दी ताकि वह व्यक्ति विनम्र बने।

खुद से पूछें, "क्या एक कार दुर्घटना अच्छी है?"

"क्या कोई बीमारी अच्छी है?"

जब रोज़मर्रा की बातचीत में "अच्छा" शब्द का उपयोग किया जाता है, तो इसका अर्थ होता है कोई ऐसा अनुभव जो लाभकारी, सहायक, या सुखद हो। लेकिन जब "अच्छा" शब्द का उपयोग परमेश्वर के संदर्भ में किया जाता है, तो हमारी सोच अक्सर बदल जाती है। कुछ बुरा होता है और हम कहते हैं कि यह अच्छा है क्योंकि हम मानते हैं कि परमेश्वर ने इसे अनुमति दी, इसे स्वीकार किया, या किसी न किसी तरह इसके पीछे हैं। भले ही हम अपने परिस्थिति को अच्छा न मानते हों, हम तर्क करते हैं कि क्योंकि यह परिस्थिति परमेश्वर के हाथ से आई है, यह निश्चित रूप से अच्छी है क्योंकि वह सर्वोत्तम जानता है।

लेकिन यहाँ वह प्रश्न है जिसका हमें उत्तर ढूँढना है: जब बाइबल कहती है कि परमेश्वर अच्छे हैं, तो उसका क्या अर्थ है? कई वर्ष पहले मैंने यह पता लगाने का निर्णय लिया। बाइबल में "अच्छा" शब्द 655 पदों में आता है। मैंने प्रत्येक पद पढ़ा और एक अद्भुत खोज की। हर बार जब शास्त्र में "अच्छा" शब्द का उपयोग किया गया है, इसका अर्थ वास्तव में

अच्छा ही है। इसका अर्थ वही है जिसे आप और मैं समझते हैं जब हम इसे अपनी दैनिक बातचीत में उपयोग करते हैं।

हम भ्रमित क्यों हैं?

हम जो कुछ भी परमेश्वर और "अच्छा" शब्द के बारे में मानते हैं, उसका अधिकांश हिस्सा हमारे अपने अनुभवों या दूसरों के अनुभवों को देखकर और यह समझने की कोशिश करके आता है कि वे क्यों हुए। उदाहरण के लिए, आंटी मैरी की कार दुर्घटना हो जाती है और लोग यह मान लेते हैं कि परमेश्वर ने यह दुर्घटना इसलिए होने दी ताकि मैरी रास्ते में एम्बुलेंस कर्मियों को सुसमाचार बाँट सके। इसलिए, कार दुर्घटना को अच्छा माना जाता है। लेकिन अगर कोई पृथ्वी पर पिता अपने बच्चे की कार की ब्रेक लाइन काट दे ताकि वह पैरामेडिक्स को उपदेश दे सके, तो हम उसे बुरा कहेंगे—और हम सही होंगे। फिर भी, लोग नियमित रूप से एक अच्छे परमेश्वर को नकारात्मक और विनाशकारी परिस्थितियों का श्रेय देते हैं।

अन्य लोग आंटी मैरी की कार दुर्घटना को "छिपा हुआ आशीर्वाद" कह सकते हैं क्योंकि इससे कुछ भला हुआ—एक पैरामेडिक ने मसीह को स्वीकार किया। लेकिन परमेश्वर बुराई पैदा नहीं करते ताकि उससे भलाई निकले। जब यीशु ने एक अंधे और मुंहबंद व्यक्ति को इलाज किया और उसके अंदर से शैतान को निकाला, तो फरीसियों ने यीशु पर आरोप लगाया कि वह शैतानों को शैतान की शक्ति से निकालते हैं। यीशु का उत्तर था कि यदि शैतान शैतान को निकालता है, तो उसका राज्य अपने आप में विभाजित हो जाएगा (मत्ती 12:24-26)। यीशु के अनुसार, शैतान अपने ही खिलाफ काम नहीं करता। ठीक उसी तरह, परमेश्वर भी नहीं करता। परमेश्वर केवल हमारी परेशानियाँ पैदा नहीं करते ताकि फिर उन्हें दूर करने का मौका मिल सके।

वास्तव में, बाइबल कहती है कि परमेश्वर हमारी परेशानियों में हमें सांत्वना देते हैं।

"वही हमें हमारी सभी परेशानियों में सांत्वना देता है, ताकि हम दूसरों को भी किसी भी परेशानी में वही सांत्वना दे सकें जो हमें परमेश्वर से मिली है" (2 कुरिन्थियों 1:4)।

बाइबल यह भी कहती है कि परमेश्वर हमें हमारे सभी संकटों से मुक्ति दिलाते हैं।

“धर्मी के लिए अनेक संकट हैं; लेकिन प्रभु उसे उन सभी से निकाल देता है” (भजन 34:19)।

यदि परमेश्वर केवल इस लिए हमारी जीवन में संकट भेजते हैं ताकि हमें उनके बीच सांत्वना मिले, या यदि वे केवल इस लिए हमें कष्ट देते हैं ताकि हमें मुक्ति दिला सकें, तो उनका घर विभाजित है और वे अपने ही खिलाफ काम कर रहे हैं।

हालाँकि परमेश्वर हमारी जीवन में बुरी परिस्थितियाँ नहीं भेजते, बाइबल यह सिखाती है कि वह वास्तविक बुराई को लेकर उससे वास्तविक भलाई उत्पन्न कर सकते हैं।

रोमियों 8:28 कहता है, “और हम जानते हैं कि परमेश्वर सभी चीजों को उन लोगों के लिए मिलकर भलाई में कार्य करता है जो परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, जो उनके उद्देश्य के अनुसार बुलाए गए हैं” ।

यही आंटी मैरी के साथ हुआ। परमेश्वर ने उसकी कार दुर्घटना नहीं कराई, लेकिन उन्होंने आंटी मैरी की कठिनाई में वास्तविक बुराई से वास्तविक भलाई उत्पन्न की।

आपको इसे संदर्भ में पढ़ना होगा

परमेश्वर और “अच्छा” शब्द के बारे में कई गलत धारणाएँ उन बाइबल पदों और वाक्यों से आती हैं जिन्हें संदर्भ से बाहर लिया गया है।

मान लीजिए कि आपने मुझे एक पत्र लिखा और मैंने पूरे पत्र को पढ़ने के बजाय केवल एक पंक्ति या वाक्य पढ़ लिया। मैं आसानी से यह गलत समझ सकता हूँ कि आप क्या कह रहे हैं क्योंकि मैंने आपके शब्दों को उस संदर्भ से बाहर ले लिया, जिसमें आपने उन्हें लिखा था। इसी तरह, हम बाइबल से केवल एक पंक्ति या वाक्य निकालकर उसे अपनी व्यक्तिगत परिस्थितियों पर लागू नहीं कर सकते। हमें बाइबल को उसके संदर्भ में पढ़ना सीखना चाहिए।

जब हमारे साथ कुछ बुरा होता है, तो हम अक्सर इसका कारण जानने की कोशिश करते हैं। हमें याद हो सकता है कि हमने सुना है कि परमेश्वर लोगों को ताड़ते हैं।

“जिसे प्रभु प्रेम करता है, वह उसे ताड़ता है, और हर पुत्र जिसे वह स्वीकार करता है, उसे सुधारता है” (इब्रानियों 12:6)।

इसलिए हम निर्णय ले लेते हैं कि हमारी कठिन परिस्थिति परमेश्वर का हमारे प्रति ताड़ने का तरीका है। हालाँकि, यदि हम इब्रानियों 12:6 को संदर्भ में पढ़ें, तो हमें पता चलता है कि प्रभु हमें अपनी वाणी (शब्द) के द्वारा ताड़ते हैं, न कि परेशानियों और परीक्षाओं के द्वारा।

हम इस पद पर अगले अध्याय में अधिक विस्तार से चर्चा करेंगे।

शायद आपने यह कथन सुना होगा, “यह न्यायियों और अन्यायियों पर बरसता है।” जब लोग इस वाक्य का उपयोग करते हैं, तो उनका आमतौर पर यह मतलब होता है कि परमेश्वर सभी के जीवन में, अच्छे और बुरे लोगों के जीवन में समान रूप से वर्षा (या बुरी चीज़ें) लाते हैं। लेकिन ये शब्द उस पद में पाए जाते हैं जिसका परमेश्वर द्वारा लोगों के जीवन में बुरी चीज़ें लाने या अनुमति देने से कोई लेना-देना नहीं है: “पर मैं तुमसे कहता हूँ, अपने शत्रुओं से प्रेम रखो, जो तुम्हें श्राप देते हैं उन्हें आशीर्वाद दो, जो तुम्हें घृणा करते हैं उनके प्रति भला करो, और उनके लिए प्रार्थना करो जो तुम्हारे प्रति अत्याचार करते हैं और तुम्हारा उत्पीड़न करते हैं; ताकि तुम अपने स्वर्ग में पिता के बच्चे बनो: क्योंकि वह अपने सूर्य को बुरे और अच्छे पर उगाता है, और न्यायियों और अन्यायियों पर वर्षा भेजता है” (मत्ती 5:44-45)।

इस पद का मुख्य उद्देश्य उन लोगों के प्रति दयालु होना है जो हमें अन्याय करते हैं, क्योंकि ऐसा हमारे स्वर्गीय पिता का व्यवहार है। वह बुरे और अच्छे दोनों के प्रति दयालु है। परमेश्वर दोनों को सूर्य और वर्षा देता है ताकि वे अपने जीवन यापन के लिए आवश्यक फसलें उगा सकें। यह पद लोगों के जीवन में बुरी चीज़ें लाने के संदर्भ से कोई लेना-देना नहीं रखता। वास्तव में, इसका अर्थ बिल्कुल इसके विपरीत है।

जब परेशानी आती है, तो अक्सर लोग कहते सुनाई देते हैं, “परमेश्वर आपको आपकी क्षमता से अधिक नहीं देंगे।” लेकिन यह विचार भी उस पद के एक भाग पर आधारित है जिसे संदर्भ से बाहर लिया गया है: “और परमेश्वर विश्वासयोग्य हैं; वह आपको उस से अधिक परीक्षा में नहीं डालेंगे जिसे आप सहन कर सकें। लेकिन जब आप परीक्षा में पड़ेंगे, तो वह एक रास्ता भी प्रदान करेंगे ताकि आप उसका सामना कर सकें” (1 कुरिन्थियों 10:13)।

इस पद का ध्यान पाप पर है, न कि परमेश्वर से आने वाली परीक्षाओं पर। आइए इसे और करीब से देखें।

1 कुरिन्थियों 10:7-11 में, प्रेरित पौलुस ने चार मुख्य पापों की सूची दी जो इज़राएलियों ने मिस्र छोड़ते समय किए: मूर्तिपूजा, व्यभिचार, मसीह को उकसाना, और बड़बड़ाना। पौलुस कुरिन्थियों को चेतावनी देते हैं कि वे सावधान रहें कि वे वही पाप न करें (पद 12)। वे आगे कहते हैं कि हम सभी को इन समान चीज़ों के साथ परीक्षा में डाला जाता है (पद 13)।

पौलुस यह बताना चाहते हैं कि परमेश्वर हमें कभी उस से अधिक परीक्षा में नहीं डालते जिसे हम सहन कर सकें क्योंकि यदि हम चाहें, तो वह हमेशा हमें पाप से बचने का मार्ग प्रदान करते हैं। यह पद हमारे जीवन में परमेश्वर द्वारा लाए गए परीक्षाओं और क्लेश के बारे में नहीं है। इसका परमेश्वर द्वारा "हमें हमारी सहन क्षमता से अधिक परेशानियाँ न देने" से कोई संबंध नहीं है।

परमेश्वर एक अच्छे भगवान हैं। प्रश्न यह है: "अच्छा" शब्द का क्या अर्थ है?

बाइबल में हर बार जब "अच्छा" शब्द का उपयोग किया गया है, इसका अर्थ वही है जिसे आप और मैं समझते हैं। हमें बाइबल को परमेश्वर के संदर्भ में "अच्छा" को परिभाषित करने देना चाहिए—हमारे अनुभव, किसी और के अनुभव, या पदों के संदर्भ से बाहर लिए गए हिस्सों के आधार पर नहीं।

2

यीशु हमें दिखाते हैं कि परमेश्वर अच्छा हैं... और अच्छा का मतलब अच्छा है।

भगवान को स्पष्ट रूप से देखने और उनके स्वभाव की एक सटीक तस्वीर प्राप्त करने के लिए, हमें यह समझना होगा कि बाइबल को कैसे पढ़ा जाए। बाइबल हमें भगवान के बारे में जो कुछ भी बताती है, उसे यीशु की रोशनी में पढ़ा और समझा जाना चाहिए। हम यह अध्ययन यह देखकर शुरू नहीं करते कि भगवान लोगों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं — जैसे अय्यूब के साथ, या नूह की बाढ़ के साथ, या उस स्त्री के साथ जो मर गई, जबकि पूरी कलीसिया ने उसके चंगे होने के लिए प्रार्थना की थी। हम अपना अध्ययन यीशु से शुरू करते हैं। इब्रानियों 1:1-2 कहता है कि "पूर्वकाल में परमेश्वर ने बाप-दादाओं से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा और अनेकों रीति से बातें कीं, परन्तु इन आख़िरी दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं"। यीशु, जो वचन देहधारी हुआ, वह परमेश्वर का हमें दिया गया संदेश है।

जब चेलों में से एक ने यीशु से पिता को दिखाने के लिए कहा, तो यीशु ने उत्तर दिया, "जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है" (यूहन्ना 14:9)। यीशु ने उन्हें पिता को दिखाया, न कि इसलिए कि यीशु ही पिता हैं, बल्कि इसलिए कि उन्होंने अपने पिता के वचन बोले और अपने भीतर पिता की सामर्थ से अपने पिता के काम किए। वास्तव में, यीशु ने कहा कि वे केवल वही करते हैं जो उन्होंने अपने पिता को करते हुए देखा। "मैं तुम से सच-सच कहता हूं, पुत्र अपने आप से कुछ नहीं कर सकता; वह वही करता है जो वह अपने पिता को करते देखता है, क्योंकि जो कुछ पिता करता है वही पुत्र भी करता है" (यूहन्ना 5:19)। यदि तुम यह जानना चाहते हो कि परमेश्वर कैसा है, परमेश्वर क्या करता है, और वह लोगों के साथ कैसा व्यवहार करता है, तो तुम्हें यीशु को और वह हमें परमेश्वर के विषय में क्या दिखाते हैं, उसे देखना चाहिए।

बहुत से लोग मानते हैं कि परमेश्वर हमें सिखाने, शुद्ध करने, सिद्ध करने, परखने और ताड़ना देने के लिए मुसीबतें और क्लेश भेजते हैं या होने देते हैं। लेकिन यदि परमेश्वर के बारे में हमारी जानकारी का एकमात्र स्रोत वही है जो यीशु हमें पिता के विषय में दिखाते हैं, तो हम कभी यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकते कि जीवन की कठिनाइयों के पीछे परमेश्वर का हाथ है। सोचो कि जब यीशु इस पृथ्वी पर थे तो उन्होंने क्या किया। उन्होंने लोगों को चंगा किया। उन्होंने लोगों को बंधनों से मुक्त किया। उन्होंने लोगों को परमेश्वर का वचन सिखाया। उन्होंने दुष्टात्माओं को निकाला। उन्होंने लोगों को मरे हुओं में से जिलाया। उन्होंने लोगों को भोजन कराया। उन्होंने लोगों की आवश्यकताओं को पूरा किया। उन्होंने लोगों को प्रोत्साहित और दिलासा दिया। उन्होंने लोगों पर दया की।

ध्यान दो कि यीशु ने क्या नहीं किया। उन्होंने किसी को बीमार नहीं किया और न ही किसी ऐसे व्यक्ति को चंगा करने से इनकार किया जो उनके पास आया। उन्होंने लोगों की परीक्षा लेने के लिए परिस्थितियाँ नहीं बनाईं। उन्होंने लोगों को सिखाने के लिए परीक्षाएँ नहीं भेजीं। उन्होंने आँधियाँ नहीं भेजीं, बल्कि उन्हें रोक दिया। उन्होंने जानवर-गाड़ी की दुर्घटनाएँ नहीं कराईं और न ही किसी एक छिपे हुए आशीर्वाद को भेजा। यीशु ने वे सब चीजें नहीं कीं जिनका दोष लोग अक्सर परमेश्वर को देते हैं।

हमने पिछले अध्याय में यह प्रश्न पूछा था: बाइबल में जब "भला" शब्द का प्रयोग परमेश्वर के संदर्भ में किया जाता है, तो उसका क्या अर्थ होता है? "भला" की परिभाषा वही प्रकार के कार्य हैं जो यीशु ने तब किए जब वे पृथ्वी पर थे। प्रेरितों के काम 10:38 कहता है, "कैसे परमेश्वर ने यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभिषेक किया; और वह भलाई करता हुआ, और उन सब को चंगा करता हुआ जो शैतान से सताए गए थे, घूमता रहा, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।"

अपनी शिक्षाओं के माध्यम से, यीशु ने हमें परमेश्वर को एक भले सांसारिक पिता के रूप में समझने की अनुमति दी। "तुम में कौन मनुष्य ऐसा है कि यदि उसका पुत्र उससे रोटी मांगे तो क्या वह उसे पत्थर देगा? या यदि वह मछली मांगे तो क्या वह उसे साँप देगा? सो जब तुम बुरे होकर भी अपने बालकों को अच्छी वस्तुएँ देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को अच्छी वस्तुएँ क्यों न देगा?" (मत्ती 7:9-11)। यीशु कहते हैं कि हमारा स्वर्गीय पिता सबसे अच्छे सांसारिक पिता से भी उत्तम है। कौन सा भला सांसारिक पिता अपने बच्चे को अनुशासन सिखाने के लिए उसे बीमारी देगा? कौन सा भला सांसारिक पिता

अपने पुत्र का घर उसे सबक सिखाने के लिए जलने देगा? जिस प्रकार यीशु हमें परमेश्वर के विषय में दिखाते और बताते हैं, उसके आधार पर हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि यदि तुम अपने ही बच्चे के जीवन में या किसी ऐसे व्यक्ति के जीवन में जिसे तुम प्रेम करते हो, विपत्ति नहीं लाओगे, तो परमेश्वर भी तुम्हारे ऊपर मुसीबतें नहीं लाएगा।

यीशु ने कहा कि वह केवल वही करते हैं जो वह अपने पिता को करते हुए देखते हैं। इसका अर्थ है कि यदि यीशु कुछ करते हैं, तो पिता भी वही करते हैं। और इसका यह भी अर्थ है कि यदि यीशु कुछ नहीं करते, तो परमेश्वर भी वह नहीं करता। यीशु हमें दिखाते और बताते हैं कि जीवन की परीक्षाएँ और कठिनाइयाँ परमेश्वर की ओर से नहीं आतीं, क्योंकि परमेश्वर अच्छा है... और अच्छा मतलब अच्छा है

3

परीक्षाएँ और कठिनाइयाँ कहाँ से आती हैं?

उससे पहले कि हम उन कई “हाँ, लेकिन…?” सवालों से निपटें जो अक्सर जीवन की परीक्षाओं और चुनौतियों के बारे में चर्चाओं के दौरान उठते हैं, हमें पहले यह जांचना आवश्यक है कि पृथ्वी पर क्लेश और मुसीबतें क्यों हैं।

पाप से श्रापित पृथ्वी में जीवन

जब परमेश्वर ने अपना सृजन कार्य पूरा किया, तो उन्होंने उसे देखा और उसे बहुत भला घोषित किया। “और परमेश्वर ने देखा कि उसने जो कुछ बनाया, वह सब बहुत भला था” (उत्पत्ति 1:31)। याद रखो कि “भला” शब्द का क्या अर्थ है। इसका अर्थ है भला। परमेश्वर की मूल सृष्टि में कोई बीमारी और मृत्यु नहीं थी, कोई प्रलयकारी आँधी नहीं थी, कोई भ्रष्टाचार नहीं था, प्वालों में कोई विष नहीं था, कोई भूकंप या किसी अन्य प्रकार का विनाश नहीं था। सब कुछ बहुत भला था।

जब आदम और हव्वा ने अदन के बगीचे में परमेश्वर की अवज्ञा की, तो उनके पाप का परमेश्वर की सृष्टि पर—मानव जाति और पृथ्वी दोनों पर—महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। आदम के पाप के माध्यम से मृत्यु संसार में आई: “जैसे आदम ने पाप किया, वैसे ही पूरे मानव जाति में पाप प्रवेश कर गया। उसका पाप सम्पूर्ण जगत में मृत्यु फैल गया, जिससे सब कुछ बूढ़ा होने और मरने लगा” (रोमियों 5:12)। आदम के पाप के कारण पृथ्वी में एक श्राप आया। “तुम्हारे कारण भूमि शापित है; जीवन के सभी दिनों में तुम उसकी मेहनत करोगे और उसका

भोजन करोगे" (उत्पत्ति 3:17)। वह तुम्हारे लिए कांटे और कुपोषक पौधे उगाएगी, और तुम उसकी घास खाओगे। तुम्हारे पूरे जीवन में तुम इसे मात देने के लिए पसीना बहाओगे, जब तक तुम्हारा मृत्यु का दिन न आए। फिर तुम उस भूमि में लौट जाओगे, जिससे तुम आए थे" (उत्पत्ति 3:18-19)।

आज पृथ्वी में काम करने वाले प्राकृतिक नियम मुख्य रूप से आदम के पाप और उसके सृजन पर प्रभाव का परिणाम हैं। यीशु ने इसे इस तरह कहा, "अपने लिए धन्य वस्तुएँ पृथ्वी पर न जमा करो, जहाँ कीट और जंग नष्ट कर देते हैं, और जहाँ चोर घुसकर चुराते हैं" (मत्ती 6:19)। अब हम ऐसी पृथ्वी में रहते हैं जहाँ कीट कपड़ों में छेद कर देते हैं और जंग धातु को खा जाती है। यदि आप रसोई की मेज पर टमाटर रख दें और उसे वहीं छोड़ दें, तो वह सड़ जाएगा। ऐसा इसलिए नहीं कि परमेश्वर ने टमाटर को सड़ने के लिए बनाया, बल्कि इसलिए कि मृत्यु और भ्रष्टाचार आदम के पाप के माध्यम से संसार में प्रवेश कर गए और वे पृथ्वी में काम कर रहे हैं।

हर दिन हमें पाप के परिणामों और उसके पृथ्वी तथा मानव जाति पर प्रभावों से निपटना पड़ता है। इसका अर्थ है कि प्रलयकारी आँधियाँ, घास-पत्थियाँ, जंग, क्षय और मृत्यु अब पृथ्वी की संरचना का हिस्सा हैं। हमारे पास ऐसे शरीर भी हैं जो नश्वर हैं और जो बीमारी, बुढ़ापा और मृत्यु के अधीन हैं। हमें उन लोगों के साथ भी संवाद करना पड़ता है जो अविवेकी और पापपूर्ण निर्णय लेते हैं, जो सीधे हमारे जीवन को प्रभावित कर सकते हैं। और हमारे पास एक शत्रु है, शैतान, जो हमें नष्ट करने की कोशिश करता है। ये सभी तत्व मिलकर उस जीवन की कठिनाइयों और समस्याओं का निर्माण करते हैं जिनका हम सामना करते हैं। हाँ, इस संसार में दुःख मौजूद है, लेकिन यह परमेश्वर से नहीं आता। यह उस पृथ्वी में रहने का परिणाम है जिसे पाप ने पूरी तरह बदल दिया है।

शैतान और परमेश्वर...मित्र?

कुछ लोग कहते हैं, "सही है, परमेश्वर लोगों के साथ बुरा नहीं करता, लेकिन वह शैतान को करने की अनुमति देता है। आखिरकार, शैतान परमेश्वर का शैतान है और प्रभु कभी-कभी उसे हमें पीड़ा देने की अनुमति देते हैं ताकि वह हमें परखे, सिखाए और सिद्ध करे।" परमेश्वर और शैतान एक ही पक्ष में नहीं हैं। वे साथ काम नहीं कर रहे हैं। बाइबल कभी शैतान को

परमेश्वर का सहयोगी, परमेश्वर का उपकरण, या परमेश्वर की शिक्षा का साधन नहीं कहती। शैतान को “शत्रु” या “विपरीत” कहा गया है। शैतान नाम का अर्थ है “विपरीत”। स्ट्रॉन्ग का कंकोर्डेंस उसे “भलाई का मुख्य शत्रु” कहता है।

याकूब 4:7 कहता है, “इसलिए अपने आप को परमेश्वर के अधीन करो। शैतान का विरोध करो, और वह तुम्हारे पास से भाग जाएगा।” यदि परमेश्वर शैतान को तुम्हें सिखाने और अनुशासित करने के लिए भेजता है, तो तुम इस वचन के अनुसार शैतान का विरोध कैसे कर सकते हो और फिर भी शैतान के माध्यम से परमेश्वर से शिक्षा, अनुशासन और शुद्धि प्राप्त कर सकते हो? तुम नहीं कर सकते। “हाँ,” कुछ लोग कहेंगे, “लेकिन अय्यूब का क्या? परमेश्वर ने शैतान को अय्यूब पर ढीला नहीं किया क्या?” नहीं, परमेश्वर ने अय्यूब पर शैतान को ढीला नहीं किया। हम अय्यूब की कहानी पर एक अगले अध्याय में चर्चा करेंगे।

परीक्षाएँ, संकट, उत्पीड़न, क्लेश, कठिनाइयाँ और दुःख परमेश्वर की ओर से नहीं आते। यीशु ने बीजारोपक की दृष्टान्त सुनाई जिसमें उन्होंने वचन बोने की बात कही और कहा कि शैतान परीक्षाएँ, क्लेश और उत्पीड़न लाता है ताकि लोगों के हृदय से परमेश्वर का वचन चुरा सके: “बीजारोपक वचन बोता है। और ये वे हैं जो रास्ते के किनारे बोए गए हैं; जब उन्होंने सुना, शैतान तुरंत आता है और उनके हृदय में बोए गए वचन को छीन लेता है। और ये वे भी हैं जो पत्थरीली जमीन पर बोए गए हैं; जब उन्होंने वचन सुना, तुरंत उसे आनंद से ग्रहण करते हैं; और उनमें कोई जड़ नहीं है, इसलिए वे केवल थोड़े समय के लिए टिकते हैं; बाद में, जब वचन के कारण क्लेश या उत्पीड़न आता है, तो तुरंत वे चोट खाते हैं” (मार्क्स 4:14-17)। इस दृष्टान्त का मत्ती का विवरण कहता है: “फिर भी उसमें कोई जड़ नहीं है, पर वह थोड़े समय के लिए टिकता है; क्योंकि जब वचन के कारण संकट या उत्पीड़न आता है, तो वह तुरंत चोट खाता है” (मत्ती 13:21)।

शैतान जीवन की कठिनाइयों के माध्यम से हमारे हृदय से परमेश्वर का वचन चुराने का प्रयास करता है। यह इस प्रकार होता है। हम सभी ऐसी परिस्थितियों में रहे हैं जो ऐसा प्रतीत कराती हैं कि परमेश्वर ने हमें भूला दिया है या वह हमसे प्रेम नहीं करता। हम सभी के पास ऐसे हालात आए हैं जो हमें यह विश्वास दिलाने की कोशिश करते हैं कि हम सफल नहीं होंगे। लेकिन परमेश्वर के अनुसार, उसने हमें नहीं भूला है। वह हमसे प्रेम करता है और वचन करता है कि जब तक वह हमें बाहर नहीं निकालता, वह हमें मार्गदर्शन देगा। कठिन समय में, हमें यह वायदा मिलता है कि हम जो देखते और महसूस करते हैं, उस पर सहमत

हो जाएँ बजाय इसके कि हम बाइबल में परमेश्वर के कहे अनुसार चलें। शैतान को प्रलोभक कहा गया है (1 थिस्सलुनीकियों 3:5) और हमारे संकटों के बीच—संदेह और निराशा के विचारों के माध्यम से—वह हम पर दबाव डालता है कि हम परमेश्वर के वचन को त्याग दें। यदि हम उन विचारों को स्वीकार कर लें जो हमें कहते हैं कि परमेश्वर हमसे प्रेम नहीं करता, उसने हमें भुला दिया है, और हम सफल नहीं होंगे, तो हमने परमेश्वर के वचन को छोड़ दिया। शैतान ने सफलतापूर्वक हमारे हृदय से वचन चुरा लिया है।

जब आप जीवन की कठिनाइयों का सामना करते हैं, तो यह जानना महत्वपूर्ण है कि आपकी परेशानियाँ परमेश्वर की ओर से नहीं आतीं। कठिनाइयाँ, संकट, मुसीबतें और परीक्षाएँ उस जीवन का हिस्सा हैं जो पाप से श्रापित पृथ्वी में रहती हैं। बुरी चीजें इसलिए होती हैं क्योंकि यही पाप से श्रापित पृथ्वी में जीवन है। यदि आप जीवन की चुनौतियों में विजय प्राप्त करना चाहते हैं, तो आपको यह जानना चाहिए कि परमेश्वर किसी भी तरह से आपकी परेशानियों का कारण नहीं है।

4

परमेश्वर दुःख और कष्टों की अनुमति क्यों देते हैं?

भले ही हम इस तथ्य को स्वीकार कर लें कि पृथ्वी में दुःख आदम और हव्वा की अवज्ञा के कारण है, फिर भी कई लोग यह सोचते हैं कि एक भला परमेश्वर दुःख को क्यों बने रहने देता है। हमें यह स्पष्ट होना चाहिए कि हम "अनुमति देना" शब्द से क्या मतलब हैं। जब लोग "परमेश्वर अनुमति देते हैं" शब्द का प्रयोग करते हैं, तो इसमें आमतौर पर वह अर्थ छिपा होता है जो बाइबल की शिक्षा से अधिक है। वे अक्सर यह संकेत देते हैं कि परमेश्वर किसी भी परिस्थिति—चाहे अच्छी हो या बुरी—के हमारे जीवन में होने के पक्ष में हैं क्योंकि उन्होंने उसे होने दिया। हमारे मन में, हम यह मान लेते हैं कि हमारे जीवन में आने वाली किसी भी घटना को परमेश्वर की स्वीकृति मिलनी चाहिए, क्योंकि यदि परमेश्वर इसे होने नहीं देना चाहते, तो वह इसे रोक देते। लेकिन बाइबल से स्पष्ट है कि परमेश्वर चीज़ों को होने से नहीं रोकते, भले ही वह उन चीज़ों के पक्ष में न हों। परमेश्वर लोगों को पाप करने की "अनुमति" देते हैं, भले ही वह पाप से घृणा करते हैं। वह लोगों को नर्क जाने की "अनुमति" देते हैं, भले ही 2 पतरस 3:9 कहता है कि परमेश्वर नहीं चाहते कि कोई नाश हो, बल्कि चाहते हैं कि सभी मसीह में विश्वास करें।

मसीहियों के बीच एक सामान्य विश्वास है कि हर चीज किसी कारण से होती है। इस विचार में यह निहित है कि परमेश्वर अंततः हर चीज के पीछे हैं जो होती है। लेकिन इस जीवन में कई ऐसी चीजें होती हैं जो परमेश्वर की इच्छा नहीं हैं। यीशु ने कहा कि कुछ चीजें इसलिए होती हैं क्योंकि शैतान तुम्हारे पास से चुराने, तुम्हें मारने और तुम्हें नष्ट करने की कोशिश कर रहा है। दुनिया में अधिकांश बुराई मानव के पापपूर्ण निर्णयों का परिणाम है—जो आदम तक वापस जाता है। मैं यह नहीं कह रही कि तुम्हारी वर्तमान परीक्षा तुम्हारे पाप का परिणाम है। हो सकता है, लेकिन अधिक संभावना है कि यह केवल पाप से श्रापित पृथ्वी में जीवन का परिणाम है।

शायद आप ऐसे विचारों से जूझ चुके हैं:

“एक भला परमेश्वर कैसे किसी बच्चे के साथ दुराचार होने की अनुमति दे सकता है और हस्तक्षेप नहीं करता?”

“एक भला परमेश्वर कैसे निर्दोष लोगों को दुःख सहने दे सकता है और कुछ नहीं करता?”

सत्य यह है कि दुःख के विषय में बहुत रहस्य है और हमारे इस अस्तित्व के इस चरण में, हम में से कोई भी पूरी तरह से यह समझ नहीं सकता कि दुःख के प्रत्येक मामले क्यों होते हैं। लेकिन हमें यह नहीं होने देना चाहिए कि जो चीज हम अभी तक नहीं समझ पाए हैं, वह बाइबल जो स्पष्ट रूप से हमें परमेश्वर और उसकी भलाई के बारे में बताती है, उसे कमजोर कर दे।

विचार करें कि हम एक भले परमेश्वर और दुःख के बारे में क्या जानते हैं:

- दुःख पाप के कारण यहाँ है, लेकिन यह हमेशा के लिए नहीं रहेगा। जब यीशु पृथ्वी पर लौटेंगे, तो सभी पीड़ा और दुःख अंततः और स्थायी रूप से समाप्त हो जाएगा (प्रकाशितवाक्य 21:4)।

- मानव इतिहास के 6,000 से 10,000 वर्ष और मानवता द्वारा सहा गया सारा दुःख अनंत काल की तुलना में छोटा है। आज स्वर्ग में कोई भी उस जीवन की कठिनाइयों पर रो नहीं रहा जो उन्होंने अनुभव की थी। मैं किसी भी तरह से लोगों द्वारा सहे गए दुःख को कमतर नहीं कर रही हूँ। हालांकि, अनंत काल पर उचित दृष्टिकोण जीवन की कठिनाइयों के बोझ को हल्का कर सकता है (2 कुरिन्थियों 4:17-18)।

- जब इस पापग्रस्त पृथ्वी पर मानव इतिहास अंततः समाप्त होगा, तो यह अनंत काल के लिए एक स्मारक बनेगा कि क्या होता है जब मनुष्य परमेश्वर से स्वतंत्रता चुनते हैं (उत्पत्ति 2:17; रोमियों 6:23)।

- परमेश्वर, जो सर्वज्ञानी (सब कुछ जानने वाले) और सर्वशक्तिमान (सब कुछ कर सकने वाले) हैं, बुराई और दुःख को अपने अनंत उद्देश्यों की सेवा में लगाने में सक्षम हैं और इससे महान भलाई उत्पन्न कर सकते हैं (रोमियों 8:28; इफिसियों 1:11)।

परमेश्वर सर्वोच्च सत्ता वाले हैं

परमेश्वर कैसा है और वह लोगों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, इसके बारे में कई गलत धारणाएँ परमेश्वर की सर्वोच्चता की गलत समझ से उत्पन्न होती हैं। जब लोग जीवन की परीक्षाओं के संदर्भ में कहते हैं कि "परमेश्वर सर्वोच्च है," तो उनका अक्सर मतलब यह होता है: "यह क्लेशकारी परिस्थिति परमेश्वर के हाथ से आई है और वह जो चाहे कर सकता है क्योंकि वह सबसे अच्छा जानता है।" यह आम नहीं है कि लोग कहें कि परमेश्वर लोगों को बीमार बना सकते हैं, किसी को चंगा करने से इनकार कर सकते हैं, या हमारे किसी प्रियजन का जीवन ले सकते हैं क्योंकि वह सर्वोच्च है। लेकिन सर्वोच्च का अर्थ यही नहीं है। शब्दकोश में "सर्वोच्च" को "सर्वोच्च या उच्चतम शक्ति और अधिकार" के रूप में परिभाषित किया गया है। यह कहना कि "परमेश्वर सर्वोच्च है" का अर्थ है कि वह ब्रह्मांड में सर्वोच्च शक्ति हैं। परमेश्वर "ओम्नी" हैं, जिसका अर्थ है "सभ।" परमेश्वर सर्वशक्तिमान हैं। परमेश्वर सर्वज्ञानी हैं। परमेश्वर सर्ववर्तमान हैं (सभ स्थानों पर एक साथ उपस्थित)।

क्योंकि परमेश्वर सर्वशक्तिमान हैं और ब्रह्मांड में सर्वोच्च अधिकार रखते हैं, वह सब कुछ (अच्छा और बुरा) अपने उद्देश्यों की सेवा में ला सकते हैं। इफिसियों 1:11 परमेश्वर के विषय में कहता है, "जो सब कुछ अपनी इच्छा के उद्देश्य के अनुसार कार्य करता है" । परमेश्वर क्लेशकारी परिस्थितियों का संचालन नहीं करते, लेकिन वह उनका उपयोग करते हैं। दुःख और बुराई का उनका उपयोग वास्तव में उनकी सर्वोच्चता का प्रदर्शन है। परमेश्वर इतने शक्तिशाली हैं कि वह इस संसार में पाप और शैतान के कारण मौजूद वास्तविक बुराई को लेकर उससे वास्तविक भलाई उत्पन्न कर सकते हैं।

परमेश्वर हर उस चीज़ का कारण नहीं हैं जो होती है और वह हर उस चीज़ को नहीं करते जिसके लिए लोग उन्हें जिम्मेदार ठहराते हैं। कुछ लोगों ने मुझसे पूछा है, "यह कैसे सच हो

सकता है? यदि परमेश्वर सर्वोच्च और सर्वशक्तिमान हैं, तो क्या वह हर चीज़ के लिए जिम्मेदार नहीं हैं जो होती है?" बाइबल कहती है कि कुछ चीज़ें हैं जो परमेश्वर नहीं करते और कुछ चीज़ें हैं जो वह कर नहीं सकते।

परमेश्वर नहीं बदलते।

मलाकी 3:6 कहता है, "क्योंकि मैं यहोवा हूँ, मैं नहीं बदलता।" याकूब 1:17 कहता है, "हर अच्छी और परिपूर्ण देन ऊपर से आती है, स्वर्गीय प्रकाशों के पिता से, जो छायाओं की तरह नहीं बदलते" । परमेश्वर के हाथ से आने वाली हर चीज़ भली है और यह कभी नहीं बदलती। "सर्वोच्च" का अर्थ बदलने योग्य नहीं होना है।

परमेश्वर मानव जाति की स्वतंत्र इच्छा का उल्लंघन नहीं करते। यह परमेश्वर की इच्छा नहीं है कि कोई मरे और नर्क में हमेशा के लिए उनसे अलग हो जाए। फिर भी, लोग नियमित रूप से परमेश्वर से स्वतंत्रता चुनते हैं, उनके प्रभुत्व को अस्वीकार करते हैं, और परमेश्वर उनके चुनाव का उल्लंघन नहीं करते। यीशु, जिन्होंने अपने पिता का हृदय व्यक्त किया, उस समय जब वे इस पृथ्वी पर थे, इज़राइल को अपने पास इकट्ठा करने की इच्छा रखते थे, लेकिन उनकी इच्छा के एक कार्य द्वारा, उन्होंने मना कर दिया। "ओ यरूशलेम, यरूशलेम, तुम जो भविष्यद्वक्ताओं को मारते और भेजे गए लोगों को पत्थर मारते हो, कितनी बार मैंने तुम्हारे बच्चों को इकट्ठा करने की इच्छा की, जैसे एक मुर्गी अपने चूजों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, पर तुम तैयार नहीं थे" (मत्ती 23:37)। यीशु, जो परमेश्वर हैं और हमें परमेश्वर दिखाते हैं, ने उन्हें अस्वीकार करने के उनके चुनाव का उल्लंघन नहीं किया। फिर भी, जब हम शास्त्र का अध्ययन करते हैं, तो हम देखते हैं कि क्योंकि परमेश्वर सर्वोच्च हैं, उन्होंने इज़राइल के यीशु के अस्वीकार को अपने उद्देश्यों की सेवा में उपयोग करने में सक्षम रहे। मसीह के अस्वीकार के माध्यम से, मसीह में विश्वास के द्वारा उद्धार की खुशखबरी पूरे संसार तक पहुँचाई गई।

परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकते।

वह अपने स्वयं के सत्य वचन के विरोध में नहीं जा सकते (इब्रानियों 6:18; तीतुस 1:2; यूहन्ना 17:17)। परमेश्वर स्वयं का इनकार नहीं कर सकते। 2 तीमुथियुस 2:13 कहता है, “वह अपनी प्रकृति का इनकार नहीं कर सकता” और; “वह अपने आप के प्रति झूठा नहीं हो सकता” । इस तथ्य का अर्थ है कि परमेश्वर अपनी प्रकृति के विपरीत कार्य नहीं कर सकते। और प्रकृति के अनुसार, परमेश्वर भले हैं, जिसका अर्थ है कि वह अपनी भलाई के विपरीत कार्य नहीं कर सकते। सर्वोच्च का अर्थ “मनमाना” (आकस्मिक) या “चरित्रहीन” (फेरबदल) नहीं है।

परमेश्वर वह कर सकते हैं जो वे चाहते हैं

हम में से अधिकांश ने शायद अपने जीवन के किसी न किसी समय सुना होगा कि परमेश्वर वह कर सकते हैं जो वे चाहते हैं क्योंकि वे सर्वोच्च हैं। आइए इस कथन पर एक पल विचार करें।

यदि परमेश्वर सर्वोच्च हैं और वह जो चाहें कर सकते हैं, तो एक प्राकृतिक प्रश्न उठता है, “वास्तव में वह क्या चाहते हैं?” जब हम बाइबल का अध्ययन करते हैं, तो हम देखते हैं कि परमेश्वर एक परिवार चाहते हैं। पृथ्वी के निर्माण से पहले से ही परमेश्वर की योजना और उद्देश्य यह था और है कि उनके पास पुत्रों और पुत्रियों का एक परिवार हो जो यीशु मसीह की छवि के अनुरूप हों (इफिसियों 1:4-5; रोमियों 8:29)। बाइबल हमें परमेश्वर की परिवार की इच्छा की कहानी बताती है और उस सीमा तक जाने की कथा भी बताती है जिस तक उन्होंने यीशु मसीह की मृत्यु, दफ़न और पुनरुत्थान के माध्यम से अपने परिवार को प्राप्त किया।

शास्त्र से स्पष्ट है कि परमेश्वर मनुष्य के साथ संबंध चाहते हैं। हम यह विषय उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक देखते हैं। परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी छवि में बनाया, जितना एक सृष्टि अपने सृजनकर्ता के समान हो सकता है। क्यों? ताकि संबंध संभव हो सके। जब परमेश्वर ने आदम को बनाया, तो उन्होंने एक पुत्र बनाया (लूक 3:38)। जब आदम और हव्वा ने बगीचे में पाप किया, तो परमेश्वर ने उन्हें खोजा, क्रोध में नहीं, बल्कि उन्हें मदद करने की इच्छा के साथ। उन्होंने उनके पाप को ढकने के लिए अस्थायी मदद के रूप में चमड़े की चादरें प्रदान कीं (उत्पत्ति 3:21) और उन्होंने स्थायी मदद की पेशकश की—एक उद्धारकर्ता का वादा जो एक दिन उनके पाप को दूर करेगा (उत्पत्ति 3:15)।

जैसे-जैसे हम पुराने नियम को पढ़ते हैं, हमें परमेश्वर की मनुष्य के साथ संबंध की इच्छा के संकेत मिलते हैं: हनोक ऐसे व्यक्ति थे जो परमेश्वर के साथ इस तरह चलते थे कि यह परमेश्वर को अत्यंत प्रिय था, इसलिए परमेश्वर ने उन्हें शारीरिक मृत्यु का अनुभव कराए बिना स्वर्ग ले लिया (उत्पत्ति 5:21-24; इब्रानियों 11:5)। परमेश्वर अब्राहम के पास आए ताकि सदोम और गोमोरा के विषय में उनसे बातचीत कर सकें (उत्पत्ति 18:17)। बाइबल में तीन स्थानों पर अब्राहम को "परमेश्वर का मित्र" कहा गया है (याकूब 2:23; 2 इतिहास 20:7; यशायाह 41:8)। परमेश्वर ने मूसा से भी उसी प्रकार बात की जैसे कोई व्यक्ति अपने मित्र से करता है (निर्गमन 33:11)।

नए नियम में, यीशु—जो परमेश्वर हैं और हमें परमेश्वर दिखाते हैं—ने अपने शिष्यों से कहा, "तुम मेरे मित्र हो, यदि तुम वह सब करो जो मैं तुम्हें आज्ञा दूँ" (यूहन्ना 15:14)। उन्होंने यह भी कहा, "जो कोई मेरे स्वर्ग में होने वाले पिता की इच्छा करेगा, वही मेरा भाई, बहन और माता है" (मत्ती 12:50)।

बाइबल कहती है कि जब यीशु के इस पृथ्वी पर लौटने के बाद पाप और उसके प्रभाव परमेश्वर की सृष्टि से हटा दिए जाएंगे, तब भी हम परमेश्वर और मनुष्य के बीच संबंध में रहेंगे। "फिर मैंने एक नया आकाश और एक नई पृथ्वी देखा, क्योंकि वर्तमान पृथ्वी और आकाश बीत गए थे। और मैंने, यूहन्ना ने, पवित्र नगर, नई यरूशलेम, परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से उतरते हुए देखा। यह एक भव्य दृश्य था, दुल्हन की तरह सुंदर। मैंने सिंहासन से जोर से आवाज़ सुनी, 'देखो, अब परमेश्वर का घर मनुष्यों के बीच है, और वह उनके साथ रहेगा और वे उसके लोग होंगे; हाँ, परमेश्वर स्वयं उनके बीच होगा। वह उनके सभी आँसुओं को पोंछ देगा, और वहाँ अब मृत्यु नहीं होगी, न दुःख, न रोना, न पीड़ा। यह सब हमेशा के लिए समाप्त हो गया है।' और सिंहासन पर बैठे व्यक्ति ने कहा… 'जो कोई विजयी होगा, वह इन सभी आशीषों का वारिस बनेगा, और मैं उसका परमेश्वर बनूंगा और वह मेरा पुत्र होगा'" (प्रकाशितवाक्य 21:1-5,7)।

भविष्यद्वक्ता यशायाह ने भी अपने लेखों में इस समय का वर्णन किया है। यशायाह की भविष्यवाणी से हम देखते हैं कि परमेश्वर अपने पुत्रों और पुत्रियों के साथ एक उत्सव की ओर काम कर रहे हैं। "यहाँ यरूशलेम के सियोन पर्वत पर, सेनाओं के प्रभु प्रत्येक देश के लोगों के लिए एक अद्भुत भोज आयोजित करेंगे—एक स्वादिष्ट भोज जिसमें उत्तम भोजन।

उस समय वह पृथ्वी पर छाया डालने वाले अंधकार और मृत्यु के बादल को हटा देंगे; वह मृत्यु को हमेशा के लिए निगल लेंगे। प्रभु परमेश्वर सभी आँसुओं को पोंछ देंगे और अपने संसार और लोगों के खिलाफ सभी अपमान और उपहास को हमेशा के लिए समाप्त कर देंगे। प्रभु ने कहा है—वह निश्चित रूप से इसे करेगा!" (यशायाह 25:6-8)।

परमेश्वर चाहते हैं कि सभी मनुष्य उनकी ओर आकर्षित हों ताकि उनका एक परिवार हो सके। अपनी बुद्धि, शक्ति और दयालुता के प्रदर्शन के रूप में, परमेश्वर ने यीशु को हमारे पापों के लिए मरने के लिए भेजा। परमेश्वर ने अपनी सर्वोच्चता में मानव जाति की सबसे बड़ी आवश्यकता—हमारे पापों से उद्धार—में मदद की, यीशु मसीह की मृत्यु, दफ़न और पुनरुत्थान के माध्यम से। "लेकिन हमारे प्रति अपनी महान प्रेम के कारण, परमेश्वर, जो दया में समृद्ध हैं, ने हमें मसीह के साथ जीवित किया, जब हम- तुम अपने अपराधों में मृत थे—तुम्हें अनुग्रह से उद्धार मिला है। और परमेश्वर ने हमें मसीह के साथ उठाया और हमें मसीह यीशु में स्वर्गीय स्थानों में बैठाया, ताकि आने वाली युगों में वह अपनी अनमोल अनुग्रह की धन संपत्ति को दिखा सकें, जो उसने मसीह यीशु में हमारे प्रति अपनी दया में व्यक्त की है" (इफिसियों 2:4-7)।

परमेश्वर मनुष्य के साथ संबंध चाहते हैं और वह अपने लिए एक परिवार बना रहे हैं। क्योंकि वह सर्वोच्च हैं, वह सब कुछ इस उद्देश्य की सेवा में ला सकते हैं—यहाँ तक कि वे चीज़ें जिनके लिए वह जिम्मेदार नहीं हैं। मसीह में विश्वास के माध्यम से परमेश्वर हमें अपने पुत्र बनाने के संदर्भ में, इफिसियों 1:9-11 कहता है, "क्योंकि परमेश्वर ने हमें अपने योजना का रहस्य जानने की अनुमति दी है, और यह यह है: उसने अपने सर्वोच्च इच्छा में बहुत पहले यह तय किया कि सारा मानव इतिहास मसीह में पूर्ण हो; कि स्वर्ग या पृथ्वी में जो कुछ भी अस्तित्व में है, वह मसीह में अपनी पूर्णता और परिपूर्ति पाए। मसीह में हमें एक विरासत दी गई है, क्योंकि हम इसके लिए नियत थे, उस एक द्वारा जो अपनी सभी योजनाओं को अपनी इच्छा के अनुसार पूरा करता है।"

क्रूस परमेश्वर की सर्वोच्चता का एक महान प्रदर्शन था। परमेश्वर, अपनी सर्वज्ञता (सब कुछ जानने की क्षमता) में जानते थे कि शैतान बुरे लोगों को प्रेरित करेगा ताकि वे परमेश्वर के निर्दोष पुत्र को क्रूस पर चढ़ा दें (लूक 22:3; प्रेरितों के काम 2:23)। परमेश्वर ने उनके दुष्ट कार्य का उपयोग करके ब्रहमांड के इतिहास में सबसे बड़ी भलाई प्राप्त की। यीशु ने मनुष्यों के पापों को अपने ऊपर लिया और मानव जाति का उद्धार खरीदा। मसीह के क्रूस के

माध्यम से, परमेश्वर ने अपना परिवार प्राप्त किया। 1 कुरिन्थियों 2:8 कहता है कि यदि शैतान जानता कि परमेश्वर क्रूस के माध्यम से क्या करने वाले हैं, तो वह कभी भी महिमा के प्रभु को क्रूस पर नहीं चढ़ाता।

क्रूस केवल परमेश्वर की सर्वज्ञता का प्रदर्शन ही नहीं था, बल्कि यह उनकी सर्वशक्तिमत्ता (उनकी शक्ति) का भी भव्य प्रदर्शन था। यीशु के पुनरुत्थान का विरोध अंधकार की सभी शक्तियों ने किया। इस अत्यधिक विरोध के कारण, उनका पुनरुत्थान परमेश्वर की शक्ति का अब तक का सबसे महान प्रदर्शन था, क्योंकि परमेश्वर ने पाप, शैतान और मृत्यु पर विजय प्राप्त की (इफिसियों 1:19; कुलुस्सियों 2:15)। परमेश्वर ने शैतान को उसके ही खेल में हराया क्योंकि परमेश्वर सर्वोच्च हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि क्योंकि परमेश्वर सर्वोच्च हैं, वह लोगों के साथ बुरा कर सकते हैं क्योंकि उन्हें लंबी अवधि में यह सबसे अच्छा लगता है। लेकिन विपरीत सच है। परमेश्वर अपनी सर्वोच्चता का उपयोग लोगों को आशीष देने और उनके प्रति दयालु होने के लिए करते हैं, उन्हें नुकसान पहुँचाने के लिए नहीं। वह अपनी सर्वोच्चता का उपयोग मानव जाति के प्रति अपने अनुग्रह और भलाई को प्रदर्शित करने के लिए करते हैं। बाइबल के अनुसार, परमेश्वर, जो ब्रहमांड के सर्वोच्च प्रभु हैं, उन के पास अपनी दया को प्रदर्शित करने का अधिकार है जैसा वह चाहते हैं। "क्योंकि परमेश्वर ने मूसा से कहा, 'यदि मैं किसी के प्रति दयालु होना चाहता हूँ, तो मैं करूँगा। और जिस पर मैं दया करना चाहता हूँ, उस पर करूँगा'" (रोमियों 9:15)। इस समय, परमेश्वर, जो सर्वशक्तिमान और सर्वोच्च प्राधिकरण हैं, सब कुछ—जिसमें मानव विकल्प भी शामिल हैं— उन को अपने उद्देश्यों की सेवा में ला रहे हैं ताकि वह स्वयं को अधिकतम महिमा प्रदान कर सकें और अधिकतम भलाई अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचा सकें, जब वह अपना परिवार इकट्ठा करते हैं।

परमेश्वर कुम्हार हैं

समस्याओं के स्रोत को लेकर भ्रम का एक कारण यह है कि लोग परमेश्वर की सर्वोच्चता के बारे में शास्त्रों का गलत प्रयोग करते हैं। इसका एक प्रमुख उदाहरण रोमियों 9:20-22 में मिलता है:

“लेकिन हे मनुष्य, तुम कौन होते हो कि परमेश्वर से वाद-विवाद करो? क्या वह जो निर्मित किया गया है, उस निर्माता से नहीं कह सकता, ‘तुमने मुझे ऐसा क्यों बनाया?’ क्या कुम्हार के पास यह अधिकार नहीं है कि वह उसी मिट्टी के ढेर से कुछ भव्य उद्देश्यों के लिए बर्तन और कुछ सामान्य उपयोग के लिए बनाए? क्या यदि परमेश्वर, अपनी क्रोध को दिखाने और अपनी शक्ति को प्रकट करने के लिए, अपने क्रोध के वस्तुओं के साथ बड़ी धैर्यता रखता—जो विनाश के लिए तैयार किए गए थे?”।

इन शास्त्रों के आधार पर, लोग अक्सर ऐसे कथन करते हैं: “परमेश्वर हमें दुर्घटना या कैंसर दे सकते हैं ताकि हमें ढाल सकें। हमारे पास उनकी सर्वोच्चता पर प्रश्न उठाने का अधिकार नहीं है क्योंकि वह कुम्हार हैं और हम मिट्टी हैं। वह वह कर सकते हैं जो वे चाहते हैं।” रोमियों 9 की इन शास्त्रों से यह निष्कर्ष निकालना सीधे तौर पर शास्त्र को शास्त्र से परिभाषित न करने का परिणाम है। इन आयतों की सटीक व्याख्या करने के लिए, हमें यह निर्धारित करना होगा कि जब प्रेरित पौलुस ने परमेश्वर को कुम्हार कहा, तो उनका क्या मतलब था।

परमेश्वर को शास्त्र में केवल कुछ ही बार कुम्हार के रूप में उल्लेखित किया गया है (यशायाह 29:15-16; 45:9; 64:8; यिर्मयाह 18:1-10)। प्रत्येक उदाहरण में, परमेश्वर राष्ट्रों से संबोधित कर रहे हैं, न कि व्यक्तियों से। ये शास्त्र परमेश्वर को कुम्हार के रूप में वर्णित करते हैं ताकि यह दर्शाया जा सके कि जब इज़राइल का राष्ट्र उनसे बगावत करता और झूठे देवताओं की पूजा करता, तब परमेश्वर उनसे किस प्रकार संपर्क करते थे। ये शास्त्र इज़राइल द्वारा परमेश्वर को अस्वीकार करने के परिणामों को समझाते हैं, यह इंगित करते हुए कि कुम्हार परमेश्वर को अधिकार था कि यदि इज़राइल मूर्ति पूजा में अड़े रहे, तो उनके शत्रु उन पर हावी हो जाएँ। ये आयते व्यक्तियों के अस्पष्ट कारणों से कठिनाई, हानि, या बीमारी झेलने का उल्लेख नहीं करते, जिन्हें केवल सर्वोच्च परमेश्वर ही जानते हैं।

परमेश्वर को कुम्हार के रूप में संदर्भित करने वाला केवल एक नया नियम की आयत रोमियों 9:20-22 में मिलती है, और यह वास्तव में यिर्मयाह 18 से उद्धृत है। पौलुस इस उद्धरण का उपयोग इस बात का समर्थन करने के लिए करते हैं कि परमेश्वर ने मसीह को अपने मसीहा के रूप में अस्वीकार करने के प्रकाश में यहूदी राष्ट्र की तुलना में गोतामकों को सुसमाचार देने में अन्याय नहीं किया है।

रोमियों 9 में चर्चा का विषय परमेश्वर का इज़राइल राष्ट्र के साथ व्यवहार है—न कि व्यक्तिगत रूप से लोगों के दैनिक जीवन के साथ। ये आयात हमारे व्यक्तिगत जीवन में बुराई और दुःख की व्याख्या नहीं करते। संदर्भ में, कुम्हार के रूप में परमेश्वर की छवि, जो मिट्टी के बर्तन ढालता है, पुराने नियम में परमेश्वर द्वारा इज़राइल को अपने विशेष लोगों के रूप में चुनने और नए नियम में चर्च को चुनने के सन्दर्भ में है। पौलुस का तर्क यह है कि इज़राइल और चर्च का चुनाव न्यायपूर्ण और सही है क्योंकि, सर्वोच्च परमेश्वर के रूप में, परमेश्वर को अधिकार है कि वह जिस पर चाहे अपनी दया प्रदर्शित कर सके (रोमियों 9:15)।

क्या यह कहना गलत है कि परमेश्वर कुम्हार हैं और हम मिट्टी हैं? नहीं, बशर्ते आप इन मुख्य बिंदुओं को समझें। हाँ, परमेश्वर कुम्हार हैं और हम मिट्टी हैं, लेकिन जैसा कि हमने देखा, इसका मतलब यह नहीं है कि परमेश्वर अपनी सर्वोच्चता के कारण आपके साथ बुरा कर सकते हैं या करेंगे। परमेश्वर वास्तव में हमें आकार देते हैं। लेकिन वह हमें अंदर से अपने वचन और अपने आत्मा के द्वारा आकार देते हैं। "और हम सभी, बिना पर्दा किए हुए चेहरे के साथ, [क्योंकि हम] परमेश्वर के वचन में जैसे दर्पण में प्रभु की महिमा को देखते रहे, लगातार अपनी ही छवि में अधिक बढ़ते हुए वैभव और एक महिमा के स्तर से दूसरे महिमा के स्तर तक रूपांतरित होते रहते हैं; [क्योंकि यह आता है] प्रभु से [जो] आत्मा हैं" (2 कुरिन्थियों 3:18)। कुम्हार परमेश्वर भी आपका पिता हैं और वह आपको एक पिता की तरह—प्यार के साथ—ढालेंगे और आकार देंगे। "परन्तु अब, हे प्रभु, तू हमारा पिता है; हम मिट्टी हैं और तू हमारा कुम्हार है; और हम सभी तेरे हाथ का काम हैं" (यशायाह 64:8)।

बुराई और दुःख इस संसार में पाप के कारण मौजूद हैं, जिसका आरंभ आदम के पाप से हुआ। लेकिन यह हमेशा के लिए नहीं रहेगा। परमेश्वर, अपनी सर्वोच्चता में, वास्तविक बुराई को ले कर उससे वास्तविक भलाई उत्पन्न करने में सक्षम हैं। अपनी बुद्धि और शक्ति में, वह शैतान को उसके ही खेल में हरा सकते हैं और सब कुछ अपने उद्देश्यों की सेवा में ला सकते हैं। परमेश्वर की इच्छा यह है कि वह अपने लिए अधिकतम महिमा और अधिक से अधिक लोगों के लिए अधिकतम भलाई लाएँ, जब वह अपना परिवार इकट्ठा करते हैं।

अब जब हमने इस तथ्य के लिए एक मजबूत आधार रख लिया है कि परमेश्वर अच्छे हैं और अच्छा का मतलब अच्छा है, आइए कुछ सामान्य "हाँ, लेकिन ...इस के उस के बारे में क्या?" प्रश्नों पर चर्चा करें।

5

हाँ, लेकिन पुराने नियम के बारे में क्या?

अब तक मैंने जो कहा है, उसके जवाब में लोगों द्वारा उठाए गए पहले प्रश्नों में से एक यह है: “यदि परमेश्वर अच्छे हैं और अच्छा का मतलब अच्छा है, तो आप पुराने नियम में परमेश्वर के कार्यों की व्याख्या कैसे करते हैं? उन सभी स्थानों के बारे में क्या जहाँ परमेश्वर ने लोगों को मारा, उन्हें बीमार बनाया, और विनाश के द्वारा दंड दिया?” हम इस छोटे पुस्तक में पुराने नियम की हर घटना को संबोधित नहीं कर सकते, लेकिन हम कुछ सिद्धांतों को कवर कर सकते हैं जो हमारे पहले “हाँ, लेकिन ...इस के उस के बारे में क्या?” प्रश्न का उत्तर देंगे और हमें पुराने नियम को पढ़ते समय मदद करने के लिए दिशा-निर्देश प्रदान करेंगे।

परमेश्वर की भलाई, दया, और प्रेम पूरे पुराने नियम में पाई जाती है। “दया” शब्द किंग जेम्स बाइबल में 261 बार आता है। उन बारों में से 72 प्रतिशत बार यह शब्द पुराने नियम में पाया जाता है। “प्रेम” शब्द किंग जेम्स बाइबल में 322 बार आता है और उन में से लगभग आधी बार पुराने नियम में हैं। हालांकि, हमें पुराने नियम में परमेश्वर की दया और प्रेम को देखने के लिए थोड़ा गहराई से देखना पड़ता है। बाइबल प्रगतिशील प्रकाशन है, जिसका अर्थ है कि परमेश्वर ने मानवता को धीरे-धीरे शास्त्रों के पृष्ठों के माध्यम से स्वयं को प्रकट किया है। कई बातें पुराने नियम में पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हैं। परमेश्वर की भलाई, दया, और प्रेम पुराने नियम में हमेशा उतनी स्पष्ट रूप से नहीं दिखाई देती जितनी कि नए नियम में दिखाई देती हैं।

पुराने नियम में, हमारे पास अभी वह पूर्ण चित्र नहीं है जो नए नियम में यीशु मसीह के माध्यम से हमें प्रकट होता है। इब्रानियों 1:3 कहता है कि यीशु परमेश्वर की स्पष्ट छवि हैं। “स्पष्ट” शब्द एक ऐसे शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है “मुद्रण द्वारा बनाई गई छाप।”

यीशु पिता का सटीक प्रतिनिधित्व हैं। जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया, यदि आप जानना चाहते हैं कि परमेश्वर लोगों के साथ कैसे व्यवहार करते हैं, तो यीशु को देखें। हम परमेश्वर के अध्ययन की शुरुआत पुराने नियम से नहीं करते। हम नए नियम से शुरू करते हैं। हम उस चीज़ से शुरू करते हैं जो यीशु हमें परमेश्वर के बारे में दिखाते हैं। जब हमारे पास नए नियम में यीशु में प्रकट परमेश्वर की स्पष्ट छवि हो जाती है, तब हम पुराने नियम को उस चित्र के माध्यम से समझते हैं।

पुराने नियम को नए नियम के माध्यम से समझने का मतलब दो मुख्य बातें हैं। पहली, इसका अर्थ यह है कि यदि आपके पास नए नियम के 10 छंद हैं जो किसी विचार या विषय का स्पष्ट समर्थन करते हैं और पुराने नियम का एक छंद ऐसा प्रतीत होता है जो उन 10 छंदों के विपरीत है, तो आप उन 10 नए नियम के छंदों को त्याग नहीं देते। बाइबल स्वयं का विरोध नहीं करती। यह तथ्य कि कोई छंद अन्य शास्त्रों के विपरीत प्रतीत होता है, इसका मतलब है कि आपने उस छंद की पूरी समझ अभी तक नहीं पाई है। उस छंद को अलग रख दें जब तक कि आप इसे बेहतर ढंग से समझ न लें। दूसरी, पुराने नियम को नए नियम के माध्यम से समझने का मतलब यह है कि हमें यह पता लगाना चाहिए कि नए नियम में पुराने नियम की विशिष्ट घटनाओं के बारे में क्या कहा गया है। उदाहरण के लिए, अयूब की पुस्तक कई लोगों को डराती है। लेकिन नए नियम में हमें बताया गया है कि हमें अयूब की पुस्तक पढ़कर क्या समझना चाहिए। याकूब 5:11 के अनुसार, अयूब हमें सिखाते हैं कि परमेश्वर दयालु हैं और अपने लोगों को बंधन से मुक्त करते हैं। यदि आपको अयूब की पुस्तक से परमेश्वर की यह छवि नहीं मिलती, तो आपने पुस्तक को उसके सही संदर्भ में नहीं पढ़ा है। हम अगले अध्याय में अयूब की पुस्तक की और अधिक समीक्षा करेंगे।

पुराने नियम को पढ़ने की कुंजी

संदर्भ को समझना

पुराने नियम को सही ढंग से समझने के लिए, हमें संदर्भ में पढ़ना सीखना होगा। बाइबल में सब कुछ किसी ने किसी के लिए किसी विषय पर लिखा। जब भी हम बाइबल पढ़ते हैं, हमें यह पता करना होता है कि कौन बोल रहा है, संदेश किसको मिल रहा है, और चर्चा का विषय क्या है, ताकि किसी छंद का अर्थ सही ढंग से समझा जा सके। यह कहने का मतलब कि बाइबल किसी ने किसी के लिए किसी विषय पर लिखा, यह नहीं है कि बाइबल मनुष्यों का

शब्द है बजाय परमेश्वर के शब्द के। इसका मतलब बस यह है कि परमेश्वर ने कुछ पुरुषों को प्रेरित किया ताकि वे अन्य पुरुषों को विशेष मुद्दों के बारे में लिखें। उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने प्रेरित पौलुस का उपयोग करके टिमोथी नामक व्यक्ति को दो पत्र लिखे ताकि टिमोथी को यह सिखाया जा सके कि वह उन चर्चों का कैसे नेतृत्व करें जिनकी वह देखरेख करता था। आपको उन दो पत्रों की पूरी समझ पाने के लिए यह जानकारी जानना आवश्यक है।

पुराने नियम को पढ़ने की एक और महत्वपूर्ण कुंजी यह है कि इसे लिखे जाने के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ को समझा जाए। पुराने नियम मुख्य रूप से इस्राएल के इतिहास से संबंधित है। इस राष्ट्र का इतिहास अक्सर दुखद और अंधकारमय है क्योंकि इजरायलियों ने बार-बार उनके आसपास रहने वाले लोगों की मूर्तियों और झूठे देवताओं की पूजा की और उनके अनैतिक जीवनशैली और प्रथाओं को अपनाया। इस्राएल के इतिहास में विभिन्न समयों पर, हिब्रू लोगों ने कई गंभीर पाप किए। उन्होंने यरूशलेम में परमेश्वर के मंदिर में मूर्तियों की पूजा की (यहेजकेल 8), अपने पुत्रों और पुत्रियों को मूर्तियों को बलि देने के लिए जला दिया (भजन संहिता 106:37-38), और लकड़ी और पत्थर की मूर्तियों को अपने सृष्टिकर्ता के रूप में स्वीकार किया बजाय परमेश्वर के (यिर्मयाह 2:27)। परमेश्वर ने इस्राएल के पास भविष्यद्वक्ताओं को भेजा, और हिब्रू लोगों को चेतावनी दी कि यदि वे पश्चाताप नहीं करेंगे, तो उनके दुश्मनों के हाथों आने वाले विनाश का सामना करना पड़ेगा। इस्राएल ने परमेश्वर की चेतावनियों को अस्वीकार किया और इसके परिणामस्वरूप, उनके भयानक पापों के परिणाम भोगे।

संदर्भ की कमी के कारण, लोग अक्सर पुराने नियम के उन छंदों को, जो मूर्तिपूजा करने वाले राष्ट्र के लिए लिखे गए थे, आज के विश्वासियों पर लागू कर देते हैं, जो कभी-कभी जीवन की रोज़मर्रा की चुनौतियों का सामना करते समय चूक जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप, कई मसीही ऐसे छंदों के गलत प्रयोग के आधार पर परमेश्वर की सजा के अनावश्यक भय में रहते हैं।

भाषा को समझना

हमें यह भी समझना चाहिए कि जब पुराने नियम में यह कहा जाता है कि "परमेश्वर ने लोगों में बीमारी लायी," तो इसका अर्थ मूल पाठकों के लिए वही नहीं था जो आज हमारे

लिए है। पुराने नियम मूल रूप से हिब्रू भाषा में लिखा गया था। हिब्रू में यह आम था कि जब अनुमति देने का अर्थ होता, तब कारण बताने वाला क्रिया इस्तेमाल किया जाता। परमेश्वर को ऐसा करने वाला कहा जाता था, जबकि वास्तव में उसने केवल अनुमति दी थी। भले ही पाठ शाब्दिक रूप से कहता है "परमेश्वर ने लोगों में बीमारी भेजी," इज़रायलियों के लिए इसका अर्थ यह था कि "परमेश्वर ने लोगों में बीमारी की अनुमति दी।"

यदि हम हिब्रू भाषा नहीं जानते तो हम कैसे बता सकते हैं कि कोई पुराने नियम का छंद "परमेश्वर ने किया" मतलब है या "परमेश्वर ने अनुमति दी"? कभी-कभी इसका अर्थ पाठ से ही स्पष्ट हो जाता है। 1 इतिहास 10:14 कहता है कि प्रभु ने राजा शाऊल को मार दिया। लेकिन यदि हम पूरे अध्याय को पढ़ें, तो पाते हैं कि शाऊल ने अपने कवचधारी से कहा कि वह उसे मार दे। जब वह व्यक्ति मना कर देता है, तो शाऊल अपनी तलवार पर गिरकर खुद को मार देता है। प्रभु ने शाऊल को नहीं मारा। प्रभु ने शाऊल को खुद को मारने की अनुमति दी।

निर्गमन 15:26 में परमेश्वर ने इस्राएल से कहा कि यदि वे उसके आदेशों का पालन करेंगे, "मैं तुम पर मिस्रवासियों पर लाई गई किसी भी बीमारी को नहीं डालूंगा: क्योंकि मैं ही तुम्हारा स्वास्थ्यदाता प्रभु हूं।" इस शास्त्र की सही व्याख्या यह होगी कि "मैं मिस्र की किसी भी बीमारी को तुम्हारे ऊपर आने की अनुमति नहीं दूंगा।" "तुम्हारा स्वास्थ्यदाता प्रभु" हिब्रू में यहोवा राफा है, जिसका अर्थ है "प्रभु तुम्हारा चिकित्सक।" परमेश्वर केवल इसलिए लोगों को बीमार नहीं बनाता कि फिर उन्हें ठीक कर सके। यह एक बंटे हुए घर जैसा होगा। (याद रखें कि मत्ती 12:24-26 में यीशु ने बंटे हुए घर के बारे में क्या कहा था।)

जब हम पाठ से ही यह नहीं बता सकते कि परमेश्वर "किया" या परमेश्वर "अनुमति दी," तो हमें उस छंद का मूल्यांकन नए नियम के संदर्भ में करना चाहिए। यदि जो छंद कहता है कि परमेश्वर ने "किया," वह नए नियम में यीशु मसीह द्वारा दी गई परमेश्वर की प्रकटीकरण के विपरीत है, तो हमें पता है कि उस छंद का अर्थ यह होना चाहिए कि परमेश्वर ने "अनुमति दी।"

एकमात्र परमेश्वर, सर्वशक्तिमान परमेश्वर

जब परमेश्वर ने मूसा के नेतृत्व में इस्राएल को मिस्र की गुलामी से बाहर निकाला, उस समय पूरी दुनिया बहुदेववादी थी (कई देवताओं की पूजा करती थी)। केवल इस्राएल एकेश्वरवादी था (एक ही परमेश्वर की पूजा करता था), और वह भी मुश्किल से। मिस्र में कई हिब्रू लोग मूर्ति पूजा में फंस गए और फिर वे उजाड़ में भटकते रहे, वादा किए गए देश की ओर जाते समय, फिर से इसमें लौट आए (एजेकियल 20:6-10; निर्गमन 32:1-6)। जब इस्राएल आखिरकार कनान की भूमि में पहुँचा, तो वे बार-बार झूठे देवताओं की पूजा में लौट जाते थे।

इस्राएल के चारों ओर अधिकांश राष्ट्रों का एक रोशनी का देवता, अंधकार का देवता, दिन का देवता, रात का देवता, भला करने वाला देवता और बुराई करने वाला देवता, और कई अन्य देवता थे। परमेश्वर का पुराना नियम में एक मुख्य उद्देश्य यह था कि वह अपने लोगों और इस्राएल के चारों ओर के राष्ट्रों के सामने स्वयं को सर्वशक्तिमान परमेश्वर—एकमात्र, सर्वशक्तिमान परमेश्वर के रूप में प्रकट करें। यही एक कारण है कि हम पुराने नियम में उसकी शक्ति के इतने भयंकर प्रदर्शन देखते हैं।

पुराने नियम के लेखक, पवित्र आत्मा की प्रेरणा के तहत, कई विनाशकारी घटनाओं को परमेश्वर से जोड़ते हैं। उन्होंने ऐसा इसलिए नहीं किया कि विनाश के पीछे परमेश्वर थे, बल्कि ताकि इस्राएल यह समझ सके कि आपदा इसलिए आई—ना कि अग्नि का देवता क्रोधित था या फसल के देवता को शांत करने की आवश्यकता थी—बल्कि इसलिए कि वे मूर्ति पूजा के कारण सर्वशक्तिमान परमेश्वर के साथ सही संबंध में नहीं थे। परमेश्वर का उद्देश्य यह था कि मानव चेतना में यह विचार स्थापित किया जाए कि उसके लोगों को सर्वशक्तिमान, एकमात्र परमेश्वर के साथ सही संबंध में रहना चाहिए, पहले तो विधि और उसके बलिदानों के माध्यम से, और अंततः यीशु मसीह के माध्यम से।

बाइबल कहती है कि परमेश्वर अच्छा है और परमेश्वर प्रेम है।

हालाँकि, ये विषय पुराने नियम में उतने प्रमुख नहीं हैं। अगर परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से स्वयं को एक प्रेम करने वाले पिता के रूप में उस दुनिया में प्रकट किया होती, जो कई देवताओं की पूजा करती थी, तो इस्राएल और आसपास के राष्ट्र शायद परमेश्वर को "प्रेम करने वाला देवता"—कई देवताओं में से बस एक और देवता—के रूप में गलत समझते। इसी कारण पुराने नियम में त्रिएक देवता (पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा) का बहुत कम उल्लेख है।

आइए हम कुछ उदाहरणों पर ध्यान दें कि किस प्रकार पुराने नियम की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझना हमें उन पदों की सही व्याख्या करने में सहायता करता है, जो ऊपर-ऊपर देखने में ऐसा प्रतीत होते हैं मानो वे परमेश्वर पर बुराई या दुष्टता को आरोपित करते हों।

निर्गमन 20:5 में परमेश्वर कहता है:

"तू उनको दण्डवत न करना, और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला परमेश्वर हूँ, और जो मुझ से बैर रखते हैं, उनके पितरों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों, पोतों और परपोतों तक देता हूँ।"

कई लोगों ने इस पद को मेरे सामने इस बात के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया है कि परमेश्वर लोगों के साथ बुरा करता है। वे कहते हैं, "आख़िरकार, परमेश्वर तो पिताओं के पापों को पुत्रों पर डालता है।"

परन्तु हमें यह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि पवित्रशास्त्र को उसके संदर्भ में पढ़ना आवश्यक है।

परमेश्वर ने ये शब्द मूसा से उस समय कहे जब इस्राएल प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर जा रहा था। परमेश्वर ने अभी-अभी मूसा के द्वारा दस आज्ञाओं का पहला भाग दिया था: इस्राएल को किसी और देवता को नहीं मानना था और न ही कोई मूर्ति बनानी थी, और न उन्हें दण्डवत करनी थी। इसके तुरंत बाद परमेश्वर ने पिताओं के पापों के कारण बच्चों को दण्ड मिलने की बात कही।

इस्राएल के वास्तव में कनान देश में प्रवेश करने से पहले, परमेश्वर ने उन्हें चेतावनी दी कि यदि वे कनानियों के देवताओं की उपासना करेंगे, तो वह उनके शत्रुओं को उन्हें पराजित करने देगा और उन्हें उस देश से निकाल देगा (व्यवस्थाविवरण 4:25-28)।

इस्राएल ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया। वे बार-बार अपने आसपास की जातियों के देवताओं की उपासना करते रहे, और जैसा परमेश्वर ने पहले ही चेतावनी दी थी, वैसे ही वे अपने शत्रुओं के द्वारा रौंद दिए गए और तितर-बितर कर दिए गए—पहले अश्शूरियों के द्वारा और फिर बाबुलियों के द्वारा।

586 ईसा-पूर्व में बाबुलियों ने इस्राएल को बंदी बनाकर बाबुल ले गए, जहाँ वे सत्तर वर्षों तक रहे। जो बात परमेश्वर ने निर्गमन 20:5 में कही थी, वह पूरी होकर दिखायी दी। इस्राएल को उनके पिताओं के पापों—अर्थात् उनके बार-बार की गई मूर्तिपूजा—के कारण बाबुल ले जाया गया। परिणामस्वरूप, उनके बच्चे बाबुल में पैदा हुए और उन्हें सत्तर वर्षों तक दासत्व में जीवन बिताना पड़ा—तीसरी और चौथी पीढ़ी तक, अर्थात् पोतों और परपोतों के समय तक।

निर्गमन 20:5 में परमेश्वर का कथन यह घोषणा नहीं था कि वह लोगों को उनके पापों के कारण उनकी संतान को चौथी पीढ़ी तक दण्ड देकर सज़ा देने की योजना बना रहा है। बल्कि यह इस्राएल के लिए एक चेतावनी थी कि यदि वे प्रतिज्ञा किए हुए देश में मूर्तियों की उपासना करेंगे, तो उन्हें उसके परिणाम भोगने पड़ेंगे।

यशायाह 45:7 में परमेश्वर कहता है:

"उजियाले का रचयिता मैं हूँ, और अन्धकार का सृजन करने वाला भी; मैं शान्ति करता हूँ और विपत्ति उत्पन्न करता हूँ; मैं यहोवा ये सब काम करता हूँ।"

बहुत से लोग इस पद को पढ़कर सोचते हैं, "देखो! परमेश्वर तो लोगों के साथ बुराई भी करता है। आखिरकार, वह सर्वाधिकार सम्पन्न है और वही सबसे अच्छा जानता है।"

एक बार फिर, इस पद में परमेश्वर क्या कह रहा है, इसे समझने के लिए ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को जानना अत्यन्त आवश्यक है।

539 ईसा-पूर्व में, महान राजा कुस्रू (साइरस) के शासन में फारस ने बाबुली साम्राज्य को जीत लिया। अगले ही वर्ष, राजा कुस्रू ने उन इब्रानी लोगों को, जो सत्तर वर्षों से बाबुल में बंदी थे, अपने देश लौटने की अनुमति दे दी। कुस्रू का सत्ता में आना और इस्राएल को कनान लौटने देने का उसका निर्णय, यशायाह की पुस्तक में लिखी गई भविष्यवाणी की पूर्ति था।

भविष्यवक्ता यशायाह के द्वारा, कुस्रू के जन्म से लगभग डेढ़ सौ वर्ष पहले ही, परमेश्वर ने उस राजा का नाम लेकर उल्लेख किया था और उसे उस साधन के रूप में चिन्हित किया था, जिसके द्वारा वह अपने लोगों को फिर से प्रतिज्ञा किए हुए देश में लौटाएगा (यशायाह 44:28–45:4)।

इस भविष्यवाणी के बाद एक लंबा अंश आता है, जिसमें परमेश्वर स्पष्ट रूप से घोषणा करता है कि उसके सिवा और कोई परमेश्वर नहीं है। राजा कुस्रू से बात करते हुए परमेश्वर कहता है:

"मैं यहोवा हूँ, और मेरे सिवा कोई दूसरा नहीं है; कोई और परमेश्वर नहीं। यद्यपि तू मुझे नहीं जानता, फिर भी मैंने तुझे सामर्थ्य से तैयार किया है, ताकि सूर्य के उदय से लेकर उसके अस्त होने तक सारी पृथ्वी यह जान ले कि मेरे सिवा कोई और परमेश्वर नहीं है। मैं यहोवा हूँ, और कोई दूसरा नहीं" (यशायाह 45:5-6)।

इसके बाद पद 7 में यह कथन आता है:

"मैं उजियाले को रचता हूँ, और अन्धकार को उत्पन्न करता हूँ; मैं शान्ति करता हूँ, और विपत्ति उत्पन्न करता हूँ; मैं यहोवा ये सब काम करता हूँ।"

यहाँ भी परमेश्वर राजा कुस्रू से ही बात कर रहा है। कुस्रू और फारसी लोग यह विश्वास रखते थे कि एक भलाई का देवता है और एक बुराई का देवता। उनके अनुसार, भलाई का देवता प्रकाश का देवता था और बुराई का देवता अन्धकार का। पद 7 में दिए गए अपने कथन के द्वारा परमेश्वर कुस्रू को स्पष्ट रूप से यह बता रहा है:

“प्रकाश और अन्धकार के, भलाई और बुराई के अलग-अलग कोई देवता नहीं हैं। अन्ततः हर बात पर मेरा ही अधिकार है—प्रकाश पर भी, अन्धकार पर भी, भलाई पर भी, बुराई पर भी, और तुझ पर भी—क्योंकि मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ। मेरे सिवा कोई और देवता नहीं है।”

यह तथ्य कि परमेश्वर अन्ततः हर बात पर अधिकार रखता है, इसका यह अर्थ नहीं है कि वह हर घटने वाली बात को स्वयं करता है या हर बात को स्वीकृति देता है। इसका अर्थ यह है कि कोई भी बात उसे चकित नहीं करती, और ऐसा कुछ भी नहीं होता जिसे वह अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उपयोग न कर सके।

इस अंश में परमेश्वर यह नहीं कह रहा कि वह लोगों के साथ बुरा करता है। वह कुस्रू और फारसियों के सामने अपनी सर्वशक्तिमानता की घोषणा कर रहा है, ताकि वे अपने झूठे देवताओं से फिरें और उसे ही एकमात्र सच्चा परमेश्वर स्वीकार करें।

इसी अध्याय में कुछ ही पद आगे परमेश्वर कहता है:

“मेरे सिवा कोई और परमेश्वर नहीं है—धर्मी और उद्धार करने वाला परमेश्वर; मेरे सिवा कोई नहीं। हे पृथ्वी के सब छोरों, मेरी ओर फिरो और उद्धार पाओ; क्योंकि मैं ही परमेश्वर हूँ, और कोई दूसरा नहीं” (यशायाह 45:21-22)।

जब हम यशायाह 45:7 को उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में समझते हैं, तो हम देखते हैं कि यह इस बात की घोषणा नहीं है कि परमेश्वर किसी रहस्यमय या सार्वभौमिक उद्देश्य के कारण आपके जीवन में विपत्ति लाने का इरादा रखता है। बल्कि यह परमेश्वर की भलाई का एक कथन है, जिसके द्वारा वह कुस्रू और फारसियों को अपनी ओर आकर्षित करना चाहता है—उन्हें यह दिखाते हुए कि केवल वही परमेश्वर है।

एक भला परमेश्वर और महामारियाँ

एक और सामान्य प्रश्न जो मुझे अक्सर मिलता है, यह है:

“एक भला परमेश्वर मिस्रियों पर महामारियाँ कैसे भेज सकता है?”

मिस्र देश ने इस्राएल को चार सौ वर्षों तक दासत्व में जकड़े रखा था। इस बन्धन के काल के अन्त की ओर, मूसा नामक एक व्यक्ति, परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार, फिरौन के पास यहोवा का संदेश लेकर गया:

“मेरे लोगों को जाने दे, ताकि वे मेरी सेवा करें।”

फिरौन ने इनकार कर दिया, और इसके परिणामस्वरूप मिस्रियों पर एक के बाद एक कई महामारियाँ आईं, जिन्हें परमेश्वर की ओर से बताया गया।

वास्तव में, प्रत्येक महामारी परमेश्वर की सामर्थ्य का एक प्रदर्शन थी और मिस्र के देवताओं के लिए एक खुली चुनौती थी।

उदाहरण के लिए, मिस्री नील नदी को अपने जीवन का स्रोत मानते थे। हर वर्ष वे नील नदी को प्रसन्न करने के लिए एक लड़के और एक लड़की की बलि चढ़ाते थे। जब परमेश्वर ने नील नदी के जल को लहू में बदल दिया, तो उसने यह प्रकट किया कि वह नील से महान है—वही जीवन का वास्तविक स्रोत है; उसी ने नील को बनाया है; और वही नील पर अधिकार रखता है।

मिस्र की देवी हेकेत को मेंढक के रूप में दर्शाया जाता था। मेंढकों की महामारी के द्वारा परमेश्वर ने मिस्रियों को यह दिखाया कि मेंढक कोई देवता नहीं हैं। उसने यह स्पष्ट किया कि वही—एकमात्र, सर्वशक्तिमान परमेश्वर—मेंढकों पर भी अधिकार रखता है।

इन महामारियों का उद्देश्य यह दिखाना था कि मिस्रियों की मूर्तियाँ वास्तव में देवता नहीं थीं। इनका उद्देश्य यह प्रकट करना था कि परमेश्वर ही सच्चा परमेश्वर है, वही एकमात्र परमेश्वर है, ताकि मिस्री लोग उस पर विश्वास करें।

ये महामारियाँ लगभग नौ महीनों की अवधि में घटित हुईं। अंतिम महामारी तक, ये विपत्तियाँ केवल कष्टदायक थीं, घातक नहीं। सामूहिक रूप से, यदि फिरौन इस्राएल को दासत्व से मुक्त कर देता, तो मिस्री इन सामर्थ्य-प्रदर्शनों से बच सकते थे। और व्यक्तिगत रूप से, मिस्री लोग इस्राएल के साथ जुड़कर इन विपत्तियों से बच सकते थे, क्योंकि इस्राएल—एकमात्र, सर्वशक्तिमान परमेश्वर के लोग—इन महामारियों से प्रभावित नहीं हुए थे (निर्गमन 8:22-23; 9:4, 26)।

इन सामर्थ्य-प्रदर्शनों का अपेक्षित प्रभाव पड़ा। महामारियों के द्वारा, बहुत से मिस्रियों ने यह स्वीकार किया कि इब्रानियों का परमेश्वर, यहोवा, ही एकमात्र सच्चा परमेश्वर है (निर्गमन 8:19; 9:19-21)। पवित्रशास्त्र हमें बताता है कि जब इस्राएल अंततः मिस्र से निकला, तो उनके साथ एक "मिली-जुली भीड़" भी गई (निर्गमन 12:38)। उस भीड़ में मिस्री लोग भी थे, जिन्होंने परमेश्वर पर विश्वास करना शुरू कर दिया था।

अब अंतिम महामारी के विषय में क्या कहा जाए—मिस्रियों के पहिलौठों की मृत्यु, जिसमें मनुष्य और पशु दोनों शामिल थे?

निर्गमन 12:12 कहता है:

"क्योंकि मैं इस रात मिस्र देश में होकर जाऊँगा, और मिस्र देश के सब पहिलौठों को, चाहे मनुष्य हों चाहे पशु, मार डालूँगा; और मिस्र के सब देवताओं के विरुद्ध दण्ड दूँगा; मैं यहोवा हूँ।"

एक भला परमेश्वर ऐसा कैसे कर सकता है?

इन बातों पर विचार कीजिए:

जिस रात उन मृत्यु-दण्डों का घटित होना निश्चित था, उस रात परमेश्वर ने अपने लोगों से कहा कि वे एक मेम्ने का लहू अपने घरों के द्वारों के चौखटों पर लगाएँ, और वे सुरक्षित रहेंगे।

“क्योंकि यहोवा मिस्रियों को मारने के लिए जाएगा; और जब वह चौखट और दोनों बाजुओं पर लहू को देखेगा, तब यहोवा उस द्वार को छोड़ देगा, और नाश करने वाले को तुम्हारे घरों में घुसकर तुम्हें मारने न देगा” (निर्गमन 12:23)।

परमेश्वर ने मिस्रियों को नहीं मारा। हम यह कैसे जानते हैं?

पहला, ऐसा कार्य यीशु मसीह के द्वारा हमें दी गई परमेश्वर की प्रकटीकरण के साथ पूरी तरह विरोधाभासी होता। यीशु के जीवन और शिक्षाओं में हमें परमेश्वर का स्वभाव स्पष्ट रूप से प्रकट होता है—एक ऐसा परमेश्वर जो जीवन देता है, उद्धार करता है और नाश नहीं करता।

दूसरा, स्वयं निर्गमन 12:23 यह स्पष्ट करता है कि यह विनाश “नाश करने वाले” के द्वारा किया गया था। यीशु ने शैतान को उस व्यक्ति के रूप में पहचाना है जो मारता है और नाश करता है। नया नियम बताता है कि मृत्यु का अधिकार शैतान के पास है—

“जिसके पास मृत्यु का अधिकार था, अर्थात् शैतान” (इब्रानियों 2:14)।

इस प्रकार, पवित्रशास्त्र यह स्पष्ट करता है कि उस रात जो मृत्यु हुई, वह परमेश्वर की सीधी क्रिया नहीं थी, बल्कि वह उस नाश करने वाले के द्वारा हुई, जिससे परमेश्वर ने अपने लोगों को मेम्ने के लहू के द्वारा सुरक्षित रखा।

इससे पहले, परमेश्वर ने फिरौन से कहा था कि उसकी सार्वभौमिक करुणा और भलाई के कारण ही फिरौन और मिस्री लोग पहले के समयों में नाश करने वाले के द्वारा नष्ट नहीं किए गए थे।

“अब तक तो मैं अपना हाथ बढ़ाकर तुझे और तेरे लोगों को महामारी से मार डालता, और तू पृथ्वी पर से मिट जाता। परन्तु मैंने तुझे इसीलिए जीवित रहने दिया है कि तुझ में अपनी सामर्थ्य दिखाऊँ, और मेरा नाम सारी पृथ्वी पर प्रसिद्ध हो” (निर्गमन 9:15-16)।

यहाँ मूल इब्रानी भाषा में "मैंने तुझे जीवित रहने दिया" का अर्थ है—

"मैंने तुझे खड़ा रहने दिया" या "मैंने तुझे बने रहने दिया।"

इस बिन्दु तक, परमेश्वर ने मिस्रियों को पूर्व की विपत्तियों से नाश होने से सुरक्षित रखा था, ताकि वह उन्हें बार-बार यह दिखाने का अवसर दे सके कि वही—यहोवा—एकमात्र सच्चा परमेश्वर है। फिर भी, अपनी सामर्थ्य के इन सभी प्रदर्शनों के पूरे समयकाल में, मिस्र ने बार-बार परमेश्वर की भलाई और करुणा को ठुकराया।

अन्ततः, उस रात परमेश्वर ने मिस्रियों को यह अनुमति दी कि वे उसके प्रति अपने इनकार का फल भोगें, और नाश करने वाले ने उनके सब पहिलौठों का नाश किया।

जब मूसा ने पहली बार फिरौन से बात की थी, तभी उसने उसे चेतावनी दे दी थी कि यदि वह इस्राएल को स्वतंत्र नहीं करेगा, तो मिस्र के पहिलौठे पुत्र मरेंगे (निर्गमन 4:22-23)। अगले नौ महीनों के दौरान, मूसा ने जो कुछ कहा था, वह सब पूरा होकर दिखायी दिया। फिरौन के पास मूसा की प्रारम्भिक चेतावनी पर ध्यान देने के लिए पूरा समय था—यहाँ तक कि अन्तिम महामारी आने से ठीक पहले, मूसा एक अन्तिम चेतावनी लेकर फिर उसके पास गया था (निर्गमन 11:4-7)।

उस रात किसी को भी मरने की आवश्यकता नहीं थी।

परमेश्वर के उद्देश्य उद्धारकारी हैं

परमेश्वर के उद्देश्य सदा उद्धारकारी होते हैं।

इसका अर्थ यह है कि उसका लक्ष्य अधिक से अधिक लोगों को बचाना है, न कि अधिक से अधिक लोगों का नाश करना।

आइए नूह और जलप्रलय के संदर्भ में परमेश्वर के उद्धारकारी स्वभाव को देखें। जिस समय नूह जीवित था, उस समय पृथ्वी पर अत्यन्त दुष्टता फैल चुकी थी। बाइबल बताती है कि उस समय केवल नूह ही ऐसा था जो यहोवा की सेवा करता था। इसके प्रत्युत्तर में परमेश्वर ने पृथ्वी की पूरी जनसंख्या को नष्ट करने का निर्णय लिया। यह प्रश्न स्वाभाविक है—एक भला परमेश्वर ऐसा कैसे कर सकता है?

इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए हमें अदन की वाटिका में घटी एक घटना की ओर लौटना होगा, जो आदम और हव्वा के पाप करने के कुछ समय बाद हुई थी। उस समय परमेश्वर ने उनसे यह प्रतिज्ञा की थी कि वह उनके पाप के द्वारा हुए नुकसान को ठीक करने के लिए यीशु को भेजेगा। परमेश्वर ने सर्प (शैतान) से कहा:

"और मैं तेरे और स्त्री के बीच, और तेरे वंश और उसके वंश (यीशु) के बीच बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डँसेगा" (उत्पत्ति 3:15)।

यह बाइबल में प्रभु यीशु मसीह और उनके क्रूस पर मरण का पहला संकेत है। ध्यान दीजिए कि परमेश्वर ने उस स्त्री का उल्लेख किया, जिसके द्वारा वह वंश आने वाला था (मरियम)। परमेश्वर पहले ही उस पारिवारिक वंश को निर्धारित कर चुका था, जिसके द्वारा अन्ततः मानवजाति का उद्धारकर्ता जन्म लेने वाला था। लूका 3:38 हमें बताता है कि वह धर्मी वंश, जिसके द्वारा यीशु आने वाले थे, आदम और हव्वा के तीसरे पुत्र शेत के द्वारा आगे बढ़ना था।

नूह के समय तक, शेत के वंशज पाप के कारण मिटने के कगार पर पहुँच चुके थे। वे कैन के वंशजों के साथ विवाह कर रहे थे और उनके द्वारा भ्रष्ट किए जा रहे थे। (कैन, आदम का पहिलौठा पुत्र था, जिसने अपने भाई हाबिल—आदम के दूसरे पुत्र—की हत्या कर दी थी।) केवल नूह, जो शेत का वंशज था, और उसका परिवार ही परमेश्वर की सेवा करता रहा।

यदि शेत की पूरी वंश-रेखा पाप और भ्रष्टता के द्वारा नष्ट हो जाती, तो परमेश्वर की वह प्रतिज्ञा—कि एक वंश (यीशु मसीह) आएगा जो सर्प के सिर को कुचल देगा, अर्थात् उसकी शक्ति को तोड़ देगा—पूरी नहीं हो पाती। इसलिए परमेश्वर के लिए यह आवश्यक था कि वह उस धर्मी वंश को सुरक्षित रखे, जिसके द्वारा उद्धारकर्ता आने वाला था। इसका अर्थ यह था

कि उसे पृथ्वी से उस भ्रष्टता को हटाना पड़े, जो अन्ततः नूह—शेत की वंश-रेखा में बचा हुआ एकमात्र धर्मी व्यक्ति—को भी प्रभावित कर सकती थी।

बहुत से लोग जब जलप्रलय की कथा पढ़ते हैं, तो उनके मन में एक क्रोधित, अस्थिर परमेश्वर की छवि उभरती है, जिसने झुँझलाहट में आकर मानवजाति को मिटा देने का निर्णय ले लिया। परन्तु सच्चाई यह है कि परमेश्वर को इस स्थिति का दुःख हुआ। उसने मनुष्य को इस दयनीय दशा के लिए नहीं रचा था।

"जब यहोवा ने देखा कि मनुष्यों की दुष्टता पृथ्वी पर बहुत बढ़ गई है, और उनके हृदय के विचारों की प्रवृत्ति सदा बुराई ही की ओर रहती है, तब यहोवा को दुःख हुआ कि उसने मनुष्य को पृथ्वी पर बनाया, और उसके हृदय को पीड़ा पहुँची" (उत्पत्ति 6:5-6)।

जब हम जलप्रलय के विवरण को ध्यान से देखते हैं, तो हमें परमेश्वर का महान धैर्य दिखाई देता है। उसने पूरी पृथ्वी की जनसंख्या को अपने पास लौट आने के लिए 120 वर्ष दिए।

"मेरा आत्मा मनुष्य से सदा विवाद करता न रहेगा, क्योंकि वह तो देह ही है; मैं उसे 120 वर्ष का समय दूँगा" (उत्पत्ति 6:3)।

उस समय के दौरान, परमेश्वर ने लोगों को पश्चाताप की ओर आकर्षित करने के लिए भविष्यद्वक्ताओं को भेजा, जो उनसे विनती करते थे और उन्हें चेतावनी देते थे कि वे पाप से फिरकर उसकी ओर लौट आएँ। एक भविष्यद्वक्ता हनोक ने इस काल में प्रभु के पृथ्वी पर आने और पाप से निपटने के विषय में प्रचार किया (यहूदा 14)। हनोक ने अपने पुत्र का नाम मथूशेलह रखा, जिसका अर्थ है—"उसके बाद जलप्रलय"—जो आने वाली विपत्ति के बारे में एक और चेतावनी था, यदि लोग पश्चाताप न करें।

मथूशेलह 969 वर्ष तक जीवित रहा—बाइबल में किसी भी व्यक्ति से अधिक—जो यह दर्शाता है कि परमेश्वर लोगों को दुष्टता से फिरकर उसकी ओर आने के लिए भरपूर अवसर देने को कितना इच्छुक था।

लोगों ने नूह को 120 वर्षों तक जहाज़ बनाते हुए देखा, और उस पूरे समय के दौरान नूह उन्हें परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध में आने के विषय में प्रचार करता रहा (2 पतरस 2:5)। नूह के जीवनकाल में पृथ्वी पर ऐसे लोग भी थे जिन्होंने वास्तव में आदम और हव्वा को जाना था। नूह के दादा मथूशेलह, आदम के जीवन के अन्तिम 243 वर्षों तक जीवित थे। नूह के पिता लेमेक, आदम के जीवन के अन्तिम 50 वर्षों तक जीवित रहे। आदम का पौत्र एनोश तब मरा जब नूह 98 वर्ष का था।

इन सभी लोगों ने आदम से स्वयं परमेश्वर और अदन की वाटिका के विषय में बातें सुनी होंगी। इसका अर्थ यह है कि जलप्रलय से पहले रहने वाले लोगों के पास उन दो मनुष्यों—आदम और हव्वा—की सजीव गवाही थी, जिन्होंने वास्तव में पृथ्वी पर परमेश्वर के साथ संगति की थी।

जलप्रलय का सावधानीपूर्वक अध्ययन हमें यह दिखाता है कि परमेश्वर के उद्देश्य उद्धारकारी थे। परमेश्वर ने यथासम्भव अधिक से अधिक लोगों को बचाने का प्रयत्न किया।

राहाब का उद्धार

आइए अब परमेश्वर के उद्धारकारी उद्देश्यों का एक और अद्भुत उदाहरण देखें—इस बार यरीहो नगर के विनाश के बीच में। यरीहो वह पहला नगर था, जहाँ इस्राएली प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश करने के बाद पहुँचे। इस्राएल द्वारा यरीहो पर आक्रमण करने से पहले, इब्रानियों के नए अगुवे यहोशू ने देश की स्थिति जानने के लिए दो भेदियों को नगर में भेजा। किसी ने यरीहो के राजा को यह सूचना दे दी कि वे पुरुष नगर में आए हुए हैं।

परमेश्वर ने एक मूर्तिपूजा करने वाली वेश्या राहाब का उपयोग किया, ताकि वह उन भेदियों को छिपाए और उन्हें सुरक्षित निकलने में सहायता करे।

जब इब्रानी भेदियों ने राहाब से बातचीत की, तो उसने बताया कि वह उनकी सहायता करने के लिए क्यों तैयार थी। उसने कहा:

"मैं जानती हूँ कि यहोवा ने यह देश तुम्हें दे दिया है, और तुम्हारा ऐसा भय हम पर छा गया है कि इस देश के सब निवासी तुम्हारे कारण थरथरा रहे हैं। हमने सुना है कि जब तुम मिस्र से निकल रहे थे, तब यहोवा ने तुम्हारे लिए लाल समुद्र का जल कैसे सूखा दिया था... यह सुनकर हमारे हृदय पिघल गए, और किसी में भी साहस न रहा; क्योंकि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर स्वर्ग में ऊपर और पृथ्वी में नीचे परमेश्वर है" (यहोशू 2:9-11)।

राहाब ने ये शब्द उस समय कहे जब परमेश्वर ने इस्राएल को मिस्र की दासता से छुड़ाए हुए पूरे चालीस वर्ष हो चुके थे—जब उसने लाल समुद्र को चीरकर उनके लिए बच निकलने का मार्ग बनाया था।

जैसा कि आपको स्मरण होगा, जो पीढ़ी पहले मिस्र से निकली थी, उसने प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश करने से इनकार कर दिया और वे चालीस वर्षों तक जंगल में भटकते रहे। उस समय के अन्त में, यहोशू अगली पीढ़ी के इस्राएलियों को प्रतिज्ञा किए हुए देश में ले गया। चालीस वर्ष बीत जाने के बाद भी लोग इस बात की चर्चा कर रहे थे कि परमेश्वर ने मिस्र के साथ क्या किया था, और राहाब जैसे लोग यह स्वीकार कर रहे थे कि यहोवा ही सर्वशक्तिमान परमेश्वर है।

मिस्र में परमेश्वर के सामर्थ्य-प्रदर्शनों का वही प्रभाव पड़ा, जिसकी अभिलाषा थी। उन्होंने अन्यजाति संसार को यह दिखा दिया कि वही एकमात्र परमेश्वर है।

राहाब ने भेदियों से दया की याचना की। उन्होंने उसे सुरक्षित रखने पर सहमति दी और उसे एक लाल डोरी दी, जिसे उसे अपनी खिड़की में बाँधना था। भेदियों ने राहाब से प्रतिज्ञा की कि जब इस्राएली यरीहो पर अधिकार करेंगे, तब उसका घर और उसके साथ घर में रहने वाला हर व्यक्ति बचा लिया जाएगा। अपनी बात के अनुसार, इस्राएलियों ने राहाब और उसके परिवार को बचा लिया (यहोशू 2:18-21; 6:22-23)।

आप यह प्रश्न कर सकते हैं: "केवल राहाब और उसका परिवार ही क्यों बचाए गए? यरीहो नगर के अन्य लोगों का क्या हुआ?"

इस बात पर विचार कीजिए: यरीहो के विनाश से पहले इस्राएली सात दिनों तक नगर के चारों ओर घूमते रहे। नगर से बाहर निकलकर कोई भी यहोवा से दया की प्रथना कर सकता था। नगर के भीतर रहते हुए भी कोई भी उससे दया की याचना कर सकता था। परमेश्वर सदैव उन्हें स्वीकार करता है, जो सच्चे पश्चाताप और विश्वास के साथ उसके पास आते हैं।

एक अंतिम विचार

जैसा कि मैंने इस अध्याय की शुरुआत में कहा था, इस छोटी-सी पुस्तक में पुराने नियम की हर एक उलझन भरी घटना पर हम विस्तार से चर्चा नहीं कर सकते।

परन्तु हमने कुछ ऐसे महत्वपूर्ण सिद्धान्तों पर अवश्य ध्यान दिया है, जो आपको पुराने नियम को और अधिक स्पष्ट, गहराई से और सही दृष्टिकोण के साथ समझने में सहायता करेंगे:

- संदर्भ और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि सही समझ के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं।
- जब किसी पद में लिखा होता है कि "परमेश्वर ने किया," तो मूल पाठकों ने इसे इस अर्थ में समझा कि "परमेश्वर ने अनुमति दी।"
- पुराने नियम में परमेश्वर के प्रमुख उद्देश्यों में से एक यह था कि वह मूर्तिपूजा करने वाले संसार को यह दिखाए कि वही एकमात्र परमेश्वर है—सर्वशक्तिमान परमेश्वर।

यदि पुराने नियम में आपको कोई ऐसी घटना मिलती है जो आपको परेशान करती है, तो यीशु के द्वारा प्रकट की गई परमेश्वर की भलाई के विषय में जो कुछ आप जानते हैं, उसे एक झटके में त्याग न दें। यह मान लेना बेहतर है कि अभी आप उस विशेष पुराने नियम की घटना को पूरी तरह नहीं समझ पाए हैं। पवित्र आत्मा से प्रार्थना कीजिए कि वह आपको उस अंश को पूरे बाइबल के प्रकाश में और परमेश्वर की भलाई के प्रकाश में समझने में सहायता करे।

परमेश्वर के उद्देश्य सदा उद्धारकारी होते हैं। जो परमेश्वर हमें पुराने नियम में प्रकट होता है, वही परमेश्वर हमें नए नियम में भी प्रकट होता है। इसमें कोई विरोधाभास नहीं है। यह केवल पुराने नियम को पढ़ने और समझने की विधि को सीखने का विषय है।

परमेश्वर अच्छा है... और अच्छे का अर्थ वास्तव में अच्छा ही होता है... पुराने नियम में भी और नए नियम में भी।

6

हाँ, लेकिन अय्यूब के बारे में क्या?

"हाँ, लेकिन अय्यूब (अयूब) का क्या?"

यह एक और सामान्य प्रश्न है जो लोग मुझसे तब पूछते हैं, जब वे यह सुनते हैं कि परमेश्वर अपने बच्चों को हानि नहीं पहुँचाता। लोग जानना चाहते हैं:

"यदि परमेश्वर भला है और भला का अर्थ वास्तव में भला ही है, तो फिर अय्यूब के साथ जो हुआ, उसकी व्याख्या कैसे की जाए?"

वे आगे कहते हैं:

"हो सकता है परमेश्वर ने अय्यूब को सीधे तौर पर न छुआ हो, पर यह तो स्पष्ट है कि उसने शैतान को अय्यूब पर आक्रमण करने की अनुमति दी। परन्तु अय्यूब की पुस्तक यह भी नहीं कह सकती कि परमेश्वर ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अय्यूब को दुःख दिया, क्योंकि यह उस तरीके के विपरीत है, जैसा यीशु ने पृथ्वी पर रहते हुए मनुष्यों के साथ व्यवहार किया। फिर इस प्रतीत होने वाले विरोधाभास को हम कैसे सुलझाएँ?"

क्योंकि अय्यूब की पुस्तक पुराने नियम में स्थित है, इसलिए हमें पिछले अध्याय में बताए गए कुछ सिद्धान्तों का प्रयोग करना होगा। हमें अय्यूब को नए नियम के प्रकाश में और इस बात के प्रकाश में पढ़ना होगा कि यीशु हमें परमेश्वर के विषय में क्या दिखाते हैं। हमें यह भी विचार करना होगा कि अय्यूब की पुस्तक किसने लिखी, लेखक ने इसे क्यों लिखा, और यह पुस्तक किन लोगों के लिए लिखी गई थी।

यदि हम इन सिद्धान्तों का उपयोग करें, तो हम स्पष्ट रूप से देखेंगे कि अय्यूब की पुस्तक इस सत्य का खण्डन नहीं करती कि परमेश्वर भला है और भला का अर्थ भला ही है। वास्तव में, यह पुस्तक परमेश्वर की भलाई को स्पष्ट रूप से प्रकट करती है।

आइए संक्षेप में अय्यूब की कहानी पर दृष्टि डालें।

पुस्तक की शुरुआत में अय्यूब का परिचय एक सिद्ध, खरापन रखने वाले व्यक्ति के रूप में दिया गया है, जो परमेश्वर से डरता था और बुराई से दूर रहता था। उसका एक बड़ा परिवार था और उसके पास बहुत अधिक भौतिक संपत्ति थी। अय्यूब और उसके बच्चों का संक्षिप्त वर्णन करने के बाद, बाइबल परमेश्वर और शैतान के बीच अय्यूब के विषय में हुई दो बातचीतों को दर्ज करती है।

उन बातचीतों के बाद, शैतान ने अय्यूब की संपत्ति को नष्ट कर दिया, उसके बच्चों को मार डाला, और उसे एक भयानक त्वचा रोग से ग्रस्त कर दिया। पाठ हमें बताता है कि शैतान का उद्देश्य यह सिद्ध करना था कि अय्यूब केवल इसलिए परमेश्वर की सेवा करता है क्योंकि उसके जीवन में सब कुछ अच्छा है, और यदि उससे वे अच्छी बातें छीन ली जाएँ, तो वह परमेश्वर को त्याग देगा।

अय्यूब के तीन मित्र उसे सांत्वना देने के लिए आए। पुस्तक का अधिकांश भाग अय्यूब और उसके मित्रों के बीच हुए संवाद से भरा हुआ है, जिसमें वे यह समझने का प्रयास करते हैं कि अय्यूब पर इतनी बड़ी विपत्ति क्यों आई। उसके मित्रों का यह मानना था कि उसने अवश्य ही कोई भयानक पाप किया होगा, तभी उस पर ऐसा दुःख आया है। परन्तु अय्यूब इस बात पर दृढ़ रहा कि उसने ऐसा कोई काम नहीं किया, जिसके कारण वह इन त्रासदियों का पात्र बने।

अन्त में, एलीहू नामक एक व्यक्ति प्रकट होता है और परमेश्वर के न्याय और उसकी दया के विषय में बात करता है। इसके बाद स्वयं परमेश्वर आँधी में से अय्यूब से बोलता है और अय्यूब तथा उसके मित्रों को डाँटता है।

अन्ततः, अय्यूब उन बातों के लिए पश्चाताप करता है, जिन्हें उसने बिना समझे बोल दिया था। वह अपने मित्रों के लिए प्रार्थना करता है, और परमेश्वर उसे वह सब कुछ लौटा देता है—बल्कि उससे भी दुगना—जो उसके दुःखों के आरम्भ होने से पहले उसके पास था।

अय्यूब का उद्देश्य

लोग अय्यूब की पुस्तक के उद्देश्य को सही ढंग से नहीं समझते, और इसी कारण वे अय्यूब की कहानी की गलत व्याख्या कर बैठते हैं। अय्यूब की पुस्तक की सामान्य व्याख्या यह की जाती है कि इसे इसलिए लिखा गया था ताकि यह समझाया जा सके कि जीवन में इतना अधिक अयोग्य या निर्दोष दुःख क्यों होता है। लोग यह निष्कर्ष निकालते हैं कि परदे के पीछे परमेश्वर और शैतान दोनों कार्य कर रहे होते हैं—कि कभी-कभी परमेश्वर अपने सार्वभौमिक उद्देश्यों के लिए शैतान को मनुष्यों को दुःख देने की अनुमति देता है, और हमें बस उसकी बुद्धि पर भरोसा करना चाहिए।

परन्तु अय्यूब की पुस्तक लोगों के दुःख उठाने का कारण समझाने के लिए नहीं लिखी गई थी।

अय्यूब और उसके तीनों मित्र इस बात का अनुमान लगाते रहे कि अय्यूब को इतना दुःख क्यों सहना पड़ा। स्वयं अय्यूब ने "क्यों" प्रश्न को कम से कम बीस बार पूछा। उन सभी पुरुषों के निष्कर्ष गलत थे, और उन सभी को परमेश्वर के द्वारा डाँटा गया। यह पुस्तक इस बात की व्याख्या नहीं करती कि अय्यूब के जीवन में संकट क्यों आए—सिवाय इस सामान्य जानकारी के कि उसके दुःखों का स्रोत शैतान था।

तो फिर अय्यूब की पुस्तक का उद्देश्य क्या है?

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए हमें यह समझना होगा कि अय्यूब की कहानी का अर्थ उन लोगों के लिए क्या था, जिनके लिए यह पहली बार लिखी गई थी। स्मरण रखिए, बाइबल में जो कुछ भी लिखा गया है, वह किसी के द्वारा, किसी के लिए, किसी विषय में लिखा गया है। अय्यूब की पुस्तक का हमारे लिए कोई ऐसा अर्थ नहीं हो सकता, जो उन लोगों के लिए अर्थहीन रहा हो, जिन्होंने इसे सबसे पहले सुना था।

अधिकांश बाइबल विद्वान मानते हैं कि अय्यूब बाइबल की सबसे पहली लिखी गई पुस्तक है। इसे मूसा ने उन चालीस वर्षों के दौरान लिखा, जब वह मिद्यान के जंगलों में रहता था—जहाँ वह मिस्र से भाग गया था, जब उसने इस्राएल को मिस्र से निकालने से पहले एक मिस्री को मार डाला था। मिद्यान, ऊज़ देश के पास था, जो अय्यूब का निवास स्थान था।

यद्यपि अय्यूब की कहानी की घटनाएँ मूसा के जीवन से बहुत पहले घटित हुई थीं (संभवतः अब्राहम के समय में), फिर भी मूसा ने अय्यूब की कहानी सुनी और पवित्र आत्मा की प्रेरणा से उसे लिखित रूप दिया। जब मूसा ने अय्यूब की पुस्तक लिखी, उस समय इस्राएली मिस्र में दासत्व में थे—चार सौ वर्षों से अधिक समय से बन्धन में पड़े हुए—और उन्हें निकलने का कोई मार्ग दिखाई नहीं देता था।

मूसा ने अय्यूब की कहानी इस्राएल को आशा देने के लिए लिखी, ताकि उन्हें यह प्रोत्साहन मिले कि परमेश्वर उन लोगों को छुड़ाता है, जो पीड़ादायक दासत्व में दबे हुए हैं।

यह व्याख्या नए नियम के साथ पूर्णतः मेल खाती है।

रोमियों 15:4 के अनुसार, पुराने नियम को आंशिक रूप से इस उद्देश्य से लिखा गया कि वह मनुष्यों को आशा—अर्थात् आने वाले भले की अपेक्षा—दे।

"क्योंकि जो बातें पहले लिखी गई थीं, वे हमारी शिक्षा के लिए लिखी गई थीं, ताकि हम धीरज और पवित्रशास्त्र से मिलने वाली शान्ति के द्वारा आशा रखें"।

याकूब 5:11—नए नियम का वह एकमात्र पद जिसमें अय्यूब का सीधा उल्लेख मिलता है—अय्यूब के धीरज की प्रशंसा करता है और हमारा ध्यान उसकी कहानी के अन्त की ओर ले जाता है:

"तुमने अय्यूब के धीरज के विषय में सुना है और यह भी देखा है कि अन्त में प्रभु ने उसके साथ क्या किया; और इससे तुमने जाना कि प्रभु अत्यन्त करुणामय और दया से भरपूर है"।

हम अय्यूब की पुस्तक पढ़ते हैं और पूछते हैं, "यह क्यों हुआ?"

परन्तु पवित्र आत्मा, याकूब के द्वारा, इस बात पर ध्यान केन्द्रित करता है कि अय्यूब की कहानी का परिणाम क्या हुआ।

"और यहोवा ने अय्यूब की दशा बदल दी, जब उसने अपने मित्रों के लिए प्रार्थना की; और यहोवा ने अय्यूब को उसके पहले से दुगना दिया" (अय्यूब 42:10)।

अय्यूब की पुस्तक में हम देखते हैं कि परमेश्वर ने एक ऐसे मनुष्य को बन्धन से छुड़ाया, जो अत्यन्त गंभीर परिस्थितियों के बावजूद उसके प्रति विश्वासयोग्य बना रहा। परमेश्वर की ओर से अपने लोगों को दी गई सबसे पहली लिखित प्रकटता का उद्देश्य यह था कि वह उन्हें आशा प्रदान करे, यह दिखाते हुए कि परमेश्वर किस प्रकार अपनी भलाई और करुणा के द्वारा विश्वासयोग्य अय्यूब को बचाता और छुड़ाता है।

अय्यूब की पुस्तक इस्राएल को यह प्रकट करने के लिए भी लिखी गई थी कि पृथ्वी पर एक विरोधी (शत्रु) कार्य कर रहा है, जो परमेश्वर को चुनौती देता है और मनुष्यों को परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह में फँसाने का प्रयास करता है।

पुराने नियम में "शैतान" नाम का उल्लेख कुल 19 बार मिलता है। इनमें से 14 बार केवल अय्यूब की पुस्तक में आता है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि अय्यूब की पुस्तक में परमेश्वर को "सर्वशक्तिमान" या "शद्दै" 31 बार कहा गया है—जो कि पुराने नियम के शेष सभी भागों में प्रयुक्त इस नाम से भी अधिक है।

"शद्दै" का अर्थ है—बलवान, और यह परमेश्वर की सामर्थ्य या उसके सार्वभौमिक अधिकार पर बल देता है।

कुछ लोग गलती से यह निष्कर्ष निकालते हैं कि अय्यूब की परिस्थितियाँ यह सिद्ध करती हैं कि क्योंकि परमेश्वर सार्वभौमिक है, इसलिए वह कभी-कभी विशेष उद्देश्यों के लिए शैतान का उपयोग करके लोगों को दुःख देता है। परन्तु यह व्याख्या सही नहीं है, क्योंकि जो लोग अय्यूब की पुस्तक को सबसे पहले सुनते थे, वे इसके संदेश को इस प्रकार नहीं समझते।

आइए उस संदर्भ पर विचार करें, जिसमें इस्राएल ने अय्यूब की पुस्तक को पहली बार प्राप्त किया। अय्यूब की पुस्तक के लिखे जाने तक, परमेश्वर की प्रकटताएँ उसके लोगों के पास प्रत्यक्ष वाणी और पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही मौखिक परम्पराओं के द्वारा आती थीं।

जब परमेश्वर ने पहली बार अब्राहम को कनान देश में ले जाने के लिए बुलाया, तब उसने सीधे अब्राहम से बात की और उस देश को उसे और उसके वंश को देने की प्रतिज्ञा की। परमेश्वर ने अब्राहम से कहा:

“यह निश्चय जान रख कि तेरे वंशज एक परदेश में परदेशी होकर रहेंगे, और उन्हें दास बनाया जाएगा, और वे चार सौ वर्ष तक दु:ख उठाएँगे। पर जिस जाति की वे दासता करेंगे, मैं उसका न्याय करूँगा; और इसके बाद वे बड़ी सम्पत्ति लेकर निकलेंगे” (उत्पत्ति 15:13-14)।

अब्राहम ने ये बातें अपनी संतानों को बताईं। कई वर्षों बाद, जब अब्राहम का पोता याकूब अपने परिवार के साथ मिस्र में रहने गया, तो परमेश्वर ने याकूब से कहा कि वह उसे फिर से कनान देश में वापस लाएगा (उत्पत्ति 46:2-4)। याकूब ने यह संदेश अपने पुत्र यूसुफ को दिया, और यूसुफ ने अपने पुत्रों को निर्देश दिया कि जब वे कनान लौटें, तो उसकी हड्डियाँ भी अपने साथ ले जाएँ (उत्पत्ति 48:21; 50:24-26)।

परन्तु यूसुफ की मृत्यु के बाद, मिस्र ने इस्राएल को दास बना लिया। जैसे-जैसे दासत्व के वर्ष लम्बे होते गए, इब्रानी लोगों ने अवश्य ही यह सोचा होगा कि वे दासत्व में कैसे फँस गए, और क्या वे कभी उस देश में स्वतंत्र होकर लौट पाएँगे, जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अब्राहम से की थी। अय्यूब की कहानी ने यह प्रकट किया कि एक विरोधी है, जो वास्तव में मनुष्यों को बन्धन में ले जाता है। इस्राएल के मामले में, मूर्तिपूजा करने वाले, शैतान से प्रेरित अन्यजाति लोग—जो जलन और भय से संचालित थे—उन्हें दास बना रहे थे।

परन्तु अय्यूब की कहानी ने उन्हें यह भी प्रोत्साहन दिया कि परमेश्वर के पास उन्हें छुड़ाने की एक योजना है, ठीक वैसे ही जैसे उसने अय्यूब को छुड़ाया था।

परमेश्वर की सामर्थ्य और शैतान के कार्य के विषय में इस प्रकाशन का उद्देश्य यह नहीं था कि इस्राएल को यह बताया जाए कि परमेश्वर कभी-कभी ऐसे कारणों से—जो केवल उसी को

ज्ञात हैं—अपने लोगों को दुःख देने के लिए शैतान का उपयोग करता है। बल्कि इसका उद्देश्य इस्राएल को यह आश्वासन देना था:

"शैतान ऐसा कुछ भी नहीं कर सकता जो मुझे चकित कर दे, और वह ऐसा कुछ भी नहीं कर सकता जो मेरे नियंत्रण से बाहर हो। शैतान के कार्यों के कारण तुम्हारे जीवन में जो कुछ भी आए, उसके बावजूद मैं तुम्हें उस दासत्व से छुड़ाऊँगा जिसमें तुम्हें डाला गया है, और जो कुछ तुमने खोया है, उसे मैं तुम्हें लौटा दूँगा।"

इस प्रकार इस्राएल ने अय्यूब की पुस्तक में दिए गए परमेश्वर के संदेश को समझा होगा।

अय्यूब की पुस्तक परमेश्वर की सार्वभौमिकता को इस कारण नहीं दिखाती कि उसने "शैतान को अनुमति दी" कि वह अय्यूब को दुःख दे, बल्कि इस कारण दिखाती है कि परमेश्वर ने उस समस्त बुराई पर जय प्राप्त की, जो अय्यूब के विरुद्ध आई थी।

शैतान के सबसे बड़े हथियार—चोरी, विनाश और मृत्यु (जो सभी पाप से शापित पृथ्वी पर जीवन का भाग हैं)—अय्यूब की परिस्थिति में परमेश्वर के हाथों पूरी तरह पलट दिए गए।

यही वह दृष्टिकोण है, जिससे अय्यूब की कहानी को उसके मूल पाठकों ने समझा होगा।

अय्यूब: उद्धार की एक कहानी

बाइबल अलग-अलग, असंबंधित पदों का केवल एक संग्रह नहीं है। यह एक ही विषय वाली पुस्तक है—

परमेश्वर की एक परिवार की लालसा और उस परिवार को यीशु के द्वारा प्राप्त करने के लिए उसने कितनी दूर तक जाने का निर्णय किया। बाइबल की हर बात, अय्यूब की पुस्तक सहित, उसी कहानी-रेखा के साथ जुड़ी हुई है और उसे आगे बढ़ाती है।

अय्यूब की सही व्याख्या करने और यह समझने के लिए कि वह हमें परमेश्वर के विषय में क्या दिखाती है, हमें इस पुस्तक को बाइबल के मुख्य विषय के संदर्भ में देखना होगा।

बाइबल की शुरुआत परमेश्वर द्वारा पृथ्वी की रचना से होती है—अपने परिवार के लिए एक घर के रूप में। जब परमेश्वर ने आदम को बनाया, तब उसने आदम में एक पुत्र और पुत्रों की एक पूरी जाति बनाई

(यशायाह 45:18; लूका 3:38; उत्पत्ति 5:1)।

परन्तु जब आदम ने पाप किया, तब सम्पूर्ण मानवजाति और स्वयं पृथ्वी पाप, मृत्यु और शैतान के अधीन बन्धन में चली गई।

फिर भी, परमेश्वर ने तुरन्त एक प्रतिज्ञा दी— एक ऐसे व्यक्ति (यीशु मसीह) के आने की, जो आदम के पाप से हुए नुकसान को ठीक करेगा और मनुष्यों को बन्धन से छुड़ाकर उद्धार करेगा, ताकि परमेश्वर को अपना परिवार फिर से मिल सके (उत्पत्ति 3:15)।

यह उद्धार की प्रतिज्ञा मूसा के समय तक मौखिक रूप से पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रही, और फिर मूसा ने इसे लिखित रूप दिया—जो आगे चलकर पुराने नियम का भाग बनी—उस समय जब इस्राएल जंगल में चालीस वर्ष भटक रहा था।

पुराने नियम में परमेश्वर बार-बार एक उद्धारकर्ता की प्रतिज्ञा करता है, जो मनुष्यों को पाप और उसके परिणामों के दासत्व से छुड़ाएगा।

पुराने नियम की घटनाएँ और व्यक्ति, दोनों— मसीह के व्यक्तित्व (उद्धारकर्ता) और मसीह के कार्य (उद्धार) की छाया प्रस्तुत करते हैं।

परमेश्वर द्वारा इस्राएल को मिस्र की दासता से छुड़ाकर प्रतिज्ञा किए हुए देश की आशीषों में पहुँचाना, पवित्रशास्त्र में बार-बार "उद्धार" कहा गया है, क्योंकि यह मसीह में हमारे उद्धार का चित्र है (निर्गमन 6:6; 15:13; भजन 106:10)।

अय्यूब की पुस्तक बाइबल के उद्धार के विषय के साथ पूरी तरह मेल खाती है, क्योंकि यह उद्धार की एक "छोटी" कहानी है— परमेश्वर ने एक ऐसे मनुष्य को छुड़ाया, जो शैतान के कार्यों के अधीन बन्धन में चला गया था।

अय्यूब की पुस्तक आने वाले महान उद्धार की कहानी को भी आगे बढ़ाती है।

यह बाइबल में पहला स्थान है, जहाँ "उद्धारकर्ता" शब्द का उल्लेख मिलता है:

"मुझे तो यह निश्चय है कि मेरा उद्धारकर्ता जीवित है, और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा। और मेरी यह देह नाश हो जाने पर भी, मैं अपने शरीर में परमेश्वर को देखूँगा"

(अय्यूब 19:25-26)।

पूरी पुस्तक के अधिकांश भाग में अय्यूब यह बनाए रखता है कि उसने ऐसा कुछ नहीं किया, जिसके कारण उसके जीवन पर इतनी भयानक विपत्तियाँ आई हों। यद्यपि अय्यूब बार-बार स्वयं को निर्दोष ठहराता रहा, फिर भी वह इस बात से अवगत था कि पाप और उसके विनाशकारी परिणामों के सामने वह स्वयं असहाय है। अय्यूब किसी ऐसे व्यक्ति के लिए पुकार उठता है, जो उसके पाप की समस्या का समाधान कर सके। ऐसा करते हुए, अय्यूब यीशु और उसके उद्धार के कार्य का चित्र प्रस्तुत करता है।

इन पदों पर ध्यान दीजिए।

"हे समस्त मनुष्यों के देखने वाले, मैंने तेरा क्या बिगाड़ा है?

तू ने मुझे अपना निशाना क्यों बना लिया है? …

तू मेरा पाप क्यों नहीं क्षमा कर देता,

और मेरा दोष क्यों नहीं उठा लेता?"

(अय्यूब 7:20-21)

"परन्तु मनुष्य परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी कैसे ठहर सकता है?

काश, हमारे बीच कोई मध्यस्थ होता,

जो हम दोनों पर हाथ रखकर हमें मिलाता।

पर ऐसा कोई नहीं है।

यदि कोई मध्यस्थ होता, तो वह परमेश्वर को मुझे मारने से रोक सकता,

और तब मैं उसके दण्ड से भयभीत होकर न रहता।

तब मैं उससे बिना डर के बात कर सकता,

पर अपनी सामर्थ्य से मैं ऐसा नहीं कर सकता।”

(अय्यूब 9:2, 33-35)

“अब भी मेरा साक्षी स्वर्ग में है,

और मेरा पक्ष लेने वाला ऊँचे स्थान पर है।

मेरा मध्यस्थ मेरा मित्र है,

जब मेरी आँखें परमेश्वर के सामने आँसू बहाती हैं;

वह मनुष्य के पक्ष में परमेश्वर से विनती करता है,

जैसे कोई मनुष्य अपने मित्र के लिए विनती करता है।”

(अय्यूब 16:19-21)

अय्यूब यह नहीं समझ पाया कि उसके दुःख के पीछे परमेश्वर नहीं था, परन्तु उसने यह अवश्य पहचान लिया कि एक पवित्र परमेश्वर के सामने वह एक पापी के रूप में पूर्णतः असहाय है। अय्यूब जानता था कि अपने पाप के कारण उसका परमेश्वर तक कोई सीधा पहुँच मार्ग नहीं है। अपनी सहायता की पुकार में, अय्यूब ने यीशु मसीह का पूर्वाभास दिया,

जो परमेश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ है। यीशु क्रूस पर गया ताकि वह पाप का दण्ड अपने ऊपर ले, पाप को दूर करे, और परमेश्वर तथा मनुष्य को फिर से एक कर दे

(1 तीमुथियुस 2:5; इब्रानियों 9:26; 1 पतरस 3:18)।

आज यीशु स्वर्ग में हमारा पक्ष लेने वाला (अधिवक्ता) है, और वह सदा जीवित है कि हमारे लिए बिनती करता रहे (1 यूहन्ना 2:1; इब्रानियों 7:25)।

पुस्तक के अन्त के निकट, एलीहू बोलने लगता है। उस समय तक वह चुपचाप सुनता रहा था, जब अय्यूब किसी ऐसे व्यक्ति के लिए पुकार रहा था जो उसकी ओर से परमेश्वर के पास जा सके।

एलीहू ने अय्यूब से कहा—यद्यपि मैं भी तेरे ही समान मिट्टी का बना मनुष्य हूँ,

"देख, मैं ही वह व्यक्ति हूँ जिसकी तू कामना कर रहा था—एक ऐसा जो तेरे और परमेश्वर के बीच खड़ा हो सके, और तेरा भी प्रतिनिधि हो तथा उसका भी।"

(अय्यूब 33:6)

एलीहू आगे कहता है कि जब कोई मनुष्य बीमारी और पीड़ा में होता है, यदि उसके पास कोई मध्यस्थ हो, तो वह छुड़ाया जा सकता है:

"यदि उसके पास एक दूत हो, हज़ारों में से एक मध्यस्थ, जो मनुष्य को बताए कि उसके लिए क्या ठीक है, और उस पर अनुग्रह करके कहे—

'इसे गड्ढे में उतरने से बचा ले; मुझे इसके लिए छुड़ौती मिल गई है,'

तो उसका शरीर बालक के समान नया हो जाएगा; वह अपने युवावस्था के दिनों के समान फिर से बहाल हो जाएगा…

वह परमेश्वर के द्वारा अपनी धार्मिक स्थिति में लौटाया जाएगा…

और गड्ढे में जाने से छुड़ाया जाएगा।"

(अय्यूब 33:23-26, 28)

एम्प्लीफाइड बाइबल इसे इस प्रकार कहती है:

“तब [परमेश्वर] उस पर अनुग्रह करता है और कहता है, इसे विनाश के गड्ढे में जाने से बचा लो; मुझे इसके लिए छुड़ौती मिल गई है— एक उद्धार का मूल्य, एक प्रायश्चित!” (पद 24)

अपने शब्दों के द्वारा, एलीहू ने भी मसीह—हमारे उद्धारकर्ता—के व्यक्तित्व और कार्य का पूर्वचित्र प्रस्तुत किया।

अय्यूब की पुस्तक एक ऐसे मनुष्य की कहानी सुनाती है, जिसे परमेश्वर ने विपत्तियों से छुड़ाया— और इसी के साथ वह उस महान उद्धार का चित्र प्रस्तुत करती है, जो मसीह के क्रूस के द्वारा पाप से प्राप्त होने वाला था।

ऐसा करते हुए, अय्यूब की पुस्तक परमेश्वर की भलाई को उजागर करती है।

अय्यूब के पास कम प्रकाश (कम प्रकटता) थी

अय्यूब के साथ जो कुछ हुआ, उसके विषय में हमारी बहुत-सी गलत धारणाएँ स्वयं अय्यूब के कहे हुए शब्दों से उत्पन्न होती हैं।

उदाहरण के लिए:

“यहोवा ने दिया, और यहोवा ने लिया; यहोवा का नाम धन्य हो” (अय्यूब 1:21)।

“क्या हम परमेश्वर के हाथ से भलाई लें, और बुराई न लें?” (अय्यूब 2:10)।

इन और अय्यूब के अन्य कथनों के आधार पर बहुत से लोग यह निष्कर्ष निकाल लेते हैं कि परमेश्वर कभी अपने लोगों को बहुमूल्य वस्तुएँ देता है और फिर किसी उच्च उद्देश्य के लिए उन्हें उनसे छीन भी लेता है। यद्यपि अय्यूब के ये कथन सही प्रतीत होते हैं—क्योंकि हम उन्हें बार-बार सुनते आए हैं—परन्तु वास्तव में वे सही नहीं हैं।

यह समझना बहुत आवश्यक है कि यद्यपि बाइबल में जो कुछ भी लिखा गया है, वह सही रूप से दर्ज किया गया है, परन्तु बाइबल में लिखी हर बात सत्य कथन नहीं होती।

उदाहरण के लिए, फरीसियों ने यीशु के विषय में कहा कि वह पापी है:

"वे उस मनुष्य को जो अंधा था फरीसियों के पास ले गए। जिस दिन यीशु ने कीच बनाया और उसकी आँखें खोलीं, वह सब्त का दिन था। इसलिए फरीसियों ने भी उससे पूछा कि उसे कैसे दृष्टि मिली। उसने कहा, 'उसने मेरी आँखों पर कीच लगाया, और मैंने धोया, और अब देखता हूँ।' इस पर कुछ फरीसी कहने लगे, 'यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं है, क्योंकि वह सब्त को नहीं मानता।' परन्तु औरों ने कहा, 'जो मनुष्य पापी हो, वह ऐसे चिन्ह कैसे दिखा सकता है?'… उन्होंने फिर से उस मनुष्य को बुलाया जो अंधा था, और उससे कहा, 'परमेश्वर की महिमा कर; हम जानते हैं कि यह मनुष्य पापी है'"

(यूहन्ना 9:13-16, 24)।

क्या यीशु पापी था? बिल्कुल नहीं।

हाँ, फरीसियों ने वास्तव में यीशु के विषय में ये बातें कही थीं, परन्तु उनके कथन सत्य नहीं थे। उसी प्रकार, अय्यूब ने जो शब्द अपनी पुस्तक में कहे, वे वास्तव में उसके मुँह से निकले हुए शब्द थे, परन्तु उसके बहुत-से कथन सही नहीं थे। वे सही नहीं हो सकते, क्योंकि वे यीशु के द्वारा हमें दी गई परमेश्वर की प्रकटता के विरोध में जाते हैं।

आप यह सोच सकते हैं: यदि अय्यूब की बातें गलत थीं, तो फिर बाइबल यह क्यों कहती है— "इन सब बातों में अय्यूब ने न तो पाप किया, और न परमेश्वर पर दोष लगाया"

(अय्यूब 1:22), और "इन सब में भी अय्यूब ने अपने होठों से पाप नहीं किया"

(अय्यूब 2:10)?

इन पदों का यह अर्थ नहीं है कि अय्यूब जो कुछ भी कह रहा था, वह सब सही था। इनका केवल यह अर्थ है कि जब उस पर विपत्ति आई, तब अय्यूब ने परमेश्वर को कोसकर पाप नहीं किया।

"यहोवा देता है और यहोवा लेता है"—यह एक पापपूर्ण कथन नहीं है; यह अज्ञान पर आधारित एक घोषणा है। आप यह भी पूछ सकते हैं: बाइबल में ऐसी पुस्तक क्यों शामिल की गई है, जिसमें इतनी "गलत जानकारी" है?

"गलत जानकारी" की अपेक्षा "कम जानकारी" या "कम प्रकाश" कहना अधिक उचित है।

अय्यूब कुलपतियों के समय में जीवित था—अर्थात् अब्राहम, इसहाक और याकूब के समय में। परमेश्वर के विषय में उसकी समझ अधूरी थी। उसे यह ज्ञान नहीं था कि पर्दे के पीछे शैतान कार्य कर रहा है। अय्यूब यह नहीं जानता था कि हर भली वस्तु परमेश्वर से आती है, और यह कि शैतान चोरी करने, घात करने और नाश करने आता है

(याकूब 1:17; यूहन्ना 10:10)।

अय्यूब की कहानी बाइबल में लिखी गई पहली पुस्तक है। क्योंकि परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र के पन्नों के द्वारा स्वयं को धीरे-धीरे प्रकट किया है, इसलिए अय्यूब की पुस्तक में कम प्रकाश है—महत्वपूर्ण प्रकाश, परन्तु वह प्रकाश नहीं जो आज हमारे पास यीशु और नए नियम के द्वारा है।

अय्यूब की सही व्याख्या के लिए इस महत्वपूर्ण बिन्दु पर ध्यान दीजिए:

यद्यपि अय्यूब की "कम जानकारी" हमारे लिए "कम प्रकाश" है, परन्तु इस्राएल के लिए—जिनके लिए अय्यूब की पुस्तक पहली बार लिखी गई थी—वह "अधिक प्रकाश" थी। इब्रानी लोगों के लिए अय्यूब की कहानी परमेश्वर, शैतान और पाप से शापित पृथ्वी पर जीवन के स्वभाव के विषय में अधिक जानकारी प्रदान करती थी।

समस्याएँ तब उत्पन्न होती हैं, जब हम—जिनके पास यीशु में परमेश्वर का पूर्ण प्रकाश है—अपनी परिस्थितियों की व्याख्या अय्यूब के कम प्रकाश के द्वारा करने का प्रयास करते हैं। हम अय्यूब की ओर देखते हैं ताकि उन प्रश्नों के उत्तर पाएँ, जिनका समाधान वह पुस्तक देती ही नहीं।

हम अय्यूब को इस दृष्टिकोण से पढ़ते हैं:

"यह मेरे लिए क्या अर्थ रखता है?

मेरी विशेष परिस्थिति में यह मुझसे क्या कहता है?

मेरी नौकरी क्यों चली गई?

मेरे घर को आँधी ने क्यों नुकसान पहुँचाया?

मेरा प्रिय व्यक्ति क्यों मर गया?"

क्योंकि अय्यूब की पुस्तक इन प्रश्नों का उत्तर नहीं देती, इसलिए हम गलत निष्कर्ष निकाल लेते हैं। अय्यूब की पुस्तक इस्राएल को दासत्व से छुड़ाए जाने की आशा देने के लिए लिखी गई थी और उन्हें यह प्रोत्साहित करने के लिए कि वे परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहें। अय्यूब की पुस्तक के पहले पाठक—इस्राएली लोग—कभी भी उन प्रश्नों को नहीं पूछते, जिन्हें हम इक्कीसवीं शताब्दी में उठाते हैं।

अय्यूब के साथ जो कुछ हुआ, उसके विषय में गलत धारणाएँ उसके शब्दों को संदर्भ से बाहर लेकर पढ़ने के कारण भी उत्पन्न होती हैं।

अय्यूब 23:10 ऐसा ही एक पद है:

"वह तो जानता है कि मैं किस मार्ग से चलता हूँ; जब वह मुझे परखेगा, तब मैं सोने के समान निकल आऊँगा।"

बहुत से लोग कहते हैं कि इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर अय्यूब को कष्टों के द्वारा शुद्ध और परिष्कृत कर रहा था। परन्तु जब हम इस पद को उसके पूरा संदर्भ में पढ़ते हैं, तो हम देखते हैं कि अय्यूब यहाँ परमेश्वर के सामने अपनी निर्दोषता की घोषणा कर रहा है।

जब अय्यूब अपने दुर्भाग्य के विषय में अपने मित्रों से बात करता है, तो वह बार-बार यह कहता है कि उसने ऐसा कुछ भी गलत नहीं किया, जिसके कारण उस पर इस प्रकार की

विपत्तियाँ आई हों। अय्यूब दृढ़ता से यह घोषित करता है कि यदि परमेश्वर उसकी जाँच करे, तो परमेश्वर स्वयं देख लेगा कि यह सच है।

अध्याय 23 की शुरुआत में अय्यूब फिर से यह लालसा व्यक्त करता है कि वह अपना पक्ष परमेश्वर के सामने रख सके:

"काश, मैं जान पाता कि परमेश्वर कहाँ मिल सकता है! मैं उसके सिंहासन के पास जाता और उससे बात करता। मैं अपना पक्ष रखता और अपने तर्क प्रस्तुत करता… (परन्तु)…मैं उसे कहीं नहीं पाता… पर वह जानता है कि मैं कहाँ जा रहा हूँ। और जब वह मुझे आग में सोने की तरह परखेगा, तब वह मुझे निर्दोष ठहराएगा। क्योंकि मैं परमेश्वर के मार्गों पर चलता रहा हूँ; मैंने उसके मार्गों का पालन किया है और उनसे नहीं भटका। मैं उसकी आज्ञाओं से नहीं हटा, बल्कि उसके वचन को अपने हृदय में संजोकर रखा है।"

यह किसी ऐसे मनुष्य की घोषणा नहीं है, जो यह कह रहा हो कि परमेश्वर उसे शुद्ध करने के लिए उसकी परीक्षा ले रहा है। यह एक ऐसे मनुष्य का कथन है, जो अपने गुणों का उल्लेख कर रहा है और यह समझा रहा है कि जो कुछ उसके साथ हुआ है, वह उसका पात्र नहीं है।

"वह जानता है कि मेरे साथ क्या हो रहा है; और जब वह मेरी जाँच करेगा, तो मुझे पूरी तरह निर्दोष घोषित करेगा—ठोस सोने के समान शुद्ध!"

(पद 10)

"वह जानता है कि मैं कहाँ हूँ और मैंने क्या किया है। वह मेरी जितनी चाहे जिरह कर ले—मैं पूरे सम्मान के साथ परीक्षा में सफल हो जाऊँगा।"

(पद 10)

अय्यूब 13:15 भी ऐसा ही एक उदाहरण है, जिसे संदर्भ से बाहर लेकर गलत समझा जाता है:

"चाहे वह मुझे मार ही डाले, तौभी मैं उसी पर भरोसा रखूँगा।"

लोगों ने इसका अर्थ यह निकाल लिया है कि परमेश्वर किसी सार्वभौमिक कारण से आपको मार सकता है, या शैतान को आपको मारने की अनुमति दे सकता है।

परन्तु यह पद ऐसा कुछ नहीं कहता।

जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, अय्यूब बार-बार इस बात पर बल देता है कि यदि वह परमेश्वर से बात कर सके, तो परमेश्वर यह समझ जाएगा कि उसे अन्यायपूर्वक दुःख दिया गया है। जब हम इस पद को उसके संदर्भ में पढ़ते हैं, तो हम देखते हैं कि क्योंकि अय्यूब के पास परमेश्वर की स्पष्ट समझ नहीं थी, इसलिए वह इस बात से चिंतित था कि यदि उसने परमेश्वर से निडर होकर बात की, तो कहीं परमेश्वर उसे मार न डाले। फिर भी, अय्यूब अपने पक्ष के प्रति इतना आश्वस्त था कि वह यह जोखिम उठाने को तैयार था।

"तो मुझे बोलने दो, फिर जो होना हो, हो जाए। मैं अपनी जान जोखिम में क्यों डाल रहा हूँ? इसलिए कि चाहे वह मुझे मार भी डाले, फिर भी मैं आशा रखूँगा। मैं अन्त तक अपनी निर्दोषता का बचाव करूँगा।"

(अय्यूब 13:13-15)

"हाँ, मैं अपनी जान हथेली पर रखकर वही कहूँगा जो सच में सोचता हूँ। हो सकता है परमेश्वर इसके लिए मुझे मार डाले—वास्तव में, मुझे ऐसा ही होने की आशा है। फिर भी, मैं उसके सामने अपना पक्ष रखूँगा।"

(अय्यूब 13:14-15)

इन पदों को उनके संदर्भ में पढ़ने से यह स्पष्ट हो जाता है कि अय्यूब यह नहीं कह रहा था कि परमेश्वर उसे मारना चाहता है या उसे शुद्ध करने के लिए कष्ट दे रहा है।

वह केवल यह व्यक्त कर रहा था कि अपनी सीमित समझ के कारण वह परमेश्वर से डरता था, फिर भी वह अपनी निर्दोषता के प्रति इतना आश्वस्त था कि परमेश्वर के सामने अपना पक्ष रखने को तैयार था।

परमेश्वर और शैतान के बीच संवाद

संदर्भ से बाहर पदों को पढ़ने के अतिरिक्त, हम अय्यूब की पुस्तक की गलत व्याख्या इसलिए भी करते हैं क्योंकि हम पुस्तक के आरम्भ में दर्ज परमेश्वर और शैतान के बीच हुई दो बातचीतों को सही प्रकार से नहीं समझते। इन्हीं बातचीतों के आधार पर बहुत-से लोग यह निष्कर्ष निकाल लेते हैं कि परमेश्वर ने अय्यूब पर शैतान के आक्रमणों को नियुक्त या आदेशित किया था।

परन्तु यह व्याख्या यीशु के द्वारा हमें दी गई परमेश्वर की प्रकटता के बिल्कुल विपरीत है।

नए नियम में कहीं भी यह संकेत नहीं मिलता कि यीशु और शैतान ने कभी साथ-साथ काम किया हो। इसके बिल्कुल उलट, जहाँ-जहाँ यीशु गया, उसने शैतान के कार्यों को नष्ट किया।

बाइबल कभी भी शैतान को परमेश्वर का सहकर्मी या उपकरण नहीं कहती। शैतान को सदा शत्रु कहा गया है। "शैतान" नाम का अर्थ ही है—विरोधी । जैसा कि स्ट्रॉन्ग्स कॉनकॉर्डेंस शैतान के विषय में कहता है, वह "परमेश्वर और हर भलाई का प्रधान शत्रु" है। फिर ऐसा शत्रु परमेश्वर के लोगों को सिद्ध करने में परमेश्वर की सहायता क्यों करना चाहेगा?

जैसा कि हमने अध्याय 3 में कहा था, याकूब 4:7 हमें बताता है कि हमें परमेश्वर के अधीन होना है और शैतान का विरोध करना है। यदि परमेश्वर ही शैतान को हमें दुःख देने, सिखाने, शुद्ध करने या अनुशासन देने के लिए भेजता या अनुमति देता हो, तो फिर हम इस पद की आज्ञा कैसे मान सकते हैं?

हम एक ही समय में शैतान का विरोध भी करें और शैतान के द्वारा आने वाली "परमेश्वर की शिक्षा, अनुशासन और शुद्धिकरण" को स्वीकार भी करें—यह कैसे सम्भव है?

कुछ लोग यह प्रश्न उठाते हैं: "तो फिर 1 कुरिन्थियों 5:1-13 का क्या?"

कुरिन्थुस की कलीसिया में एक ऐसा व्यक्ति था जो अपने पिता की पत्नी के साथ व्यभिचार कर रहा था। पौलुस ने उस स्थिति से निपटने के लिए कलीसिया को निर्देश दिए। उसने लिखा:

“क्या तुम्हें शोक नहीं करना चाहिए था? जिसने ऐसा काम किया है, उसे तुम्हारी संगति से निकाल देना चाहिए था… ऐसे मनुष्य को शैतान के हवाले कर दो, ताकि उसका शरीर पाप के विनाशकारी प्रभावों को भोगे, परन्तु प्रभु के दिन उसका आत्मा बचाया जाए”

(पद 2, 5)।

कुछ लोग तर्क देते हैं कि जैसे परमेश्वर ने अय्यूब के मामले में शैतान को काम करने की अनुमति दी, वैसे ही यहाँ भी परमेश्वर ने पौलुस के द्वारा उस मनुष्य को शैतान के हवाले किया। परन्तु इस घटना को अय्यूब की स्थिति के साथ समान ठहराना परमेश्वर के वचन की गलत व्याख्या का उदाहरण है।

जब पौलुस ने कहा, “उस मनुष्य को शैतान के हवाले कर दो,” तो उसका अर्थ केवल इतना था—“उसे कलीसिया से बाहर कर दो।”

पौलुस ने कुरिन्थियों को उस व्यक्ति को निकाल देने के कई कारण बताए:

पहला, ताकि कलीसिया स्वयं उसके पाप से प्रभावित न हो (पद 7)।

दूसरा, क्योंकि पौलुस पहले ही कुरिन्थियों से कह चुका था कि वे “ऐसे किसी व्यक्ति से मेल-जोल न रखें जो अपने आप को भाई कहता हो, परन्तु यौन पाप में लिप्त हो” ।

तीसरा, क्योंकि पाप हमारे जीवन में मृत्यु को कार्य करता है, और शरीर के लिए बोना शरीर में सड़न उत्पन्न करता है (रोमियों 6:23; गलतियों 6:7-8)।

पौलुस कुरिन्थियों को यह समझा रहा था:

“उस पश्चाताप-रहित व्यक्ति को कलीसिया की सुरक्षा, संगति और आशीषों से बाहर कर दो। उसे अपने पाप के शारीरिक परिणाम भोगने दो। सम्भव है कि यही उसे पश्चाताप की ओर ले आए।”

यह कलीसियाई अनुशासन और शासन से सम्बन्धित विषय था। इसका अय्यूब की परिस्थिति से कोई मेल नहीं है। अय्यूब ने कोई घोर पाप नहीं किया था। वह किसी संगति से निकाला नहीं गया था। और उसे यह भी पता नहीं था कि उसके जीवन में विपत्तियाँ क्यों आईं।

इसके विपरीत, कुरिन्थुस का वह व्यक्ति भली-भाँति जानता था कि उसने क्या गलत किया है, उसे कलीसिया से क्यों निकाला गया है, और वह नकारात्मक परिणाम क्यों भोग रहा है।

इसलिए, अय्यूब की पुस्तक में परमेश्वर और शैतान के बीच हुई बातचीतों को यह सिद्ध करने के लिए उपयोग करना कि परमेश्वर अपने लोगों को दुःख देने के लिए शैतान का प्रयोग करता है—न तो बाइबल के सम्पूर्ण प्रकाश के अनुरूप है और न ही यीशु में प्रकट परमेश्वर के स्वभाव के अनुरूप।

इससे पहले कि हम परमेश्वर और शैतान के बीच हुए संवाद पर चर्चा करें, आइए पहले उन संवादों को पढ़ लें।

पहला संवाद अय्यूब अध्याय 1 में पाया जाता है:

“एक दिन परमेश्वर के पुत्र (स्वर्गदूत) यहोवा के सामने उपस्थित होने आए, और उनके बीच शैतान भी आया” (पद 6)।

“यहोवा ने शैतान से कहा, ‘तू कहाँ से आता है?’

शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, ‘पृथ्वी पर इधर-उधर घूमने और उसमें चारों ओर चलने से।’” (पद 7)।

“यहोवा ने शैतान से कहा, ‘क्या तूने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है? पृथ्वी पर उसके समान कोई नहीं है—वह खरा और सीधा मनुष्य है, जो परमेश्वर से डरता है और बुराई से दूर रहता है।’” (पद 8)।

तब शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया और कहा,

“क्या अय्यूब बिना कारण परमेश्वर से डरता है?

क्या तूने उसके चारों ओर, उसके घर के चारों ओर, और उसकी सारी सम्पत्ति के चारों ओर बाड़ा नहीं बाँध रखा है?

तूने उसके हाथों के काम को आशीष दी है, और उसकी सम्पत्ति देश में बहुत बढ़ गई है।

परन्तु अब यदि तू अपना हाथ बढ़ाकर उसकी सारी सम्पत्ति को छू ले, तो वह तेरे मुँह पर तुझे शाप देगा।”

(पद 9-11)

दूसरा संवाद अय्यूब अध्याय 2 में दर्ज है:

“फिर एक दिन ऐसा हुआ कि परमेश्वर के पुत्र (स्वर्गदूत) यहोवा के सामने उपस्थित होने आए, और उनके बीच शैतान भी यहोवा के सामने उपस्थित हुआ।” (पद 1)।

“यहोवा ने शैतान से कहा, ‘तू कहाँ से आता है?’

शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, ‘पृथ्वी पर इधर-उधर घूमने और उसमें चारों ओर चलने से।’” (पद 2)।

“यहोवा ने शैतान से कहा, ‘क्या तूने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है? पृथ्वी पर उसके समान कोई नहीं है—वह खरा और सीधा मनुष्य है, जो परमेश्वर से डरता है और बुराई से दूर रहता है; और अब भी वह अपनी खराई पर दृढ़ है, यद्यपि तूने मुझे उसके विरुद्ध उकसाया कि मैं उसे बिना कारण नाश करूँ।’” (पद 3)।

तब शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया और कहा, मनुष्य अपने प्राण के लिए अपना सब कुछ दे देगा। परन्तु अब यदि तू अपना हाथ बढ़ाकर उसकी हड्डियों और उसके मांस को छू ले, तो वह तेरे मुँह पर तुझे शाप देगा।"

(पद 4-5)।

तब यहोवा ने शैतान से कहा, "देख, वह तेरे हाथ में है; केवल उसका प्राण बचाए रखना।"

(पद 6)

पहली दृष्टि में, ये दोनों संवाद बहुत परेशान करने वाले प्रतीत होते हैं।

परन्तु इन संवादों का जो भी अर्थ हो, वे यह नहीं कह सकते कि परमेश्वर ने अपने दास अय्यूब के साथ भयानक बातें करने की अनुमति शैतान को दी। ऐसा अर्थ निकालना पूरी बाइबल के संदेश और यीशु के द्वारा हमें दिखाए गए परमेश्वर के स्वभाव के साथ मेल नहीं खाता। यदि हम इन दोनों संवादों को ध्यान से और गहराई से देखें, तो हम स्पष्ट रूप से देखेंगे कि अय्यूब के साथ जो कुछ हुआ, उसके लिए परमेश्वर उत्तरदायी नहीं था।

पहला संवाद

बहुत-से लोग कहते हैं कि परमेश्वर ने स्वयं अय्यूब की ओर संकेत करके शैतान के आक्रमण की शुरुआत की। "क्या तूने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है, कि पृथ्वी पर उसके समान कोई नहीं—वह खरा और सीधा मनुष्य है, जो परमेश्वर से डरता है और बुराई से दूर रहता है?"

(अय्यूब 1:8)

ध्यान दीजिए, परमेश्वर ने यहाँ अय्यूब के आत्मिक गुणों की सराहना की, परन्तु उसकी भौतिक समृद्धि के विषय में कुछ भी नहीं कहा। फिर भी शैतान जानता था कि अय्यूब धनवान है (अय्यूब 1:9-10)। शैतान को यह कैसे पता था?

क्योंकि शैतान अभी-अभी पृथ्वी पर घूम-फिर कर आया था, वह अय्यूब से भली-भाँति परिचित था और पहले से ही उस पर आक्रमण की योजना बना रहा था। इब्रानी भाषा में "ध्यान दिया" या "विचार किया" शब्द का अर्थ है—हृदय को किसी के विरुद्ध लगाना।

यंग्स लिटरल ट्रांसलेशन इसे इस प्रकार प्रस्तुत करता है:

"और यहोवा ने विरोधी से कहा, क्या तूने मेरे दास अय्यूब के विरुद्ध अपना हृदय लगाया है?"

(अय्यूब 1:8)

यह पूरी तरह उस बात के साथ मेल खाता है जो नया नियम शैतान के विषय में कहता है:

"सावधान रहो, जागते रहो; क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गरजते हुए सिंह के समान घूमता फिरता है और खोजता है कि किसे फाड़ खाए।"

(1 पतरस 5:8)

परमेश्वर द्वारा अय्यूब के धर्मी जीवन की प्रशंसा के उत्तर में, शैतान ने उपहास करते हुए कहा, "जब तू उसे इतनी अच्छी मजदूरी देता है, तो वह क्यों न भला जीवन जिए?"

(अय्यूब 1:9)

शैतान ने यह भी कहा कि यदि अय्यूब से सब कुछ छीन लिया जाए, तो वह परमेश्वर को उसके मुँह पर शाप देगा।

इस पर परमेश्वर ने उत्तर दिया:

“ठीक है, उसकी सारी सम्पत्ति तेरे हाथ में है; परन्तु उस मनुष्य पर हाथ न बढ़ाना।”

(अय्यूब 1:12)

बहुत-से लोग मानते हैं कि यहाँ परमेश्वर ने शैतान को अय्यूब पर आक्रमण करने की अनुमति दी और साथ ही उसकी सीमा भी तय कर दी। परन्तु ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि यह यीशु के द्वारा हमें दी गई परमेश्वर की प्रकटता के बिल्कुल विपरीत है।

यहोवा यहाँ किसी अनुमति की घोषणा नहीं कर रहा था, बल्कि एक तथ्य को व्यक्त कर रहा था: अय्यूब, हमारी ही तरह, पहले से ही शैतान के अधिकार-क्षेत्र में था, क्योंकि वह पतनशील मानवजाति में जन्मा था और पाप से शापित पृथ्वी पर रह रहा था।

यह व्याख्या नए नियम की शिक्षा के साथ पूरी तरह मेल खाती है।

अदन की वाटिका में आदम ने अपनी अवज्ञा के द्वारा वह अधिकार, जो परमेश्वर ने उसे पृथ्वी पर दिया था, शैतान के हाथ में सौंप दिया। इसी कारण यीशु ने शैतान को “इस संसार का सरदार” कहा, और प्रेरित पौलुस ने उसे “इस संसार का ईश्वर” तथा “वायु के अधिकार का प्रधान” कहा है (लूका 4:6; यूहन्ना 12:31; 2 कुरिन्थियों 4:4; इफिसियों 2:2)।

दूसरा संवाद

पहले संवाद के बाद, अय्यूब ने अपनी सम्पत्ति और अपने बच्चों को खो दिया

(अय्यूब 1:13-19)। इसके बाद शैतान दूसरी बार परमेश्वर के सामने आया और उनके बीच फिर से बातचीत हुई।

अय्यूब 2:3 मूल रूप से अय्यूब 1:8 की पुनरावृत्ति है, परन्तु इसमें एक अतिरिक्त वाक्य जोड़ा गया है:

“और अब भी वह अपनी खराई पर दृढ़ है, यद्यपि तूने मुझे उसके विरुद्ध उकसाया कि मैं उसे बिना कारण नाश करूँ।”

स्पष्ट रूप से, शैतान के पास परमेश्वर को किसी भी प्रकार से प्रभावित करने या उससे कुछ करवाने की कोई सामर्थ्य नहीं है। सेप्टुआजेंट (यूनानी) अनुवाद इस पद को इस प्रकार प्रस्तुत करता है:

“तौभी उसने अपनी निर्दोषता बनाए रखी, यद्यपि तूने उसके धन-सम्पत्ति के नाश का आदेश दिया, और अपना उद्देश्य पूरा नहीं कर सका।”

जितनी भी विपत्तियाँ अय्यूब पर आईं, उनके बावजूद वह परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बना रहा।

इसके बाद लिखा है:

“तब शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया! मनुष्य अपने प्राण के लिए अपना सब कुछ दे देगा। परन्तु अब यदि तू अपना हाथ बढ़ाकर उसकी हड्डियों और उसके मांस को छू ले, तो वह तेरे मुँह पर तुझे शाप देगा और तुझसे मुकर जाएगा।’

तब यहोवा ने शैतान से कहा, ‘देख, वह तेरे हाथ में है; केवल उसका प्राण बचाए रखना।’”

(अय्यूब 2:4-6)

कुछ लोग कहते हैं कि यह पद दर्शाता है कि परमेश्वर ने शैतान को “रस्सी से बाँध रखा है” और वह उसकी सीमाएँ तय करता है—कि शैतान जितना कर सकता है, उतना ही करेगा। और यदि शैतान की पहली चाल से मनचाहा परिणाम नहीं निकलता, तो परमेश्वर उसे और अधिक विनाश करने की अनुमति दे देता है। अय्यूब के मामले में, लोग कहते हैं कि परमेश्वर ने बस यही सीमा रखी:

“बस उसे मारना नहीं!”

परन्तु यह व्याख्या सही नहीं हो सकती, क्योंकि यीशु—जो स्वयं परमेश्वर है और हमें परमेश्वर को प्रकट करता है—उस ने कभी किसी के साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया।

इस अंश में परमेश्वर शारीरिक मृत्यु की बात नहीं कर रहा था।

इब्रानी भाषा में "प्राण" या "जीवन" शब्द का अर्थ है—मनुष्य का भीतरी अस्तित्व, जिसमें उसके विचार और भावनाएँ सम्मिलित होती हैं।

जब यह शब्द किसी मनुष्य पर लागू होता है, तो इसका अर्थ होता है—पूरा व्यक्तित्व।

इस पद में परमेश्वर एक बार फिर उस तथ्य को दोहरा रहा था कि अय्यूब, क्योंकि वह एक पतित संसार में जन्मा था, पहले से ही शैतान के अधिकार-क्षेत्र में था।

परन्तु परमेश्वर मूल पाठकों के लिए यह बात स्पष्ट कर रहा था कि यद्यपि आदम के पाप के कारण मनुष्य शैतान के क्षेत्र में है, फिर भी—

"यदि तुम मेरे प्रति विश्वासयोग्य बने रहोगे, तो शैतान तुम्हें मुझसे छीन नहीं सकता और न ही वह तुम्हारे लिए मेरी अन्तिम योजना को विफल कर सकता है।"

पहली दृष्टि में, परमेश्वर और शैतान के बीच का यह दृश्य ऐसा प्रतीत होता है मानो परमेश्वर ने शैतान को अय्यूब को दुःख देने का आदेश दिया हो और साथ ही यह भी निर्धारित किया हो कि शैतान अय्यूब के साथ क्या कर सकता है और क्या नहीं।

परन्तु जैसा कि हमने पिछले अध्याय में बताया था, पवित्र आत्मा ने पुराने नियम के लेखकों को इस प्रकार लिखने की प्रेरणा दी कि वे विनाशकारी घटनाओं को परमेश्वर के साथ जोड़ें—इसलिए नहीं कि परमेश्वर उनका कारण था, बल्कि इसलिए कि मनुष्य यह समझ सकें कि परमेश्वर के अतिरिक्त कोई और देवता नहीं है और कोई भी सामर्थ्य परमेश्वर के तुल्य नहीं है।

इस्राएल ऐसे संसार में रहता था जो मूर्तिपूजा से भरा हुआ था। मिस्र में रहते हुए, बहुत से इस्राएली स्वयं मिस्रियों के देवताओं की उपासना करने लगे थे। यदि उन्हें अचानक एक शक्तिशाली विरोधी (शैतान) के विषय में नई जानकारी दी जाती, तो यह सम्भव था कि इब्रानी लोग यह सोचने लगते कि शैतान भी कोई दूसरा देवता है, जिसकी वे उपासना कर सकते हैं।

इसी कारण, परमेश्वर और शैतान के बीच हुए इन संवादों को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि यह बात पूरी तरह स्पष्ट हो जाए:

"मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ—एकमात्र परमेश्वर। सब कुछ, यहाँ तक कि शैतान भी, मेरे अधीन है। ब्रह्माण्ड में मेरी अन्तिम सत्ता और अधिकार के बाहर कुछ भी घटित नहीं होता।"

इसका यह अर्थ नहीं है कि परमेश्वर इस संसार में होने वाली बुराई को उत्पन्न करता है, उसका आदेश देता है, या उसे स्वीकृति देता है। इसका अर्थ केवल इतना है कि कोई भी घटना उसे चकित नहीं करती, और ऐसा कुछ भी नहीं होता जिसे वह अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए—जब वह अपने परिवार को इकट्ठा कर रहा है—उपयोग में न ला सके।

इस्राएल के लिए यह अधिक प्रकाश था... आश्वस्त करने वाला प्रकाश।

अय्यूब का अन्त

जैसा कि हमने पहले बताया था, नए नियम में अय्यूब का जो एकमात्र उल्लेख मिलता है, वह हमें उसकी कहानी के अन्त की ओर निर्देशित करता है।

यह विचार कि परमेश्वर ने किसी गुप्त या सार्वभौमिक उद्देश्य के लिए शैतान को अय्यूब को दुःख देने की अनुमति दी—कहानी के अन्त के साथ मेल नहीं खाता।

अय्यूब की परीक्षा के अन्त में, परमेश्वर आँधी में से अय्यूब से बोला और उसकी अज्ञानता और असमर्थता को चुनौती दी

(अय्यूब 38:1–40:2; 40:7–41:34)।

परन्तु ध्यान देने योग्य बात यह है कि परमेश्वर ने कहीं भी अय्यूब की पीड़ाओं का उल्लेख नहीं किया, और न ही उसने यह बताया कि अय्यूब पर बुराई क्यों आई।

यदि अय्यूब की पुस्तक की सामान्य व्याख्या सही होती—कि परमेश्वर ने किसी उद्देश्य से शैतान को अय्यूब को दुःख देने दिया—तो फिर परमेश्वर के शब्दों में अय्यूब के दुःख का कोई उल्लेख क्यों नहीं है?

इसका कारण यह है कि अय्यूब की पुस्तक, अय्यूब के दुःख के विषय में नहीं है।

बाइबल के अन्य सभी संदर्भों के अनुसार, अय्यूब की पुस्तक अय्यूब की धार्मिकता, उसके धीरज, और एक प्रेमी परमेश्वर के हाथों उसके छुड़ाए जाने के विषय में है

(यहेजकेल 14:14, 20; याकूब 5:11)।

आइए परमेश्वर द्वारा अय्यूब से कहे गए शब्दों के कुछ प्रमुख अंशों पर ध्यान दें।

परमेश्वर ने कहा:

"तू बातों को क्यों उलझाता है?

तू बिना समझे क्यों बोलता है?

अपने आप को सम्भाल, अय्यूब!

खड़ा हो जा!

सीधा खड़ा हो!"

(अय्यूब 38:2-3)

इसके बाद परमेश्वर ने अय्यूब से भौतिक सृष्टि के अद्भुत कार्यों के विषय में प्रश्न किए:

“जब मैंने पृथ्वी की नींव डाली, तब तू कहाँ था?

क्या तू उसकी प्रक्रियाओं या उसके प्राणियों को समझा सकता है या नियंत्रित कर सकता है?”

“यदि तू सर्वशक्तिमान के शासन के तरीकों पर प्रश्न करता है, तो अब तू स्वयं को महिमा और वैभव से सजा, सर्वोच्च शासक के समान अपने आप को प्रस्तुत कर, और यदि तू इतना बुद्धिमान है, तो संसार का शासन स्वयं संभाल ले।”

(अय्यूब 40:10)

“मैं तो खुशी-खुशी एक ओर हट जाऊँ और सब कुछ तुझे सौंप दूँ—तू निश्चय ही बिना मेरी सहायता के स्वयं को बचा लेगा!”

(अय्यूब 40:14)

परमेश्वर ने अय्यूब को इस बात के लिए डाँटा कि वह उसके काम करने के तरीकों पर प्रश्न उठा रहा था। परन्तु जिन “बातों” के विषय में परमेश्वर ने उससे बात की, वे अय्यूब की परिस्थितियों के विशिष्ट विवरण नहीं थे।

इसके स्थान पर, परमेश्वर ने अय्यूब से अपनी सृष्टि के अद्भुत वैभव के विषय में बात की—जो उसकी सामर्थ्य और बुद्धि को प्रकट करता है।

क्यों?

क्योंकि अय्यूब, हमारी ही तरह, पाप से शापित पृथ्वी पर जीवन की अनिश्चितता और अन्याय से जूझ रहा था। यद्यपि अय्यूब परमेश्वर की आज्ञा में और उसके भय में जीवन जीता था, फिर भी— उसने अपनी सम्पत्ति बिजली गिरने और लुटेरों के कारण खो दी, अपने बच्चों को एक भयानक आँधी में खो दिया, और अपने स्वास्थ्य को एक घोर बीमारी के कारण।

अपनी व्यक्तिगत परिस्थितियों के विषय में प्रश्न करने और शिकायत करने के अतिरिक्त, अय्यूब ने अपने चारों ओर निर्दोष लोगों का दुःख भी देखा।

उसने कहा:

"भले लोग क्यों व्यर्थ में उसकी बाट जोहते रहते हैं?

अपराध की लहर चारों ओर फैल गई है...

गरीबों और अनाथों के गधे छीन लिए जाते हैं...

दरिद्रों को रास्ते से धकेल दिया जाता है...

दुष्ट माँ की छाती से अनाथ बच्चों को छीन लेते हैं...

नगर में मरते हुए लोगों की हड्डियाँ कराहती हैं;

घायल सहायता के लिए पुकारते हैं;

परन्तु परमेश्वर उनकी कराह नहीं सुनता।"

(अय्यूब 24:1-13)

अय्यूब को ऐसा प्रतीत होने लगा था कि परमेश्वर न केवल उसके जीवन को, बल्कि पूरे जीवन को ही ठीक प्रकार से नहीं संभाल रहा है। परमेश्वर द्वारा अय्यूब को डाँटते समय उसके दुःखों का उल्लेख न करना, और इसके बजाय सृष्टि के द्वारा प्रकट अपनी सामर्थ्य और बुद्धि पर बल देना— तब समझ में आता है, जब हम अय्यूब की कहानी को बाइबल के सम्पूर्ण विषय के संदर्भ में देखते हैं।

परमेश्वर ने मनुष्य को अपने पुत्रों के रूप में रचा, और पृथ्वी को अपने परिवार के लिए घर के रूप में बनाया। पाप के कारण उसकी मूल योजना पटरी से उतर गई।

परन्तु परमेश्वर अपनी योजना पर कार्य कर रहा है— अपने परिवार और उनके घर को दासत्व से छुड़ाने की योजना।

यह ऐसा प्रतीत हो सकता है मानो परमेश्वर बातों को ठीक से नहीं सँभाल रहा, क्योंकि दुःख की विशिष्ट घटनाओं का तुरन्त समाधान नहीं होता। परन्तु इस समय परमेश्वर का मुख्य लक्ष्य यह नहीं है कि वह हर दुःख को तुरंत रोक दे और जीवन को आसान बना दे।

उसका प्रधान उद्देश्य यह है कि मनुष्यों और स्त्रियों को अपने उद्धारक ज्ञान तक पहुँचाए।

परमेश्वर के शब्दों ने अय्यूब को चुनौती दी:

"तू कौन है जो यह प्रश्न करे कि मानवजाति और पृथ्वी के उद्धार की मेरी योजना कैसे पूरी हो रही है?

मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ। मैं तुझे भी बचाऊँगा, और अपने पूरे परिवार को भी बचाऊँगा।"

अय्यूब की पुस्तक स्वयं ये बातें ठीक-ठीक इन शब्दों में नहीं कहती, परन्तु बाइबल की अन्य पुस्तकों में ऐसे पद अवश्य हैं जो इन्हें स्पष्ट करते हैं।

जब आप अय्यूब की पुस्तक को उस बड़े प्रकाश में—अर्थात् सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र और यीशु में प्रकट परमेश्वर के प्रकाश में—समझते हैं, तो वह पूरी तरह उस बात के साथ संगत पाई जाती है जो यीशु हमें परमेश्वर के विषय में दिखाते हैं, और उस उद्देश्य के साथ भी, जिसके लिए अय्यूब की पुस्तक मूल रूप से लिखी गई थी—इस्राएल की सहायता करने के लिए।

इस्राएल को मिस्र से निकलने के बाद प्रतिज्ञा किए हुए देश की यात्रा में उसी प्रकार के संघर्षों का सामना करना था, जैसे अय्यूब ने किए थे।

इस्राएल भी परमेश्वर पर प्रश्न उठाने वाला था, शिकायत करने वाला था, और उसकी देखभाल पर सन्देह करने वाला था

(निर्गमन 16:2, 7; गिनती 14:1-3)।

परमेश्वर की ओर से इस्राएल को दी गई पहली लिखित प्रकटता का संदेश यह था:

"ऐसा लग सकता है मानो मैंने बातों को ठीक से नहीं सँभाला, परन्तु मैं जानता हूँ कि मैं क्या कर रहा हूँ।

मैं सब कुछ ठीक कर दूँगा!"

अय्यूब ने अपनी अज्ञानता और अपने अनुमान को स्वीकार किया और पश्चाताप किया।

परन्तु ध्यान दीजिए—अय्यूब में परिवर्तन उसके दुःखों के कारण नहीं आया।

उसके जीवन की गलत धारणाएँ और समस्याएँ तब प्रकट हुईं और बदलीं, जब परमेश्वर ने उससे बात की।

ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर मनुष्यों को अपने वचन के द्वारा सुधारता और शुद्ध करता है, न कि पीड़ादायक परिस्थितियों के द्वारा।

(इस बिन्दु पर हम आगे और विस्तार से चर्चा करेंगे।)

प्राकृतिक बातें—जैसे कठिन परिस्थितियाँ— आत्मिक परिणाम उत्पन्न नहीं करतीं।

त्रासदियाँ लोगों को शुद्ध नहीं करतीं, जैसे कि केवल कलीसिया में बैठने से लोग नए प्राणी नहीं बन जाते। अय्यूब की परीक्षा के अन्त में, परमेश्वर ने अपने आप को अय्यूब पर जैसा वह वास्तव में है, प्रकट किया। ऐसा करके, परमेश्वर ने अय्यूब को ऐसा मन की शान्ति दी, जो उसके जीवन के अन्तिम 140 वर्षों तक उसे सँभाले रही।

"तू पूछता है कि वह कौन है जिसने तेरी व्यवस्था को अज्ञानता में ठुकराया।

वह मैं ही था।

मैं उन बातों के विषय में बोल रहा था जिन्हें मैं जानता नहीं था, और जिन्हें मैं समझता नहीं था— वे बातें जो मेरे लिए अत्यन्त अद्भुत थीं... मैंने तेरे विषय में केवल सुना ही था, परन्तु अब मेरी आँखों ने तुझे देख लिया है... और अन्त में वह बहुत बूढ़ा होकर मरा, एक लम्बा और भला जीवन जीकर।"

(अय्यूब 42:3, 5, 17)

यह समझ लेने के बाद भी कि अय्यूब के जीवन की दुखद परिस्थितियों के पीछे परमेश्वर नहीं था, लोग फिर भी यह प्रश्न कर सकते हैं:

"यदि ये सारी बुरी बातें अय्यूब—जो निर्दोष और सीधा कहा गया— उस के साथ हो सकती हैं,

तो क्या मेरे साथ भी भयानक बातें होंगी?"

किसी को भी ऐसा जीवन मिलने की गारंटी नहीं है, जो पूरी तरह समस्याओं से मुक्त हो।

वास्तव में, यीशु ने कहा: "संसार में तुम्हें क्लेश होगा; परन्तु ढाढ़स रखो, मैंने संसार को जीत लिया है।"

(यूहन्ना 16:33)

हमारे दुःखों और कठिनाइयों के बावजूद, बाइबल यह प्रतिज्ञा करती है कि मसीह के द्वारा हम हर उस बात के बीच में भी विजयी होकर खड़े रह सकते हैं, जो शैतान और जीवन हमारे मार्ग में लाते हैं।

परमेश्वर हमें तब तक सँभाले रखेगा, जब तक वह हमें पूरी तरह बाहर न निकाल ले।

कभी-कभी लोग यह जानने की कोशिश करते हैं कि अय्यूब ने "क्या गलत किया" या उसने "शैतान को कैसे उस तक पहुँचने दिया।"

परन्तु अय्यूब की पुस्तक इन प्रश्नों को हल करने के लिए लिखी ही नहीं गई थी।

जो बातें अय्यूब की पुस्तक नहीं कहती, उन्हें खोजते हुए उन बातों से वंचित न हो जाइए जो वह वास्तव में कहती है।

निष्कर्ष

अन्त में,

अय्यूब की पुस्तक के विषय में हम और भी बहुत कुछ कह सकते हैं, परन्तु इन अन्तिम विचारों पर ध्यान कीजिए।

अय्यूब की पुस्तक उन लोगों के लिए, जिनके लिए वह मूल रूप से लिखी गई थी, आश्चर्य से भर देने वाली और आशा से परिपूर्ण पुस्तक थी। यदि हम इसे इस संदर्भ में पढ़ें कि इसका अर्थ इस्राएल के लिए क्या था, और फिर इसे नए नियम के महान प्रकाश से छानकर देखें, तो अय्यूब की पुस्तक हमारे लिए भी आशा से भर देने वाली, विस्मयकारी पुस्तक बन जाएगी।

पाप से शापित इस पृथ्वी पर, हम—अय्यूब की तरह—ऐसी बातें देखेंगे और अनुभव करेंगे, जिन्हें हम पूरी तरह समझ नहीं पाएँगे। ऐसी परिस्थितियाँ आएँगी, जिनके विषय में हमारे मन में "क्यों" के प्रश्न उठेंगे। परन्तु अय्यूब से कहे गए परमेश्वर के शब्द हमें यह आश्वासन देते हैं:

"देख, मैं कितना महान हूँ।

मेरी बुद्धि को देख।

यह सब मुझे अचानक नहीं हुआ।

मैं इसे ठीक कर दूँगा।

मेरी उद्धार की योजना पूरी होकर रहेगी।

शैतान मेरी उस योजना को विफल नहीं कर सकता,

जिसके द्वारा मैं तुम्हें अपने पुत्र बनाना चाहता हूँ

और तुम्हारे साथ एक सिद्ध पृथ्वी पर रहना चाहता हूँ—

ऐसी पृथ्वी जो हर प्रकार की भ्रष्टता और मृत्यु से

पूरी तरह छुड़ा ली गई होगी।"

अय्यूब की कहानी इस बात का एक "छोटा चित्र" है कि परमेश्वर ने अय्यूब के लिए सब कुछ ठीक किया—और यह एक प्रतिज्ञा भी है कि वह अन्ततः अपने पूरे परिवार के लिए भी सब कुछ ठीक करेगा।

अय्यूब की पुस्तक को पढ़ना पूर्वधारणाओं से प्रभावित हुए बिना करना कठिन है।

परन्तु यदि हम उन धारणाओं को एक ओर रख सकें, और इस पुस्तक को पूरी बाइबल के प्रकाश में पढ़ें, तो हम अय्यूब की कहानी को सही रूप में समझ सकते हैं।

और तब, एक बार फिर, हम यह स्पष्ट रूप से देखते हैं कि

परमेश्वर अच्छा है…

और अच्छे का अर्थ वास्तव में अच्छा ही होता है।

7

हाँ, लेकिन मसीही कष्टों के बारे में क्या?

यहाँ तक आते-आते, संभव है कि आप यह सोच रहे हों, "ठीक है, मैं समझता हूँ कि परमेश्वर ने अय्यूब की परीक्षाएँ नहीं भेजीं। परन्तु दुःख के विषय में क्या? क्या प्रभु के लिए दुःख उठाना मसीही जीवन का एक भाग नहीं है?

क्या हमें उसके नाम के लिए दुःख सहने के लिए नहीं बुलाया गया है?"

हाँ, दुःख मसीही जीवन का एक भाग है,

परन्तु उस प्रकार से नहीं, जैसा आप शायद सोच रहे हों।

सच्चाई यह है कि इस जीवन में हर कोई दुःख उठाता है—चाहे वह मसीही हो या न हो।

दुःख पृथ्वी पर इसलिए विद्‌यमान है क्योंकि आदम और हव्वा ने पाप किया।

उनके पाप का मानव जाति पर और सारी पृथ्वी पर एक विनाशकारी प्रभाव पड़ा।

परिणामस्वरूप, ऐसा कोई जीवन नहीं है जिसमें दुःख न हो।

पाप से शापित इस पृथ्वी पर दुःख जीवन का ही एक हिस्सा है।

नया नियम प्रभु के लिए दुःख उठाने को इस प्रकार परिभाषित करता है—

कि हम मसीह में अपने विश्वास के कारण सताए जाएँ, और यह कि जब हम उसके लिए जीते हैं, तब जो भी व्यक्तिगत त्याग या असुविधा हमें सहनी पड़ती है, वही दुःख है।

बाइबल मसीहियों के संदर्भ में दुःख के दो प्रकारों की बात करती है:

एक, वे बातें जिन्हें यीशु ने हमारे लिए सहा;

और दूसरा, वे बातें जिन्हें हम उसके लिए सहते हैं।

जब नया नियम प्रभु के लिए दुःख उठाने की बात करता है, तो वह कभी भी बीमारी सहने, या खराब वैवाहिक जीवन, या कार दुर्घटना, या व्यापार में असफलता को दुःख के रूप में नहीं बताता।

हमें सदैव पवित्रशास्त्र को ही पवित्रशास्त्र की परिभाषा करने देना चाहिए।

यदि बाइबल प्रभु के लिए दुःख उठाने को बीमारी सहना या कठिन संबंधों को झेलना नहीं कहती, तो हमें "दुःख" शब्द पर ये परिभाषाएँ थोपने का कोई अधिकार नहीं है।

यीशु ने हमारे लिए दुःख उठाया

यीशु मसीह ने क्रूस पर हमारे लिए कुछ विशेष बातें सहन कीं, ताकि हमें उन्हें सहना न पड़े।

यशायाह 53:4–6 में लिखा है: "निश्चय उसने हमारी दुर्बलताओं को उठाया और हमारे ही दुःखों का बोझ अपने ऊपर ले लिया; तौभी हम ने उसे परमेश्वर का मारा हुआ, कूटा हुआ और दुःखी समझा।

परन्तु वह हमारे अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कारण कुचला गया; जो दण्ड हमारी शान्ति के लिए था, वह उसी पर पड़ा, और उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो गए। हम सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे, हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग चुना;

और यहोवा ने हम सबों का अधर्म उस पर लाद दिया।"

यह पद हमें स्पष्ट रूप से बताता है कि परमेश्वर ने क्रूस पर हमारे अधर्म यीशु पर डाल दिए।

इब्रानी भाषा में "अधर्म" शब्द *आवोन* है, और इसका अर्थ केवल पाप ही नहीं है, बल्कि वह दण्ड और वे बुरे परिणाम भी हैं जो पाप के कारण उत्पन्न होते हैं।

क्रूस पर परमेश्वर ने न केवल हमारे पाप, बल्कि हमारे पापों के परिणाम भी यीशु पर डाल दिए।

गलातियों 3:13 में लिखा है: "मसीह ने हमें व्यवस्था के शाप से मोल लेकर छुड़ा लिया,

और स्वयं हमारे लिये शाप ठहरा; क्योंकि लिखा है, 'जो कोई सलीब पर लटकाया जाता है, वह शापित है।'"

व्यवस्था का शाप उन सभी परिणामों को सम्मिलित करता है

जो व्यवस्थाविवरण 28 में बताए गए हैं— अपमान, बाँझपन, फलहीनता, मानसिक और शारीरिक रोग, परिवार का टूट जाना, शारीरिक और आत्मिक दरिद्रता, विरोध, असफलता और पराजय, और अन्य बहुत-सी बातें। इन सभी शापों का भार सलीब पर यीशु पर आ पड़ा, ताकि हम उनसे छुड़ाए जा सकें।

सलीब पर एक अद्भुत अदला-बदली हुई। हमारे पाप और अवज्ञा के कारण जो सारी बुराई हमारे हिस्से में आने वाली थी, वह यीशु पर चली गई, ताकि उसकी आज्ञाकारिता के कारण जो सारी आशीषें उसके योग्य थीं, वे हमारे पास आ सकें।

"वह इसलिए पीटा गया कि हमें शान्ति मिले।

उसे कोड़े मारे गए, और हम चंगे हो गए!"

(यशायाह 53:5)

बहुत-से मसीही बीमारी, रोग, पीड़ा, परिवार के टूटने, और पराजय को सहते हैं और यह सोचते हैं कि वे इस प्रक्रिया में प्रभु के लिए दुःख उठा रहे हैं। परन्तु बाइबल हमें यह सिखाती है

कि यीशु ने ये सभी शाप क्रूस पर सह लिए, ताकि हमें उन्हें उठाना न पड़े।

हम उसके लिए दुःख उठाते हैं

प्रभु के लिए दुःख उठाने में वह सताव और वह व्यक्तिगत त्याग सम्मिलित है, जिसका हम अनुभव करते हैं जब हम सुसमाचार का प्रचार करते हैं और यीशु मसीह के लिए जीवन जीते हैं। सताव मसीही जीवन का एक भाग है।

यीशु ने कहा, "जो बात मैं ने तुम से कही थी, उसे स्मरण रखो— दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता। यदि उन्होंने मुझे सताया, तो तुम्हें भी सताएँगे"

(यूहन्ना 15:20)।

प्रेरित पौलुस ने लिखा, "और जितने मसीह यीशु में भक्ति से जीवन बिताना चाहते हैं, वे सब सताए जाएँगे"

(2 तीमुथियुस 3:12)।

पौलुस ने फिलिप्पियों 1:29 में ये शब्द भी लिखे:

"क्योंकि मसीह के कारण तुम्हें यह अनुग्रह दिया गया है कि न केवल उस पर विश्वास करो,

परन्तु उसके लिए दुःख भी उठाओ।"

मैंने इस पद को कई बार इस बात के प्रमाण के रूप में उद्‌धृत होते सुना है कि मसीहियों को बीमारी, पीड़ा और त्रासदियाँ सहनी ही चाहिए। परन्तु अगले ही पद के आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कि पौलुस यहाँ बीमारी या दुखद घटनाओं की नहीं, बल्कि सताव की बात कर रहा था।

वह आगे कहता है, "और तुम्हें वैसा ही संघर्ष करना पड़ रहा है, जैसा तुमने मुझ में देखा था

और अब मेरे विषय में सुनते हो।"

फिलिप्पियों 1:30 में पौलुस यह स्पष्ट करता है कि फिलिप्पी के विश्वासी वही युद्ध लड़ रहे थे जो उन्होंने उसे लड़ते हुए देखा था और जिसके विषय में वे अब सुन रहे थे कि वह अभी भी उसे लड़ रहा है।

जब पौलुस ने ये शब्द लिखे, वह रोम में जेल में था, क्योंकि वह यीशु मसीह के पुनरुत्थान का शुभ समाचार प्रचार कर रहा था। उस समय वह नहीं जानता था कि उसे रिहा किया जाएगा या मार दिया जाएगा।

ध्यान दीजिए, पौलुस केवल उस संघर्ष की बात नहीं करता जिसके विषय में फिलिप्पियों ने सुना था, बल्कि उस संघर्ष की भी बात करता है जिसे उन्होंने स्वयं उसमें देखा था।

उन्होंने क्या देखा था?

कई वर्ष पहले पौलुस फिलिप्पी नगर में आया था और एक दासी में से दुष्ट आत्मा निकालने के कारण उसे जेल में डाल दिया गया था (प्रेरितों के काम 16:12–34)।

फिलिप्पियों ने पौलुस को सुसमाचार के प्रचार के कारण जेल में जाते देखा था, और अब वे सुन रहे थे कि वह उसी प्रचार के कारण रोम की जेल में है।

यही वह अर्थ है जिसे पौलुस "प्रभु के लिए दुःख उठाना" कहता है।

रोमियों 8:17 में पौलुस मसीह के साथ दुःख उठाने की बात करता है:

"और यदि हम उसकी सन्तान हैं, तो वारिस भी हैं— परमेश्वर के वारिस और मसीह के संग सह-वारिस; यदि हम उसके साथ दुःख उठाते हैं, तो उसके साथ महिमा भी पाएँगे"।

जो एकमात्र दुःख हम यीशु के साथ साझा कर सकते हैं, वह है—सताव।

जब यीशु दमिश्क के मार्ग पर शाऊल को दिखाई दिया (जो आगे चलकर पौलुस कहलाया), तो शाऊल मसीहियों को पकड़ने जा रहा था। यीशु ने शाऊल से कहा

कि मसीहियों को सताना, उसी को सताने के समान है।

"और जब वह मार्ग में था और दमिश्क के निकट पहुँचा, तो अचानक आकाश से एक ज्योति उसके चारों ओर चमकी, और वह भूमि पर गिर पड़ा। तब उसने एक शब्द सुना जो उससे कह रहा था,

'शाऊल, शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?'

उसने पूछा, 'हे प्रभु, आप कौन हैं?'

उत्तर मिला, 'मैं यीशु हूँ, जिसे तू सताता है'"

(प्रेरितों के काम 9:4–5)।

मसीही लोग मसीह की देह हैं, और हम सिर—प्रभु यीशु मसीह—से जुड़े हुए हैं।

जब देह सताई जाती है, तो सिर भी सताया जाता है।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में हम देखते हैं कि यीशु के पहले अनुयायियों ने दो प्रकार के दुःखों का अनुभव किया। उन्होंने सुसमाचार का प्रचार करने के कारण मार खाई, जेल गए,

निन्दा सही, और यहाँ तक कि मृत्यु भी झेली।

साथ ही, उन्होंने शारीरिक असुविधाएँ भी सहन कीं— यात्राओं की कठिनाइयों के कारण,

सामने आए अवरोधों के कारण, और उन वस्तुओं के कारण जिन्हें उन्होंने त्याग दिया, जब वे यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान का संदेश दुनिया भर में ले जाने लगे।

हम इसे प्रेरितों के काम 5 में देखते हैं, जब यरूशलेम के यहूदी अगुओं ने यीशु के नाम से चमत्कार करने के कारण प्रेरितों को पकड़ लिया। उस रात एक स्वर्गदूत ने प्रेरितों को छुड़ा दिया और उनसे कहा कि वे मन्दिर में जाकर यीशु का संदेश सुनाएँ।

जब धार्मिक अधिकारियों ने सुना कि प्रेरित मन्दिर में प्रचार कर रहे हैं,

तो उन्होंने उन्हें फिर पकड़ लिया और महासभा के सामने लाया।

"और जब उन्होंने प्रेरितों को बुलाकर उन्हें पिटवाया, तो यह आज्ञा दी कि यीशु के नाम से न बोलें, और उन्हें छोड़ दिया। तब वे महासभा के सामने से यह कहते हुए आनन्दित होकर चले गए कि वे उसके नाम के लिए अपमान सहने के योग्य गिने गए"

(प्रेरितों के काम 5:40–41)।

इस घटना में यह स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया है कि प्रभु के लिए दुःख उठाना क्या है— सुसमाचार के प्रचार के कारण सताव सहना।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में ऐसा कोई भी उदाहरण नहीं मिलता जहाँ पहले मसीहियों ने बीमारी, शारीरिक दुर्बलता, रिश्तों की समस्याओं, या इस प्रकार की अन्य कठिन परिस्थितियों को "प्रभु के लिए दुःख उठाना" कहा हो।

जब प्रेरितों ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में और पत्रियों में प्रभु के लिए दुःख उठाने की बात कही या उसके विषय में लिखा, तो उनका संदर्भ सदैव सताव और उन कठिनाइयों से जुड़ा हुआ था जो सुसमाचार के प्रचार के कारण आती थीं— ठीक वैसे ही दुःख, जिनका उन्होंने स्वयं अनुभव किया था।

एक चुना हुआ पात्र

कभी-कभी लोग कहते हैं कि प्रेरित पौलुस एक चुना हुआ पात्र था, जिसे प्रभु ने विशेष रूप से दुःख उठाने के लिए चुन लिया था, और यह कि मसीही लोग भी ऐसे ही दुःख के लिए चुने जा सकते हैं।

परन्तु बाइबल इस विश्वास का समर्थन नहीं करती। पवित्रशास्त्र यह कहता है कि पौलुस एक चुना हुआ पात्र था, जिसे सुसमाचार का प्रचार करने के लिए बुलाया गया था।

“परन्तु प्रभु ने उससे कहा, तू चला जा, क्योंकि वह मेरा एक चुना हुआ पात्र है, कि मेरा नाम अन्यजातियों और राजाओं और इस्राएलियों के सामने प्रकट करे; क्योंकि मैं उसे दिखाऊँगा कि मेरे नाम के लिए उसे कितने बड़े दुःख उठाने पड़ेंगे”

(प्रेरितों के काम 9:15–16)।

प्रेरितों के काम 9 में पौलुस के मन फिराव से लेकर प्रेरितों के काम की पुस्तक के अंत तक,

हमें उन सभी बातों का विस्तृत विवरण मिलता है जिन दुःखों को पौलुस ने सहा।

पौलुस के जीवन में जो दुःख आए, वे सताव थे और वे कठिनाइयाँ थीं जो सुसमाचार का प्रचार करने और उसे फैलाने से जुड़ी हुई थीं।

पौलुस को ये बातें सहनी पड़ीं— न इसलिए कि उसे सिद्ध किया जाए, या ताड़ना दी जाए, या उसे दीन किया जाए— परन्तु इसलिए कि वह लोगों तक उद्धार, चंगाई और छुटकारा पहुँचा सके।

पौलुस ने स्वयं स्वीकार किया कि उसके जीवन में इतना अधिक दुःख क्यों आया।

उसने कहा, “यदि हम क्लेश में पड़ते हैं, तो यह तुम्हारे शान्ति और उद्धार के लिये है”

(2 कुरिन्थियों 1:6)।

इसके बाद उसने एशिया में (विशेष रूप से इफिसुस नगर में— प्रेरितों के काम 19:21–41) उस पर आए सतावों का उल्लेख किया:

“क्योंकि हे भाइयों, हम नहीं चाहते कि तुम उस क्लेश से अनजान रहो जो एशिया में हम पर पड़ा, कि हम अति भारी रीति से दबाए गए, यहाँ तक कि जीवन से भी हाथ धो बैठने की आशा न रही”

(2 कुरिन्थियों 1:8)।

अपनी शहादत से कुछ समय पहले, पौलुस ने जेल से अपने विश्वास में पुत्र तीमुथियुस को एक पत्र लिखा। उसने तीमुथियुस से कहा:

“यही मेरा सुसमाचार है, जिसके कारण मैं यहाँ तक दुःख उठाता हूँ कि अपराधी की नाईं जंजीरों में बाँधा गया हूँ;

परन्तु परमेश्वर का वचन बँधा नहीं है। इसी कारण मैं चुने हुओं के लिये सब कुछ सह लेता हूँ, ताकि वे भी वह उद्धार प्राप्त करें जो मसीह यीशु में है, और उसके साथ अनन्त महिमा भी”

(2 तीमुथियुस 2:8–10)।

पौलुस दुःख उठा रहा था क्योंकि वह सुसमाचार का प्रचार कर रहा था, और वह इन कठिनाइयों को सहने के लिए तैयार था ताकि लोग यीशु मसीह के द्वारा मिलने वाले उद्धार के विषय में सुन सकें।

पौलुस के जीवन में जो दुःख आए, वे अपने-आप में कोई उद्देश्य नहीं थे, बल्कि एक उद्देश्य तक पहुँचने का साधन थे। पौलुस ने ऐसा दुःख नहीं सहा जो केवल परमेश्वर को ही ज्ञात किसी सार्वभौमिक उद्देश्य के लिए हो। उसने दुःख इसलिए सहा क्योंकि वह अधिक से अधिक लोगों तक उद्धार का शुभ समाचार पहुँचाना चाहता था।

कुछ लोगों के जीवन पर बुलाहट ऐसी हो सकती है कि उन्हें पौलुस की तरह सुसमाचार का प्रचार करने के लिए असाधारण परिस्थितियों से होकर गुजरना पड़े। परन्तु वह दुःख परमेश्वर द्वारा रचा या नियोजित नहीं होता।

पौलुस ने कुलुस्सियों को भी लिखा:

“अब भी मैं तुम्हारे लिये अपने दुःखों में आनन्द करता हूँ, और मसीह के क्लेशों में से जो मेरी ओर से अभी बाकी हैं, उन्हें उसकी देह अर्थात कलीसिया के लिये अपने शरीर में पूरा करता हूँ”

(कुलुस्सियों 1:24)।

पौलुस के इस कथन में कुछ मुख्य बातों पर ध्यान दीजिए। पौलुस ने कहा कि वह कुलुस्सियों के लिये दुःख उठाता है।

उसने उनके लिये क्या दुःख सहा?

सताव और वे कठिनाइयाँ जो उसे यीशु के संदेश का प्रचार करते समय झेलनी पड़ीं।

पौलुस ने कहा कि वह मसीह के उन क्लेशों को सह रहा है जो अभी बाकी थे।

मसीह के वे दुःख, जो उसने सलीब पर हमारे पापों, हमारी बीमारियों और हमारे दण्ड को अपने ऊपर लेकर सहन किए—वे केवल उसी के लिए थे, और वे तब पूरे हो गए जब वह मरे हुओं में से जी उठा।

मसीह के जिन दुःखों में पौलुस या हम में से कोई भी सहभागी हो सकता है, वे केवल सताव और कठिनाइयाँ हैं जो सुसमाचार का प्रचार करते समय आती हैं।

याद रखिए, यीशु ने कहा था कि वह मसीहियों पर होने वाले सताव को उसी पर होने वाला सताव मानता है, क्योंकि हम उसकी देह हैं।

पौलुस के शरीर में काँटा

पौलुस के दुःखों पर हमारी चर्चा हमें बाइबल के सबसे अधिक विवादित विषयों में से एक तक ले जाती है— पौलुस के शरीर में काँटा:

"और इसलिए कि मैं इन प्रगटियों की अधिकता के कारण अत्यधिक घमण्ड न करूँ, मेरे शरीर में एक काँटा दिया गया, अर्थात शैतान का एक दूत, जो मुझे मुक्के मारे, ताकि मैं अत्यधिक घमण्ड न करूँ"

(2 कुरिन्थियों 12:7)।

बहुत-से लोग यह मानते हैं कि पौलुस के शरीर में यह काँटा परमेश्वर द्वारा भेजी गई कोई बीमारी थी, जिसका उद्देश्य पौलुस को दीन बनाए रखना था। परन्तु यह पद स्वयं स्पष्ट रूप से बताता है कि पौलुस के शरीर में काँटा शैतान का दूत था। नए नियम की मूल भाषा यूनानी में "दूत" के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है, वह *अग्गेलोस* है। *अग्गेलोस* शब्द पवित्रशास्त्र में 188 बार आता है और इसका अर्थ हर बार किसी "प्राणी" या "व्यक्तित्व" से होता है।

इसका अर्थ कभी भी "बीमारी" नहीं होता।

"काँटा" शब्द का उपयोग पुराने नियम और नए नियम दोनों में शाब्दिक और रूपक दोनों अर्थों में हुआ है। कुछ स्थानों पर यह वास्तविक काँटे के लिए प्रयोग हुआ है, और अन्य स्थानों पर

कठिनाई उत्पन्न करने वाले लोगों के लिए (गिनती 33:55; यहोशू 23:13; न्यायियों 2:3)।

पौलुस ने स्पष्ट कहा कि यह "दूत" या "स्वर्गदूत" परमेश्वर से नहीं, बल्कि शैतान की ओर से था। संदर्भ से यह स्पष्ट है कि यह काँटा शैतान की ओर से भेजा गया एक परेशान करने वाला प्राणी था, जो पौलुस को सताने आया था।

पौलुस हमें बताता है कि उसने तीन बार प्रभु से विनती की कि वह इस काँटे को उससे दूर कर दे।

प्रभु का उत्तर था:

“मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है, क्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है।”

इसके उत्तर में पौलुस ने कहा, “इसलिये मैं बहुत ही आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूँगा, कि मसीह की सामर्थ मुझ पर छाई रहे”

(2 कुरिन्थियों 12:9)।

पौलुस ने इस दूत के विरोध को “निर्बलता” कहा।

अब प्रश्न यह है— निर्बलता वास्तव में क्या है?

कुछ लोग कहते हैं कि यह कोई आँखों की बीमारी थी जिसे परमेश्वर ने चंगा करने से मना कर दिया। परन्तु हमें बाइबल पढ़ने का एक मूल सिद्धान्त नहीं भूलना चाहिए— पवित्रशास्त्र को ही पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने देनी चाहिए।

“शरीर में काँटा” वाले पद से कुछ ही पद पहले, पौलुस स्वयं विस्तार से उन निर्बलताओं की सूची देता है जिन्हें उसने सहा था:

“क्या वे मसीह के सेवक हैं?

(मैं मूर्ख की नाईं बोलता हूँ) मैं उनसे बढ़कर हूँ— अधिक परिश्रमों में, कोड़ों में अत्यधिक, बार-बार कैद में, बार-बार मृत्यु के खतरे में। यहूदियों से पाँच बार उनतालीस-उनतालीस कोड़े खाए।

तीन बार बेंतों से पीटा गया, एक बार पत्थरवाह किया गया, तीन बार जहाज़ टूटे, एक रात और एक दिन समुद्र में बिताया।

बार-बार यात्राओं में, नदियों के खतरों में, डाकुओं के खतरों में, अपने ही जाति वालों से खतरों में, अन्यजातियों से खतरों में, नगरों में खतरों में, जंगलों में खतरों में, समुद्र में खतरों में, झूठे भाइयों के बीच खतरों में; परिश्रम और कष्ट में, बार-बार जागते रहने में, भूख और प्यास में, बार-बार उपवास में, सर्दी और नंगाई में।

इन सब बातों के अतिरिक्त, प्रतिदिन सब कलीसियाओं की चिन्ता मुझ पर रहती है।

कौन निर्बल है, और मैं निर्बल नहीं?

कौन ठोकर खाता है, और मैं जलता नहीं?

यदि मुझे घमण्ड करना ही है, तो मैं अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूँगा"

(2 कुरिन्थियों 11:23–30)।

ध्यान दीजिए—

पौलुस ने अपनी निर्बलताओं की सूची में बीमारी या रोग का कहीं उल्लेख नहीं किया।

जो लोग यह मानते हैं कि पौलुस का काँटा आँखों की बीमारी था, वे अक्सर गलातियों 4:15 का हवाला देते हैं:

"तब वह धन्यता कहाँ रही जिसकी तुम बात करते थे?

मैं तुम्हारी गवाही देता हूँ कि यदि हो सकता, तो तुम अपनी आँखें निकालकर

मुझे दे देते।"

वे कहते हैं कि पौलुस ने यह इसलिए कहा क्योंकि गलातिया के लोग उसकी गंभीर आँखों की बीमारी से उसे बचाने के लिए इतनी दूर तक जाने को तैयार थे। गलातिया, एशिया माइनर का एक प्रान्त था। गलातिया के लुस्त्रा नगर में, पौलुस को सुसमाचार का प्रचार करने के कारण

पत्थरवाह किया गया और मरा हुआ समझकर छोड़ दिया गया।

इस भयंकर पत्थरवाह के बावजूद, पौलुस उठा, अपने सहकर्मी बरनबास के साथ गया, और अगले दिन लगभग 15 मील पैदल चलकर दर्बे नगर पहुँचा।

इसके बाद वह फिर लुस्त्रा और दो अन्य नगरों में जाकर सुसमाचार का प्रचार करने लगा

(प्रेरितों के काम 14:19–21)।

जब पौलुस इन नगरों में प्रचार कर रहा था, तो वह अभी-अभी एक भयानक पत्थरवाह से होकर निकला था। यद्यपि वह उठा लिया गया था, फिर भी उसके शरीर पर नील, घाव और कटाव के स्पष्ट निशान मौजूद थे।

पौलुस ने स्वयं कहा:

"अब से कोई मुझे कष्ट न दे, क्योंकि मैं अपने शरीर पर प्रभु यीशु के चिह्न ढोए फिरता हूँ—वे घाव, वे निशान, और सताव के बाहरी प्रमाण जो यह दर्शाते हैं कि मैं उसका हूँ"

(गलातियों 6:17)।

पौलुस को जो आँखों की परेशानी हुई, वह किसी बीमारी के कारण नहीं, बल्कि हाल ही में हुए उस भयानक पत्थरवाह का परिणाम थी।

अब तक आप शायद यह सोच रहे हों: "ठीक है, काँटा चाहे जो भी रहा हो, परन्तु परमेश्वर ने ही पौलुस को दीन बनाए रखने के लिए उसे दिया होगा।"

इस विचार में कई समस्याएँ हैं।

पहली बात— बाइबल स्पष्ट रूप से कहती है कि वह काँटा परमेश्वर से नहीं, बल्कि शैतान से आया था।

दूसरी बात— 2 कुरिन्थियों 12:7 यह कहता है कि वह काँटा पौलुस को उत्कृष्ट ठहराए जाने से रोकने के लिए था, न कि उसे घमण्ड करने से रोकने के लिए।

अब इस बात को थोड़ा और गहराई से समझते हैं। पौलुस को परमेश्वर से अद्भुत और महान प्रकाशन प्राप्त हुए थे (2 कुरिन्थियों 12:1–4)।

शैतान नहीं चाहता था कि पौलुस द्वारा प्राप्त ये प्रकाशन लोगों द्वारा स्वीकार किए जाएँ।

इसलिए उसने एक दुष्ट स्वर्गदूत— एक पतित स्वर्गदूत, एक दानव— को पौलुस को सताने के लिए भेजा।

यह पूरी तरह उस विवरण से मेल खाता है जो हमें प्रेरितों के काम की पुस्तक में मिलता है।

पौलुस किसी नगर में जाता, सुसमाचार का प्रचार करता, फिर कोई व्यक्ति या शक्ति भीड़ को भड़काती, और परिणामस्वरूप पौलुस पर हमला होता, उसे जेल में डाला जाता, या नगर से बाहर निकाल दिया जाता (प्रेरितों के काम 13:45; 14:2–6; 19:21–41)।

शैतान सदा जीवन की कठिनाइयों के द्वारा परमेश्वर के वचन को चुराने आता है।

(हमने अध्याय 3 में शैतान के कार्य करने के तरीके पर चर्चा की है।)

पौलुस ने कहा कि वह काँटा शैतान से आया "ताकि मैं अत्यधिक उत्कृष्ट न ठहरूँ।"

यूनानी भाषा में "उत्कृष्ट" शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है— *हूपर* जिसका अर्थ है "ऊपर", और *आइरो* जिसका अर्थ है "उठाना।"

परमेश्वर के वचन से प्राप्त ज्ञान किसी को भी— यहाँ तक कि पौलुस को भी— जीवन की कठिनाइयों और चुनौतियों से ऊपर उठा सकता है। शैतान ने पौलुस को ऊपर उठने से रोकने के लिए, उसे विजयी होने से रोकने के लिए, शरीर में काँटे के द्वारा परमेश्वर के वचन को चुराने का प्रयास किया।

परन्तु शैतान का यह प्रयास असफल रहा। पौलुस ने जिन अनेक कठिनाइयों का सामना किया,

उन्हें उसने "क्षणिक और हल्का क्लेश" कहा। वे उसे दबा न सकीं। उसने कहा कि वह देखी जाने वाली बातों पर नहीं, बल्कि न देखी जाने वाली बातों पर दृष्टि लगाए रखता है

(2 कुरिन्थियों 4:17–18)।

परमेश्वर के वचन पर ध्यान केंद्रित करके— जो परमेश्वर की अदृश्य सामर्थ और उसकी व्यवस्था को प्रकट करता है— पौलुस अपने जीवन की अनेक परीक्षाओं से ऊपर उठा।

पौलुस की अपनी गवाही यह थी:

"मेरा परमेश्वर का अनुग्रह मेरे लिये पर्याप्त है।

उसकी सामर्थ मेरी निर्बलता में सिद्ध होती है"

(2 कुरिन्थियों 12:9)।

कई लोगों ने मुझसे पूछा है:

"यदि पौलुस का काँटा शैतान का दूत था, तो जब पौलुस ने उसे हटाने के लिए प्रार्थना की,

तो परमेश्वर ने उसे क्यों नहीं हटा दिया?"

जब पौलुस ने परमेश्वर से काँटा हटाने के लिए कहा, तो वह परमेश्वर से ऐसी बात माँग रहा था जिसका परमेश्वर ने कभी वादा नहीं किया। परमेश्वर ने इस समय शैतान को हटा देने का

कोई वादा नहीं किया है। बाइबल कहती है कि शैतान इस संसार का देवता है और यीशु के पुनः आने तक वह अपनी गतिविधियाँ करता रहेगा। उस समय तक, परमेश्वर हमें यह बताता है कि हमारा बचाव क्या है— शैतान का सामना करना।

"इसलिये परमेश्वर के आधीन हो जाओ; शैतान का विरोध करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग जाएगा" (याकूब 4:7)।

परमेश्वर हमें यह भी बताता है कि उसका अनुग्रह हमारे लिए और हमारी ओर से पर्याप्त है ताकि शैतान जो कुछ भी हमारे मार्ग में लाए, हम उसका सामना कर सकें।

क्या दुःख के द्वारा सिद्ध और शुद्ध किया जाना?

मसीही दुःख की धारणा को अक्सर गलत समझ लिया जाता है, क्योंकि बहुत-से लोग यह मानते हैं कि परमेश्वर हमें सिखाने, सिद्ध करने और शुद्ध करने के लिए कठिनाइयों को सहने देता है। कभी-कभी मसीही लोग इस्राएलियों के जंगल के अनुभव को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करते हैं और कहते हैं कि यह दुःख प्रभु द्वारा ठहराया गया था ताकि उसकी प्रजा बढ़े और परिपक्व हो। परन्तु जब हम उनके इतिहास का अध्ययन करते हैं, तो हम पाते हैं कि इस्राएलियों ने प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश करने से इनकार कर दिया और अपने विद्रोह तथा अविश्वास के कारण उन्हें चालीस वर्ष जंगल में भटकना पड़ा (गिनती 14:22–35)। उनका जंगल का सफर किसी विशेष उद्देश्य के लिए परमेश्वर द्वारा वहाँ ले जाने का परिणाम नहीं था। वास्तव में, बाइबल इस्राएल के उस अनुभव की प्रशंसा नहीं करती, बल्कि हमें चेतावनी देती है कि न तो हम उनके उदाहरण का अनुसरण करें और न ही उनके अनुभव को दोहराएँ (इब्रानियों 3:17–19; 4:1–2, 11)।

परमेश्वर हमें अपने आत्मा के द्वारा, अपने वचन के माध्यम से सिखाता और सिद्ध करता है, न कि दुःख या क्लेश भेजकर या उन्हें सहने देकर। पवित्र आत्मा कलीसिया का शिक्षक है (यूहन्ना 14:26) और उसका शिक्षण-उपकरण परमेश्वर का वचन है (इफिसियों 6:17)। "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता में शिक्षा देने के लिये लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने और हर एक भले काम के लिये तत्पर किया जाए" (2 तीमुथियुस 3:16–17)। परमेश्वर ने कलीसिया को सेवकाई के वरदान दिए हैं—प्रेरित, भविष्यवक्ता, सुसमाचार प्रचारक, पास्टर और शिक्षक—"ताकि पवित्र लोग सिद्ध किए जाएँ" (इफिसियों 4:11–12)। जब ये सेवकाई-वरदान वचन का प्रचार और शिक्षा देते हैं, तो पवित्र आत्मा उसी वचन के द्वारा संतों को सिद्ध या परिपक्व करता है।

परमेश्वर हमें अपने वचन के द्वारा शुद्ध करता है। "हे पतियों, अपनी पत्नियों से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिये दे दिया, ताकि वह उसे वचन के द्वारा जल के स्नान से पवित्र करके शुद्ध करे, और उसे अपने लिये एक ऐसी महिमामय कलीसिया ठहराए जिसमें न दाग हो, न झुर्री, न ऐसी कोई बात, बल्कि वह पवित्र और निर्दोष हो" (इफिसियों 5:25–27)। यीशु ने अपने चेलों से कहा, "अब तुम उस वचन के कारण जो मैंने तुम से कहा है, शुद्ध हो" (यूहन्ना 15:3)। ध्यान दीजिए कि पद 2 क्या कहता है: "जो डाल मुझ में होकर फल नहीं लाती, उसे वह काट देता है; और जो फल लाती है, उसे वह छाँटता है, ताकि वह और भी फल लाए।" कुछ मसीही यह मानते हैं कि परमेश्वर हमें दुःख के द्वारा छाँटता या शुद्ध करता है ताकि हम उसके लिये अधिक फलवन्त हों। परन्तु

यीशु पद 3 में स्पष्ट करता है कि उसके अनुयायी उसके वचन के द्वारा शुद्ध किए जाते हैं। "छाँटना" और "शुद्ध करना"—ये दोनों शब्द यूनानी में एक ही शब्द हैं। यीशु हमें अपने वचन के द्वारा शुद्ध करता है।

इब्रानियों 5:8 का भी कभी-कभी हवाला दिया जाता है ताकि यह सिद्ध किया जा सके कि यीशु ने दुःख के द्वारा आज्ञाकारिता सीखी और इसलिए हमें भी दुःख के द्वारा सीखने की अपेक्षा करनी चाहिए। वहाँ लिखा है, "यद्यपि वह पुत्र था, तौभी उसने दुःख उठाकर आज्ञाकारिता सीखी।" इस पद का यह अर्थ नहीं हो सकता कि यीशु पिता की आज्ञा नहीं मानता था और उसे आज्ञाकारी होना सीखने के लिये दुःख सहना पड़ा। बाइबल कहती है कि यीशु हर बात में पिता का पूर्णतः आज्ञाकारी था (यूहन्ना 8:29)। तो फिर इस पद का अर्थ क्या है? इब्रानियों 5:7 हमें इसका संदर्भ देता है: "वह अपने देहधारी जीवन के दिनों में ऊँचे शब्द और आँसुओं के साथ उससे प्रार्थना और विनती करता रहा, जो उसे मृत्यु से बचा सकता था, और उसकी भक्ति के कारण उसकी सुनी गई"। यह पद गतसमनी के बाग में यीशु के अनुभव की ओर संकेत करता है, जहाँ उसने अत्यन्त वेदना के साथ पिता से प्रार्थना की, "हे मेरे पिता, यदि हो सके तो यह कटोरा मुझ से टल जाए; तौभी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो" (मत्ती 26:39)।

बाइबल कहती है कि यीशु ने अपनी मनुष्यता में हर बात में हमारी नाईं परीक्षा झेली, फिर भी वह निष्पाप रहा। जैसे-जैसे उसकी क्रूस-विधा का समय निकट आता गया और वह आगे आने वाले भयानक दुःखों से भली-भाँति अवगत था, उसके सामने यह परीक्षा थी कि वह परमेश्वर की इच्छा को छोड़ दे और क्रूस पर जाने से इनकार कर दे। परन्तु उसने पिता की इच्छा के अधीन होकर उस परीक्षा पर जय पाई। इसी संदर्भ में बाइबल कहती है कि यीशु ने जो दुःख उठाए, उनके द्वारा उसने आज्ञाकारिता सीखी। अर्थात, यीशु ने—एक मनुष्य के रूप में—यह अनुभव किया कि अत्यन्त मूल्य चुकाकर, यहाँ तक कि स्वयं को महान दुःख में डालकर भी, परमेश्वर की आज्ञा मानना क्या होता है। इब्रानियों 5:8 के अन्य अनुवाद इस बात को और स्पष्ट करते हैं: "यद्यपि वह पुत्र था, फिर भी उसने जो कुछ सहा उसके द्वारा आज्ञाकारिता का अर्थ सिद्ध किया"। बेसिक इंग्लिश न्यू टेस्टामेंट कहता है, "जिस पीड़ा से वह होकर गुज़रा, उसके द्वारा उसे यह ज्ञान हुआ कि परमेश्वर की आज्ञा के अधीन होना क्या है।"

यीशु का जीवन हमारे लिये एक उदाहरण है कि हमें दुःख को कैसे देखना और उसका सामना कैसे करना है। जैसे यीशु ने महान मूल्य चुकाकर पिता की आज्ञा मानी, वैसे ही हमें भी अपने स्वर्गीय पिता की आज्ञा माननी है—भले ही इसके लिये हमें अपनी इच्छाओं का त्याग करना पड़े। जब यीशु अपने सताने वालों के हाथों दुःख उठाता रहा, तो उसने प्रेम के साथ उत्तर दिया और अपने आप को पिता को सौंप दिया। "इसी के लिये तो तुम बुलाए गए हो, क्योंकि मसीह ने भी तुम्हारे लिये दुःख उठाया और तुम्हें एक आदर्श छोड़ गया कि तुम उसके चिन्हों पर चलो। उसने न तो पाप किया और न उसके मुँह से छल की बात निकली। जब लोग उसे गालियाँ देते थे, तो वह बदले में गाली नहीं देता था; और दुःख उठाते समय वह धमकी नहीं देता था, परन्तु अपने आप को उस पर छोड़ देता था जो ठीक-ठीक न्याय करता है" (1 पतरस 2:21–23)। जब हम सताव सहते हैं, तो हमें भी यीशु की तरह पवित्र आत्मा की सहायता पर निर्भर रहकर प्रतिक्रिया देनी है।

संभव है आपने लोगों को यह कहते सुना हो कि जब हम बीमारी और पीड़ा, खराब वैवाहिक जीवन, अभाव और जीवन की अन्य नकारात्मक परिस्थितियाँ सहते हैं, तो यही हमारे "उठाने के क्रूस" हैं। परन्तु मनुष्य को बीमारी, पीड़ा और पाप से क्षतिग्रस्त पृथ्वी के अनेक प्रभावों का क्रूस उठाने की कोई आवश्यकता नहीं है। यीशु ने बीमारी, पीड़ा और पाप के सारे शाप को अपने क्रूस पर उठा लिया, ताकि हमें उन्हें उठाना न पड़े।

बाइबल यह अवश्य कहती है कि हमें अपना क्रूस उठाना है: "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो वह अपने आप से इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे हो ले" (लूका 9:23)। परन्तु वह क्रूस क्या है जिसे हमें उठाने के लिये कहा गया है? यीशु के लिये उसका क्रूस—अन्य बातों के साथ—पिता की इच्छा के प्रति पूर्ण समर्पण का स्थान था। उसी प्रकार, आपका क्रूस आपके जीवन के लिये परमेश्वर की इच्छा के प्रति पूर्ण समर्पण और आज्ञाकारिता का स्थान है। जब यीशु ने कहा, "प्रतिदिन अपना क्रूस उठाओ," तो वह बीमारी, पीड़ा और कष्ट की बात नहीं कर रहा था। वह अपने चेलों से कह रहा था, "यदि तुम मेरे पीछे चलना चाहते हो, तो अपनी इच्छा और अपने मार्ग से इन्कार करो और अपने जीवन के हर क्षेत्र में प्रतिदिन पिता की इच्छा के प्रति पूर्ण समर्पण को चुनो।"

हम दुःख उठाएँगे

तो फिर क्यों सच्चे, आज्ञाकारी और समर्पित मसीही लोग अक्सर अपने आप को कठिन परिस्थितियों में पाते हैं? इस प्रश्न के कई उत्तर हो सकते हैं, परन्तु इन बातों पर विचार कीजिए। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि पाप से शापित इस पृथ्वी पर जीवन कठिन है। इसका अर्थ यह है कि हम में से कोई भी इस जीवन में अपने गन्तव्य तक पहुँचने के लिये कोई सरल मार्ग नहीं पाता—इसलिये नहीं कि परमेश्वर दुःख भेज रहा है या जानबूझकर उसे होने दे रहा है, बल्कि इसलिये कि हम ऐसे संसार में रहते हैं जो पाप के कारण गहराई से प्रभावित हो चुका है। मार्ग कठिन हो सकता है क्योंकि अपने गन्तव्य तक पहुँचने के लिये केवल एक ही रास्ता होता है, और उस रास्ते में जीवन की अनपेक्षित कठिनाइयाँ भी सम्मिलित होती हैं। इस्राएल के लिये मिस्र से प्रतिज्ञा किए हुए देश तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग सीनै प्रायद्वीप से होकर था—एक सूखा और पहाड़ी क्षेत्र। इस्राएल को उस भूभाग की सभी चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

मार्ग सताव के कारण भी कठिन हो सकता है। शद्रक, मेशक और अबेदनगो को एक दुष्ट राजा ने आग की भट्टी में इसलिए नहीं डलवाया कि परमेश्वर आग के द्वारा उन्हें शुद्ध करना चाहता था, बल्कि इसलिए कि उन्होंने झूठे देवता की पूजा करने से इनकार कर दिया। मार्ग इसलिए भी कठिन हो सकता है क्योंकि जंगल में ऐसे लोग होते हैं जिन्हें हमारी सहायता की आवश्यकता होती है, और हमें उनके पास जाकर उनकी मदद करनी पड़ती है। पौलुस अनेक ऐसे स्थानों पर गया जहाँ उसे बहुत दुःख सहना पड़ा, परन्तु उसने यह इसलिए किया ताकि लोगों को अन्धकार से निकालकर मसीह की ज्योति में ला सके।

मार्ग हमारी अपनी गलत चुनौतियों के कारण भी कठिन हो सकता है। इस्राएल अपने बुरे निर्णयों, अविश्वास और अवज्ञा के कारण जंगल में था। यदि आप अविश्वास और अवज्ञा के कारण किसी जंगल के अनुभव में हैं, तो पश्चाताप करना और वहाँ से बाहर निकलना अपनी प्राथमिकता बनाइए। वर्षों के बुरे निर्णय सामान्यतः एक अच्छे निर्णय से रातों-रात समाप्त नहीं हो जाते। परिस्थितियों को बदलने के लिये समय लगेगा और अच्छे निर्णयों की एक श्रृंखला की आवश्यकता होगी, परन्तु यह प्रयास सार्थक होगा। जब आप अपने जंगल के अनुभव से बाहर निकलते हैं, तो इस बात को स्मरण रखिए: इस्राएल के गलत निर्णय उन्हें जंगल में ले आए, फिर भी उनके निर्णयों के बावजूद परमेश्वर ने अपनी भलाई उन्हें दिखाई। उसने पिता की नाईं उनकी देखभाल की और निरन्तर उनकी आवश्यकताओं को पूरा किया। "जंगल में…तू ने देखा कि यहोवा तेरा परमेश्वर तुझे वैसे ही उठाए फिरता रहा जैसे कोई पिता अपने पुत्र को उठाए फिरता है, उस सारे मार्ग में जब तक तू इस स्थान पर न पहुँचा। यहोवा तेरा परमेश्वर तेरे हाथों के सब कामों में तुझे आशीष देता रहा; इस बड़े जंगल में तेरी

यात्रा पर वह दृष्टि लगाए रहा। इन चालीस वर्षों में यहोवा तेरा परमेश्वर तेरे साथ रहा है, और तुझे किसी वस्तु की घटी नहीं हुई" (व्यवस्थाविवरण 1:31; 2:7)।

हाँ, हम मसीह के लिये दुःख उठाते हैं—नया नियम इस तथ्य को स्पष्ट रूप से सिखाता है। परन्तु मसीहियों के सामने आने वाले दुःख वे सताव और व्यक्तिगत त्याग हैं जो प्रभु के लिये जीवन जीने के निर्णय के परिणामस्वरूप आते हैं। जीवन की नकारात्मक परिस्थितियाँ—जैसे बीमारी, कठिन सम्बन्ध, पीड़ा, हानि और अन्य कठिनाइयाँ—पाप से भरी इस पृथ्वी पर जीवन का हिस्सा हैं और ये चुनौतियाँ सभी लोगों को प्रभावित करती हैं। कठिनाइयाँ और परेशानियाँ पाप से शापित पृथ्वी के जीवन का भाग हैं, परन्तु यह कोई भी दुःख परमेश्वर के हाथ से नहीं आता।

जब हम मसीह के लिये जीवन जीते हुए और सुसमाचार का प्रचार करते हुए दुःख का अनुभव करते हैं, तो बाइबल यह प्रतिज्ञा करती है कि उन समयों में परमेश्वर सामर्थ, बल और छुटकारा प्रदान करेगा। प्रेरित पौलुस ने—हर परिस्थिति में—परमेश्वर की सहायता और सुरक्षा की इस प्रतिज्ञा को रोम के मसीहियों को लिखे अपने शब्दों में इस प्रकार व्यक्त किया: "कौन हमें मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या सताव, या अकाल, या नंगाई, या खतरा, या तलवार? जैसा लिखा है, तेरे लिये हम दिन भर घात किए जाते हैं; हम वध होने वाली भेड़ों के समान गिने जाते हैं। परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं" (रोमियों 8:35–37)। पौलुस ने यह भी लिखा, "पर तू ने मेरी शिक्षा, चाल-चलन, उद्देश्य, विश्वास, धीरज, प्रेम, सहनशीलता, और वे सताव और क्लेश भली-भाँति जाने हैं जो अन्ताकिया, इकुनियुम और लुस्त्रा में मुझ पर पड़े; मैंने कैसे-कैसे सताव सहे; परन्तु प्रभु ने मुझे उन सब से छुड़ा लिया" (2 तीमुथियुस 3:10–11)।

8

हाँ, लेकिन ताड़ना, अनुशासन या सुधार के बारे में क्या?

“ठीक है, मान लेते हैं कि परमेश्वर हमें सिद्ध करने के लिए न तो हमारे कंधों पर सलीब रखता है और न ही हमें दुःख सहने के लिए विवश करता है, परन्तु उसकी सुधार और अनुशासन का क्या? क्या वह कभी हमारे गलत कामों के कारण हमें दण्ड देने के लिए परेशानियाँ नहीं भेजता, ताकि हम बार-बार वही गलतियाँ न करें?” इन प्रश्नों का उत्तर हम कैसे दें?

हाँ, बाइबल यह अवश्य कहती है कि परमेश्वर अपने बच्चों की सुधि लेता है और उन्हें अनुशासित करता है। पवित्रशास्त्र में इसके लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है, वह है “ताड़ना”—एक ऐसा शब्द और अवधारणा जिसे अक्सर गलत समझ लिया जाता है। बहुत-से लोग यह मानते हैं कि प्रभु की ताड़ना का अर्थ यह है कि वह हमारे जीवन में अनुशासन और सुधार लाने के लिए दुर्घटनाएँ, कैंसर जैसी बीमारियाँ, या अन्य दुखद परिस्थितियाँ भेजता है। लोग इस प्रकार की बातें कहते और मानते हैं: “मेरा एक्सीडेंट हो गया, अवश्य ही प्रभु मुझे ताड़ना दे रहा है,” या “मेरे प्रिय को कैंसर हो गया है, प्रभु उसे ताड़ना दे रहा होगा।” परन्तु नए नियम में ताड़ना का अर्थ यह नहीं है।

नए नियम में “ताड़ना” के लिए जो यूनानी शब्द प्रयोग हुआ है, वह *पाइदेइया* है। निम्नलिखित पदों में जहाँ-जहाँ मूल भाषा में *पाइदेइया* शब्द आया है, वहीं इसका वास्तविक अर्थ स्पष्ट होता है। प्रेरितों के काम 7:22 में लिखा है कि “मूसा मिस्रियों की सारी विद्या में शिक्षित हुआ।” इफिसियों 6:4 में कहा गया है कि पिता अपने बच्चों को “प्रभु की शिक्षा और चेतावनी में” पालें। 2 तीमुथियुस 3:16 में लिखा है कि सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र उपदेश, समझाने, सुधारने और धार्मिकता में शिक्षा देने के लिए लाभदायक है। तीतुस 2:12 कहता है कि अनुग्रह हमें सिखाता है कि हम अधार्मिकता और सांसारिक अभिलाषाओं से इन्कार करके संयम, धार्मिकता और

भक्तिपूर्ण जीवन जिएँ। इन पदों से यह स्पष्ट है कि ताड़ना का अर्थ है—शिक्षा देना, सिखाना, पोषण करना और प्रशिक्षण देना—न कि दुर्घटनाएँ, बीमारियाँ या त्रासदियाँ भेजना। परमेश्वर कठिन परिस्थितियाँ भेजकर हमें अनुशासित नहीं करता; वह अपने वचन के द्वारा हमें अनुशासित और ताड़ित करता है।

यह स्मरण रखिए कि यीशु ही परमेश्वर है और वही हमें परमेश्वर को प्रकट करता है। यीशु परमेश्वर की इच्छा का जीवित और कार्यरत रूप था, इसलिए हम उसके जीवन को देखकर समझ सकते हैं कि परमेश्वर कैसे अनुशासन करता है। जब हम यीशु की पृथ्वी की सेवकाई को देखते हैं, तो हमें एक भी उदाहरण ऐसा नहीं मिलता जहाँ उसने लोगों को सिखाने के लिए उन्हें बीमार किया हो या उनके जीवन में आपदाएँ आने दी हों। जब यीशु किसी के व्यवहार से अप्रसन्न होता था, तो वह उन्हें तुरंत अपने शब्दों के द्वारा बता देता था। यीशु ने लोगों को अपने वचनों के द्वारा ताड़ना दी, अनुशासन किया और सुधार किया। यदि यीशु ने इसी प्रकार लोगों को अनुशासित किया—और यीशु के कार्य हमारे स्वर्गीय पिता के कार्यों को दर्शाते हैं—तो हम यह निश्चय के साथ कह सकते हैं कि पिता भी इसी प्रकार लोगों को अनुशासित और ताड़ित करता है। यीशु ने स्वयं कहा कि वह वही करता है जो वह पिता को करते हुए देखता है।

यीशु के इस पृथ्वी से स्वर्ग में उठाए जाने के लगभग साठ वर्ष बाद, वह पातमुस द्वीप पर निर्वासित अपने शिष्य यूहन्ना को दर्शन में दिखाई दिया। उस समय यीशु ने यूहन्ना को जो बातें बताईं, वही प्रकाशितवाक्य की पुस्तक बनीं। प्रकाशितवाक्य में यीशु ने एशिया माइनर में स्थित सात कलीसियाओं के लिए विशेष निर्देश दिए। इन निर्देशों—जिन्हें प्रायः "पत्रियाँ" कहा जाता है— इन में यीशु की प्रशंसा भी थी और सुधार भी। जब आप इन पत्रियों को पढ़ते हैं, तो आप देखते हैं कि यीशु ने कलीसियाओं और उनके सदस्यों की सुधि अपने वचनों के द्वारा ली।

यीशु ने सातों कलीसियाओं को दिए गए अपने संदेशों का निष्कर्ष इन शब्दों के साथ किया: "जिनसे मैं प्रेम करता हूँ, उन्हें मैं डाँटता और ताड़ना देता हूँ; इसलिए उत्साही हो और मन फिराओ" (प्रकाशितवाक्य 3:19)। डाँटना और ताड़ना देना—दोनों वाचिक निर्देश हैं। डाँटने का अर्थ है गलत को दिखाना, ताड़ना देना या अस्वीकार प्रकट करना; और ताड़ना देने का अर्थ है प्रशिक्षण देना, शिक्षा देना, या निर्देश के द्वारा सुधार और अनुशासन करना। जब यीशु ने यह कहा, तब वह पहले ही उन कलीसियाओं को अपने वचनों के द्वारा डाँट और ताड़ना दे चुका

था। पिता भी हमें अपने वचन के द्वारा डाँटता और ताड़ित करता है। दाऊद ने भजन 39:11 में कहा, "जब तू किसी मनुष्य को अधर्म के कारण डाँटकर सुधारता है।" भजन 94:12 कहता है, "धन्य है वह मनुष्य जिसे तू, हे यहोवा, ताड़ना देता है और अपनी व्यवस्था से सिखाता है।"

जब यीशु ने कहा, "जिनसे मैं प्रेम करता हूँ, उन्हें मैं डाँटता और ताड़ना देता हूँ," तो उसने डाँट और ताड़ना को साथ-साथ रखा, क्योंकि ये एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। डाँट और ताड़ना का उद्देश्य अस्वीकार्य व्यवहारों की पहचान करना और उन्हें प्रकट करना है, ताकि उन्हें सुधारा जा सके। परमेश्वर की ताड़ना का बुरी परिस्थितियों से कोई सम्बन्ध नहीं है। ताड़ना का अर्थ है शिक्षा के उद्देश्य से दिया गया अनुशासन, और यह शब्दों के द्वारा दिया जाता है। जहाँ शिक्षा होती है, वहाँ शब्दों का होना आवश्यक है।

इसे अपने दैनिक जीवन में सोचिए। यदि आपका कोई बच्चा गलत व्यवहार करे और आप उसे थप्पड़ मार दें, परन्तु यह न बताएँ कि उसने ऐसा क्या किया जिसके कारण आपने उसे मारा, तो क्या वह कुछ सीखेगा? क्या यह प्रभावी पालन-पोषण होगा? बिल्कुल नहीं। फिर भी बहुत-से लोग परमेश्वर पर यह आरोप लगाते हैं कि वह ऐसे माता-पिता की तरह व्यवहार करता है जो बिना किसी स्पष्ट कारण के अपने बच्चों को दण्ड देता है। जब कोई परेशानी आती है, तो वे मान लेते हैं कि प्रभु उन्हें ताड़ना दे रहा है। उन्हें अक्सर यह भी स्पष्ट नहीं होता कि उन्होंने क्या गलत किया या उन्हें क्या बदलना चाहिए, परन्तु वे यह निश्चय मान लेते हैं कि प्रभु किसी ऐसे सार्वभौमिक कारण से—जो केवल उसी को ज्ञात है—उन्हें अनुशासित कर रहा है। अच्छे सांसारिक माता-पिता जब अपने बच्चों को ताड़ना या अनुशासन देते हैं, तो वे उन्हें बताते हैं कि उन्होंने क्या गलत किया और उसे कैसे सुधारना है। दूसरे शब्दों में, वे उन्हें प्रशिक्षित और शिक्षित करते हैं। ठीक इसी प्रकार परमेश्वर, हमारा पिता, हमारे साथ व्यवहार करता है।

क्या परमेश्वर हमें दण्ड देता है?

कुछ लोग कहते हैं, "हाँ, परन्तु कभी-कभी परमेश्वर को हमें दण्ड देना पड़ता है, जैसे कोई मनुष्य पिता अपने अवज्ञाकारी बच्चे को मारता है।" इस विश्वास को मानने वाले लोग प्रायः इब्रानियों 12:5–7 का हवाला देते हैं: "और तुम उस उपदेश को भूल गए हो जो तुम से पुत्रों

की नाईं कहा जाता है—हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को तुच्छ न जान, और जब वह तुझे डाँटे तो हियाव न छोड़; क्योंकि जिसे प्रभु प्रेम करता है, उसकी ताड़ना करता है, और जिस पुत्र को वह ग्रहण करता है, उसे कोड़े भी लगाता है। यदि तुम ताड़ना सहते हो, तो परमेश्वर तुम्हें पुत्रों की नाईं समझता है; क्योंकि ऐसा कौन-सा पुत्र है जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता?" परन्तु एक बच्चे को पीछे से थप्पड़ मारना और किसी को कैंसर हो जाना या उसका घर जल जाना—इन दोनों में बहुत बड़ा अन्तर है। कोई भी समझदार सांसारिक पिता अपने बच्चे को सबक सिखाने के लिए "कैंसर" या "कार दुर्घटना" से दण्ड नहीं देगा। यीशु ने हमें सिखाया कि हमारा स्वर्गीय पिता सबसे उत्तम सांसारिक पिता से भी उत्तम है।

बाइबल के हर पद की तरह, ताड़ना से सम्बन्धित इस पद को भी हमें उसके संदर्भ में पढ़ना चाहिए। यह इब्रानियों की पत्री का भाग है—एक ऐसा पत्र जो उन यहूदी मसीहियों को लिखा गया था जो अपने विश्वास के कारण सताव सह रहे थे और दबाव में थक गए थे। उनमें से कुछ यहूदी धर्म में लौट गए थे और मसीह तथा उसके बलिदान को ठुकरा चुके थे, और कुछ अन्य लोग भी ऐसा करने पर विचार कर रहे थे। यह पत्र पाठकों को सुधार और शिक्षा देने तथा उन्हें यीशु के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से लिखा गया था। लेखक कई बार यह कहता है, "जो परमेश्वर तुम से कह रहा है, उसे सुनो। पीछे न हटो।" पत्र के अन्त में लेखक लिखता है, "हे भाइयो, मैं तुम से बिनती करता हूँ कि मेरे इस उपदेश के वचन को सह लो, क्योंकि मैंने तुम्हें थोड़े ही शब्दों में लिखा है" (इब्रानियों 13:22)। "उपदेश देना" का अर्थ है चेतावनी देना, दोष बताना या सुधार करना—और ये सब कार्य शब्दों के द्वारा होते हैं, न कि दुर्घटनाओं और त्रासदियों के द्वारा। दूसरे शब्दों में, लेखक पाठकों से आग्रह करता है कि वे पत्र में दी गई अनुशासन, सुधार और शिक्षा—अर्थात ताड़ना—को स्वीकार करें।

अब इब्रानियों 12:5–7 के कुछ मुख्य बिन्दुओं पर ध्यान दें। पद 5 कहता है कि पाठक प्रभु की ताड़ना को तुच्छ न जानें। स्मरण रखिए, "ताड़ना" के लिए प्रयुक्त शब्द *पाइदेइया* है, जिसे नए नियम में अन्य स्थानों पर "शिक्षा" या "प्रशिक्षण" के रूप में अनुवादित किया गया है। यदि हम पूरा पद पढ़ते हैं, तो हम देखते हैं कि वही पद ताड़ना की परिभाषा भी देता है: "हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को तुच्छ न जान, और जब वह तुझे डाँटे तो हियाव न छोड़।" डाँटना शब्दों के द्वारा होता है। मूल यूनानी में "तुच्छ जानना" का अर्थ है "हल्के में लेना"—अर्थात, "हे मेरे पुत्र, प्रभु के अनुशासन को हल्के में न ले" । आप सुधार और शिक्षा के शब्दों को हल्के में ले सकते हैं या अनदेखा कर सकते हैं, परन्तु कोई व्यक्ति कार दुर्घटना या कैंसर को कैसे "अनदेखा" कर सकता है?

पद 6 कहता है कि प्रभु अपने पुत्रों की ताड़ना करता है और उन्हें कोड़े भी लगाता है। "कोड़े लगाना" शब्द का अर्थ है "मारना" या "कोड़े से पीटना," और नए नियम में इसका उपयोग शाब्दिक और रूपक—दोनों अर्थों में हुआ है। यहाँ यह शब्द रूपक रूप में प्रयुक्त हुआ है। परमेश्वर हमें अपने वचन के द्वारा "कोड़े लगाता," "मारता," या "झकझोरता" है। यिर्मयाह 23:29 में लिखा है, "यहोवा कहता है, क्या मेरा वचन आग के समान नहीं है? और क्या वह हथौड़े के समान नहीं है जो चट्टान को चूर-चूर कर देता है?" हम में से अधिकतर लोग अपने जीवन में कभी-न-कभी परमेश्वर के वचन से "आहत" हुए हैं। क्या आपने कभी किसी उपदेश में ऐसा पद सुना है जिसने आपके जीवन के किसी क्षेत्र को उजागर कर दिया हो जिसे बदलने की आवश्यकता थी? उस समय उपदेशक के शब्द ऐसे लग सकते हैं मानो उन्होंने हमारी साँस रोक दी हो। यही है—परमेश्वर के वचन के द्वारा ताड़ना या "कोड़े लगना।"

पद 7 में लेखक पाठकों को ताड़ना को सहने के लिए प्रोत्साहित करता है। "सहना" का शाब्दिक अर्थ है "नीचे टिके रहना" या "डटे रहना।" स्मरण रखिए, यह पत्र यहूदी मसीहियों को इसलिए लिखा गया था कि वे जिस सताव का सामना कर रहे थे, उसके बावजूद प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य बने रहें। इस पत्र को प्राप्त करने वालों के पास यह विकल्प था कि वे इसमें दी गई प्रभु की शिक्षा और सुधार को स्वीकार करें या अस्वीकार कर दें। क्योंकि प्रभु की ताड़ना उसके वचन के द्वारा आती है, इसलिए हम उसे स्वीकार या अस्वीकार कर सकते हैं। परन्तु कोई व्यक्ति कार दुर्घटना या कैंसर को "अस्वीकार" नहीं कर सकता।

इब्रानियों 12:8–9 में हमें "ताड़ना" की एक स्पष्ट परिभाषा मिलती है: "यदि तुम्हें उस सुधार का अनुभव नहीं हुआ जो सब पुत्रों को सहना पड़ता है, तो तुम्हारा पुत्र होना ही संदिग्ध ठहरता है। जब हम बालक थे, तो हमारे सांसारिक पिता हमें सुधारते थे और हम उनका आदर करते थे। तो क्या हमें आत्माओं के पिता के अनुशासन के अधीन होकर जीवन नहीं सीखना चाहिए?" । यह अंश ताड़ना को सुधार के रूप में परिभाषित करता है—वैसा सुधार जो पिता अपने पुत्रों को देता है। पद 9 परमेश्वर के अनुशासन की स्पष्ट सीमा निर्धारित करता है, जब वह उसकी तुलना मानव पिता के अनुशासन से करता है। कौन-सा सांसारिक पिता अपने बच्चे को बीमारी या त्रासदियों के द्वारा अनुशासित करेगा? कौन-सा पिता अपने बच्चे को वर्षों तक दुःख में रखेगा और बच्चे को यह भी न बताएगा कि यह सब क्यों हो रहा है? यदि सांसारिक माता-पिता अपने बच्चों के साथ सही व्यवहार करना जानते हैं, तो हमारा स्वर्गीय पिता उनसे कहीं अधिक यह जानता है। यदि आप अपने बच्चे को अनुशासित करने के लिए परेशानियाँ और त्रासदियाँ नहीं लाएँगे, तो परमेश्वर भी ऐसा नहीं करता।

अवज्ञा के परिणाम होते हैं

इन सब बातों में मैं यह नहीं कह रही हूँ कि पाप और अवज्ञा के कोई शारीरिक परिणाम नहीं होते। रोमियों 6:23 कहता है कि पाप की मजदूरी मृत्यु है। जब कोई पाप करता है, तो मृत्यु उसके जीवन में काम करने लगती है। बाइबल यह बहुत स्पष्ट रूप से सिखाती है कि यदि हम शरीर के अनुसार बोते हैं, तो भ्रष्टता काटेंगे (गलातियों 6:8)। यदि हम प्रभु की ताड़ना—अर्थात उसकी शिक्षा और सुधार—का उत्तर नहीं देते, अपने व्यवहार को नहीं सुधारते और उसके वचन की आज्ञा नहीं मानते, तो हमें अपनी अवज्ञा के परिणाम भोगने पड़ेंगे।

इसका एक उदाहरण हमें 1 कुरिन्थियों 11:30–32 में मिलता है, जो नए नियम में एकमात्र स्थान है जहाँ बीमारी का उल्लेख ताड़ना के सन्दर्भ में किया गया है: "इसी कारण तुम में बहुत से निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए हैं। यदि हम अपने आप को जाँचते, तो दण्ड न पाते। परन्तु जब प्रभु हमें दण्ड देता है, तो वह हमें ताड़ना देता है, ताकि हम संसार के साथ दोषी न ठहरें।" यदि हम इस पूरे अंश का अध्ययन करें, तो हम देखते हैं कि पौलुस कुरिन्थुस की कलीसिया को इस बात के लिए डाँट रहा था कि वे प्रभु भोज को किस प्रकार मना रहे थे। कुरिन्थी लोग प्रभु भोज के वास्तविक उद्देश्य को नहीं समझ रहे थे। प्रभु भोज का उद्देश्य यह था कि वह "प्रभु की मृत्यु को तब तक प्रकट और घोषित करता रहे जब तक वह फिर न आए" (1 कुरिन्थियों 11:26)। परन्तु कुरिन्थी इस पवित्र सभा में झगड़ा, मद्यपान और पेटूपन कर रहे थे।

पौलुस ने उनकी इस अवमानना के कारण प्रभु भोज की रीति के विषय में उन्हें फटकारा। पद 27 में उसने कहा: "इसलिये जो कोई इस रोटी को अनुचित रीति से खाए या प्रभु के इस कटोरे में से पीए, वह प्रभु की देह और लहू का अपराधी ठहरेगा।" यूनानी भाषा में "अनुचित रीति से" का अर्थ है "अश्रद्धापूर्वक।" उनकी यह अश्रद्धा और सलीब पर यीशु के बलिदान के महत्व को न पहचानना—इसी के कारण बीमारी और मृत्यु के रूप में न्याय आया: "क्योंकि जो कोई खाता और पीता है और प्रभु की देह को न पहचानकर खाता-पीता है, वह अपने ऊपर दण्ड लाता है" (1 कुरिन्थियों 11:29)।

क्या परमेश्वर ने कुरिन्थियों को ताड़ना देने के लिए उन्हें बीमार किया? नहीं। परमेश्वर किसी को बीमार नहीं करता। यीशु स्वयं हमें यह स्पष्ट रूप से दिखाता है। कुरिन्थियों ने अपनी अश्रद्धा के द्वारा चंगाई और जीवन के स्रोत—मसीह के क्रूस—को तुच्छ जाना। इसके परिणामस्वरूप, उन्होंने मसीह के बलिदान के मूल्य को न पहचानने और न मानने के दुष्परिणामों का अनुभव किया। यह बीमारी और मृत्यु पूरी तरह से रोकी जा सकती थी। पवित्रशास्त्र के अनुसार, कुरिन्थी अपने आप को जाँच सकते थे, पश्चाताप कर सकते थे और उस बीमारी तथा मृत्यु से बच सकते थे जिसका वे अनुभव कर रहे थे: "यदि हम अपने आप को जाँचते, तो दण्ड न पाते" (1 कुरिन्थियों 11:31)।

मनुष्य के पास वास्तव में स्वतंत्र इच्छा है, और हर चुनाव के साथ उसके परिणाम जुड़े होते हैं। जब किसी चुनाव से नकारात्मक परिणाम उत्पन्न हुए, तो परमेश्वर ने बीच में हस्तक्षेप नहीं किया। उसने उन्हें अपने पाप का फल काटने दिया, ताकि वे संसार के साथ दोषी न ठहरें। यह उनके पाप की गम्भीरता को दर्शाता है। अपने कार्यों के द्वारा वे प्रभु की मृत्यु—जो उनके उद्धार का एकमात्र स्रोत थी—उस को तुच्छ ठहरा रहे थे। परमेश्वर ने उन्हें उनके पाप के परिणामों का अनुभव करने दिया, इस आशा में कि वे पश्चाताप की ओर आएँ। यह चित्र उस विचार से बिल्कुल भिन्न है जिसमें कहा जाता है कि परमेश्वर किसी ऐसे सार्वभौमिक उद्देश्य के लिए—जो केवल उसी को ज्ञात हो—हमारे जीवन में बीमारी और बुरी परिस्थितियों की योजना बनाकर हमें ताड़ना देता है।

परमेश्वर हमें सुधारने और शिक्षा देने के लिए अपने वचन के द्वारा ही अनुशासित और ताड़ित करता है। यदि परमेश्वर आपको अनुशासन में ला रहा है, तो आप यह स्पष्ट रूप से जान पाएँगे कि समस्या क्या है और उसे कैसे ठीक करना है—और यह सब उसके वचन के माध्यम से होगा। यह अत्यन्त आवश्यक है कि हमारे पास इस बात की सही समझ हो कि परमेश्वर हमें किस प्रकार ताड़ना देता है, ताकि हम जीवन का सामना इस दृढ़ विश्वास के साथ कर सकें कि परमेश्वर अच्छा है…और अच्छा वास्तव में अच्छा ही होता है।

9

हाँ, लेकिन परमेश्वर की परीक्षाओं के विषय में क्या?

लोग कभी-कभी मुझसे उन परीक्षाओं और कठिनाइयों के विषय में बात करते हैं जिनके बारे में वे मानते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें उनके जीवन में इसलिए भेजा है ताकि उनका विश्वास परखा और दृढ़ किया जाए तथा उन्हें धैर्यवान बनाया जाए। परन्तु सच्चाई यह है कि परीक्षाएँ और कठिनाइयाँ परमेश्वर की ओर से नहीं आतीं। मुझे आपको अध्याय 3 में हुई चर्चा की याद दिलाने दीजिए। परीक्षाएँ और क्लेश पाप से बुरी तरह प्रभावित हुई इस पृथ्वी पर जीवन का हिस्सा हैं, और अंततः उनका स्रोत शैतान है—जो सृष्टि का पहला विद्रोही था। यह भी स्मरण रखिए कि शैतान परीक्षाओं, क्लेशों, दुःखों और सताव के माध्यम से हमारे भीतर से परमेश्वर के वचन को चुराने का प्रयास करता है। यदि इन बातों में से कोई भी बात आपके लिए स्पष्ट न हो, तो इस अध्याय को आगे पढ़ने से पहले अध्याय 3 को फिर से पढ़ना उपयोगी होगा। हाँ, परमेश्वर हमें परखता है, हमें सामर्थ देता है और हमें धैर्य सिखाता है, परन्तु वह यह सब अपने वचन के द्‌वारा और हमारे भीतर निवास करने वाले अपने आत्मा के द्‌वारा करता है।

क्या परीक्षाओं के द्‌वारा सामर्थ मिलती है?

कुछ लोग कहते हैं कि जीवन के तूफ़ान हमें दृढ़ और सामर्थी बनाने के लिए भेजे जाते हैं। मत्ती 7:24–27 में यीशु ने दो घरों का उदाहरण दिया जिन्हें एक भयानक आँधी ने घेर लिया। एक घर आँधी में नष्ट हो गया और दूसरा घर बच गया। वही एक आँधी दोनों घरों पर आई, परन्तु उसका प्रभाव दोनों पर बिल्कुल भिन्न था। यदि आँधियाँ हमें दृढ़ बनाने के लिए होतीं, तो फिर एक घर क्यों गिर गया? जीवन की कठिनाइयाँ अपने आप में हमारे लिए भलाई नहीं लातीं। जीवन की चुनौतियाँ बहुत-से लोगों को—यहाँ तक कि मसीहियों को भी—नष्ट कर देती हैं।

यीशु के अनुसार, जो घर आँधी में स्थिर रहा वह चट्टान पर बना था, और जो गिर गया वह बालू पर बना था। यीशु उस व्यक्ति की तुलना बालू पर बने घर से करता है जो परमेश्वर के वचन को सुनता तो है, परन्तु उसका पालन नहीं करता। ऐसा व्यक्ति जीवन के तूफ़ानों का सामना नहीं कर सकता। इसके विपरीत, जो व्यक्ति परमेश्वर के वचन को सुनता और उसका पालन करता है, वह उस घर के समान है जो चट्टान पर बना हो और आँधी का सामना करने में पूर्णतः सक्षम हो।

परमेश्वर हमें दृढ़ बनाने के लिए हमारे जीवन में तूफ़ान—अर्थात विनाशकारी परिस्थितियाँ—नहीं भेजता। जीवन की परीक्षाओं और क्लेशों को सहने की सामर्थ परमेश्वर के वचन को सुनने और उसे करने से आती है। नीतिवचन 24:3 कहता है, "बुद्धि से घर बनता है, और समझ से वह स्थिर रहता है।" जीवन के तूफ़ानों का सामना करने के लिए बुद्धि और समझ परमेश्वर के वचन से ही मिलती है। कठिन समय में जय पाने की सामर्थ भी परमेश्वर के वचन से आती है। "मैं तुम्हें, हे जवानों, इसलिए लिखता हूँ कि तुम बलवान हो, और परमेश्वर का वचन तुम में बना रहता है, और तुम उस दुष्ट पर जय पा चुके हो" (1 यूहन्ना 2:14)।

अपनी एक यात्रा के दौरान पौलुस थिस्सलुनीके नगर गया और वहाँ सुसमाचार का प्रचार किया। बहुत-से लोग मसीह में परिवर्तित हुए। परन्तु कुछ ही सप्ताहों के बाद वहाँ भयानक सताव आरम्भ हो गया और पौलुस को नगर छोड़ना पड़ा। पौलुस को अपने नए विश्वासियों की भलाई की चिन्ता थी, इसलिए उसने अपने सहकर्मी तीमुथियुस को वापस नगर भेजा ताकि वह नए मसीहियों की सुधि ले सके। "और हमने तीमुथियुस को, जो हमारा भाई और मसीह के सुसमाचार में परमेश्वर का सेवक है, तुम्हारे पास इसलिए भेजा कि तुम्हें विश्वास में दृढ़ और स्थिर करे, और ढाढ़स बँधाए, ताकि इन क्लेशों और कठिनाइयों के कारण तुम में से कोई भी विचलित न हो" (1 थिस्सलुनीकियों 3:2–3)। पौलुस ने तीमुथियुस को इसलिए भेजा कि वह थिस्सलुनीकियों के साथ परमेश्वर का वचन बाँटे, क्योंकि वह जानता था कि कठिनाइयों और परीक्षाओं के बीच लोगों को दृढ़ करने वाली वस्तु परमेश्वर का वचन ही है।

पौलुस यह भी जानता था कि थिस्सलुनीकियों पर आने वाला सताव, यदि वे सही प्रकार से उत्तर न देते, तो उन्हें नष्ट कर सकता था। उसने यह नहीं कहा, "हिम्मत रखो, ये परीक्षाएँ तुम्हें और मज़बूत बना देंगी।" पौलुस भली-भाँति जानता था कि उनके क्लेशों के पीछे शैतान काम कर रहा है और वह उनके भीतर से परमेश्वर के वचन को चुराने का प्रयास कर रहा है। इसी कारण उसने लिखा, "इस कारण, जब मैं और अधिक सह न सका, तो मैंने तुम्हारे

विश्वास का हाल जानने के लिए भेजा, क्योंकि मुझे डर था कि कहीं परीक्षा लेने वाले (शैतान) ने तुम्हें किसी रीति से न बहकाया हो और हमारा परिश्रम व्यर्थ न हो जाए" (1 थिस्सलुनीकियों 3:5)।

पौलुस यह समझता था कि हमें सामर्थ बाहरी परिस्थितियों से नहीं, बल्कि परमेश्वर के भीतर के कार्य से मिलती है—उसके आत्मा के द्वारा और उसके वचन के माध्यम से। एक और अवसर पर पौलुस ने इफिसुस के मसीहियों के लिए यह प्रार्थना की कि परमेश्वर "अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें अपने आत्मा के द्वारा भीतरी मनुष्य में सामर्थ से दृढ़ करे" (इफिसियों 3:16)। पौलुस ने कुलुस्सियों की कलीसिया के लिए भी प्रार्थना की, "कि तुम उसकी महिमामय सामर्थ के अनुसार सब प्रकार के धीरज और सहनशीलता के लिये सामर्थ पाएँ" (कुलुस्सियों 1:11)। यदि परीक्षाएँ ही सामर्थ लाने वाली होतीं, तो पौलुस इन लोगों के लिये यह प्रार्थना करता कि परमेश्वर उन्हें दृढ़ करने के लिये क्लेश भेजे। परन्तु उसने ऐसा नहीं किया; उसने यह प्रार्थना की कि परमेश्वर उन्हें अपने भीतर निवास करने वाले आत्मा के द्वारा सामर्थ दे।

परमेश्वर हमें दृढ़ बनाने के लिये परीक्षाएँ नहीं भेजता। वह चाहता है कि हम उसके वचन, उसके आत्मा और उसकी सामर्थ के द्वारा भीतर से दृढ़ हों, ताकि हम जीवन की परीक्षाओं से विजयी होकर निकल सकें।

हमारे विश्वास की परीक्षा

कुछ लोग पूछ सकते हैं, "तो फिर हमारे विश्वास की परीक्षा का क्या? यदि परीक्षाएँ नहीं आतीं, तो परमेश्वर हमारे उस पर भरोसे को कैसे परखता है?" यह बात सदैव स्मरण रखें कि परमेश्वर की परीक्षा उसका वचन है। यीशु—जो स्वयं परमेश्वर है और परमेश्वर की इच्छा को प्रकट करता है—हमें यही दिखाता है। जब यीशु पृथ्वी पर था, तब उसने अपने चेलों की परीक्षा अपने वचन के द्वारा ली। यूहन्ना 6:5–14 में लिखा है कि बहुत बड़ी भीड़ यीशु के पीछे चल रही थी और उनके पास खाने के लिये कुछ नहीं था। भीड़ को रोटी और मछलियाँ बढ़ाकर खिलाने से पहले यीशु ने अपने शिष्य फिलिप्पुस से पूछा, "हम इन लोगों के खाने के लिये रोटी कहाँ से खरीदें?"—और उसने यह केवल उसे परखने के लिये कहा, क्योंकि वह स्वयं जानता था कि वह क्या करने वाला है (पद 5–6)। यीशु ने यह प्रश्न फिलिप्पुस से इसलिए पूछा कि उसे और अन्य चेलों को यह अवसर मिले कि वे इस परिस्थिति में यह विश्वास

प्रकट करें कि परमेश्वर उनकी आवश्यकता पूरी करेगा। यीशु ने फिलिप्पुस की परीक्षा अपने वचन के द्वारा ली।

अपनी सेवकाई के इस चरण तक यीशु पहले ही बहुत कुछ सिखा चुका था—एक ऐसे स्वर्गीय पिता के विषय में जो अपने लोगों से प्रेम करता है, उनकी चिन्ता करता है और उन सबकी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करता है जो पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता को खोजते हैं (मत्ती 6:25–33)। यीशु की परीक्षा परिस्थिति स्वयं नहीं थी, बल्कि उस परिस्थिति में परमेश्वर का वचन था। प्रश्न यह था कि क्या वे अपनी देखी और महसूस की जाने वाली बातों के बावजूद परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास करेंगे। आज भी परमेश्वर की परीक्षा हमारे लिये यही है: क्या हम जो देखते और महसूस करते हैं, उसके बावजूद उसके वचन पर विश्वास करेंगे?

आइए परमेश्वर की परीक्षा के कुछ और उदाहरण देखें। बाइबल कहती है कि परमेश्वर ने इब्राहीम की परीक्षा ली। "इन घटनाओं के बाद परमेश्वर ने इब्राहीम को परखा" (उत्पत्ति 22:1,)। आगे पढ़ने पर हम देखते हैं कि परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा कि वह अपने पुत्र इसहाक को बलिदान करे। परमेश्वर ने इब्राहीम से इसहाक को इसलिए नहीं मांगा कि वह देखे इब्राहीम कैसी प्रतिक्रिया देगा—जैसा कि बहुत-से लोग परमेश्वर की परीक्षा को समझाते हैं। वे मानते हैं कि परमेश्वर लोगों से उनकी प्रिय वस्तुएँ छीन लेता है ताकि उनकी प्रतिक्रिया देखे। परन्तु पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से बताता है कि इब्राहीम की परीक्षा परमेश्वर का वचन था— "क्या तू मेरी आज्ञा मानेगा?" "क्या तू वही करेगा जो मैं तुझसे कह रहा हूँ?"

आप सोच सकते हैं, "जब परमेश्वर पहले से जानता था कि इब्राहीम क्या करेगा, तो उसे परखने की क्या आवश्यकता थी?" परमेश्वर को इब्राहीम की परीक्षा लेने की कोई आवश्यकता नहीं थी। परमेश्वर के स्वभाव के विषय में पवित्रशास्त्र जो कहता है—कि वह अच्छा है और अच्छे का अर्थ वास्तव में अच्छा है—उसके आधार पर हम यह समझ सकते हैं कि इस अवसर से लाभ इब्राहीम को ही हुआ, क्योंकि उसे परमेश्वर के वचन की आज्ञा मानकर अपने विश्वास को प्रकट करने का अवसर मिला। इब्राहीम को इतना विश्वास था कि इसहाक वही पुत्र है जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने उससे की थी, कि "उसने यह मान लिया कि यदि इसहाक मर भी जाए, तो परमेश्वर उसे फिर से जीवित कर सकता है" (इब्रानियों 11:19)।

पुराने नियम की बहुत-सी घटनाएँ और व्यक्ति यीशु और क्रूस पर उसके कार्य की छाया हैं। इब्राहीम द्वारा अपने एकलौते पुत्र का बलिदान भी ऐसी ही एक घटना थी। इब्राहीम अपने पुत्र से प्रेम करता था, फिर भी वह उसे बलिदान करने को तैयार था—ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर पिता ने अपने पुत्र यीशु से प्रेम किया और फिर भी मानवजाति को छुड़ाने के लिये उसे बलिदान करने को तैयार हुआ। "उसने यह समझा कि परमेश्वर मरे हुओं को भी जिलाने में समर्थ है; और उसी से उसने इसहाक को प्रतीक रूप में फिर पाया" (इब्रानियों 11:19)। इसहाक मसीह का प्रतीक था और उसका बलिदान कलवरी पर यीशु के बलिदान की तस्वीर था। जब इब्राहीम ने इसहाक से कहा कि वे बलिदान चढ़ाने जा रहे हैं, तो पुत्र ने पूछा कि बलिदान के लिये मेम्ना कहाँ से आएगा। इब्राहीम ने उत्तर दिया, "हे मेरे पुत्र, परमेश्वर होमबलि के लिये स्वयं मेम्ना प्रदान करेगा" (उत्पत्ति 22:8)। यद्यपि उस दिन परमेश्वर ने इब्राहीम और इसहाक के लिये एक मेढ़ा प्रदान किया, परन्तु इब्राहीम भविष्य में आने वाले परमेश्वर के एकलौते पुत्र—यीशु—के विषय में बोल रहा था, जिसे पिता मनुष्यों के पापों के लिये बलिदानी मेम्ना के रूप में देगा।

पवित्रशास्त्र यह भी कहता है कि परमेश्वर ने यूसुफ को अपने वचन के द्वारा परखा। "उसने उनके आगे एक मनुष्य भेजा, अर्थात यूसुफ, जो दास होकर बेचा गया। उसके पाँव बेड़ियों से दुखाए गए, उसे लोहे की जंजीरों में बाँधा गया—जब तक कि उसका कहा हुआ वचन पूरा न हुआ, यहोवा के वचन ने उसे परखा" (भजन 105:17–19)। परमेश्वर ने यूसुफ से महानता का वादा किया था, परन्तु वह प्रतिज्ञा तब असफल होती हुई दिखाई दी जब उसके भाइयों ने उसे दासत्व में बेच दिया और वह झूठे आरोपों के कारण जेल में डाल दिया गया (उत्पत्ति 37–50)। परमेश्वर की परीक्षा वे कष्टदायक परिस्थितियाँ नहीं थीं जिनसे यूसुफ गुज़रा। परीक्षा यह थी: क्या यूसुफ उन असम्भव-सी दिखने वाली परिस्थितियों—दासत्व और कारावास—के बीच भी परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास बनाए रखेगा? ठीक इसी प्रकार परमेश्वर की परीक्षा हमारे लिये भी परिस्थितियाँ नहीं हैं; उसकी परीक्षा हमारे हालातों के बीच उसका वचन है। प्रश्न यह है कि क्या हम जो देखते हैं, जो महसूस करते हैं, और जो अनुभव करते हैं—उन सबके बावजूद—हम परमेश्वर के कहे हुए पर विश्वास करेंगे और उसकी आज्ञा मानेंगे?

क्या परीक्षाएँ हमें धैर्यवान बनाती हैं?

बहुत-से मसीही यह मानते हैं कि परमेश्वर हमें धैर्य सिखाने के लिये परीक्षाएँ भेजता है। मैंने भले मन से कहने वाले मसीहियों को यह कहते सुना है, "जो भी करो, धैर्य के लिये प्रार्थना मत करना; यदि तुम करोगे, तो परमेश्वर कठिन परिस्थितियाँ और कठिन लोगों को तुम्हारे

जीवन में भेज देगा ताकि तुम्हें अधिक धैर्यवान बनाए।" ज़रा सोचिए—हम सब किसी न किसी प्रकार की परीक्षाओं और कठिनाइयों से गुजरते हैं। यदि परीक्षाएँ ही हमें धैर्यवान बनातीं, तो क्या हम सब धैर्यवान नहीं होते?

बाइबल के अनुसार, परीक्षाएँ धैर्य उत्पन्न नहीं करतीं; वे हमें धैर्य का अभ्यास करने का अवसर देती हैं। धैर्य आत्मा का फल है, जो हर नए जन्म पाए मसीही के पुनर्जीवित आत्मा में विद्यमान होता है (गलातियों 5:22–23)। यह एक आत्मिक सामर्थ है जो हमें जीवन की चुनौतियों के बीच सहन करने और स्थिर बने रहने में सक्षम बनाती है। कठिनाइयाँ, परीक्षाएँ और क्लेश हमें उस धैर्य को प्रयोग में लाने और बाहर निकालने का अवसर देते हैं जो पहले से हमारे भीतर है, ताकि हम डटे रहें और तब तक स्थिर खड़े रहें जब तक अपनी परिस्थिति में जय न देख लें। याकूब 1:2–3 कहता है, "हे मेरे भाइयो, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, तो इसे पूरे आनन्द की बात समझो; क्योंकि यह जान लो कि तुम्हारे विश्वास की परख से धैर्य उत्पन्न होता है" ।

धैर्य की तुलना शारीरिक व्यायाम से कीजिए। व्यायाम मांसपेशियाँ उत्पन्न नहीं करता, बल्कि उन मांसपेशियों को काम में लाने और मज़बूत करने का अवसर देता है जो पहले से मौजूद हैं। इसी प्रकार परीक्षाएँ धैर्य उत्पन्न नहीं करतीं; वे उस धैर्य को प्रयोग में लाने और दृढ़ करने का अवसर देती हैं जो नए जन्म के कारण हमारे भीतर है।

परमेश्वर धर्मियों की जाँच करता है

शायद आप सोच रहे हों, "भजन 11:5 का क्या, जहाँ लिखा है कि परमेश्वर धर्मियों को परखता है?" यह पद उस प्रार्थना का एक अंश है जो दाऊद ने तब की थी जब राजा शाऊल उसे नष्ट करने का प्रयास कर रहा था। न केवल दाऊद का जीवन संकट में था, बल्कि उस पर यह झूठा आरोप भी लगाया जा रहा था कि वह शाऊल का सिंहासन लेना चाहता है।

दाऊद ने अपनी प्रार्थना की शुरुआत इस घोषणा के साथ की कि परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी बुरी क्यों न दिखें, "मैं यहोवा पर भरोसा रखता हूँ...यहोवा अपने पवित्र मन्दिर में है, यहोवा का सिंहासन स्वर्ग में है" (भजन 11:1, 4)। इसके बाद दाऊद ने यह घोषित किया कि परमेश्वर हर बात से अवगत है: "उसकी आँखें देखती हैं, उसकी पलके मनुष्यों को परखती हैं;

यहोवा धर्मियों को परखता है" (भजन 11:4–5)। मूल इब्रानी में "परखना" शब्द का अर्थ है "धातु को जाँचना"; रूपक रूप में इसका अर्थ है "जाँच करना" या "परीक्षण करना।" अर्थात, "वह सब कुछ ध्यान से देखता है और पृथ्वी पर हर एक की जाँच करता है; यहोवा धर्मी और दुष्ट—दोनों की जाँच करता है" (भजन 11:4–5)। यहाँ विचार यह नहीं है कि परमेश्वर परिस्थितियाँ रचकर मनुष्यों की परीक्षा ले रहा है, बल्कि यह कि वह मनुष्यों को देख रहा है। दाऊद यह कह रहा था कि परमेश्वर जानता है कि उसने शाऊल के विषय में अधर्म नहीं किया है, और इसलिए वह उसकी सहायता करेगा। दाऊद इस तथ्य पर भरोसा कर रहा था कि परमेश्वर सब कुछ देखता है—उसके और शाऊल दोनों के हृदयों को भी—और अंततः उसकी परिस्थिति में न्याय प्रकट होगा (भजन 11:6–7)।

दाऊद के ये शब्द पवित्रशास्त्र की एक सामान्य थीम को प्रकट करते हैं: परमेश्वर मनुष्यों के हृदयों को देखता है, उनके भीतरी विचारों और उद्देश्यों को जानता है, और उसी के अनुसार उनसे व्यवहार करता है (1 शमूएल 16:7; 1 इतिहास 28:9; यिर्मयाह 17:10)। इन पदों का परमेश्वर द्वारा अपने लोगों की परीक्षा लेने के लिये परिस्थितियाँ रचने से कोई सम्बन्ध नहीं है।

परीक्षाएँ सोने के समान नहीं होतीं

मसीहियों के बीच परीक्षाओं और क्लेशों के विषय में प्रचलित अनेक गैर-बाइबिलीय विचारों के बावजूद—यहाँ तक कि ऐसे गीत भी हैं जो कहते हैं कि परमेश्वर हमें सोने की परीक्षाएँ देता है—सच्चाई यह है कि परीक्षाएँ सोने के समान नहीं होतीं। परीक्षाएँ पृथ्वी पर पाप के परिणाम और शैतान के कार्य का फल हैं। वे हमारे भीतर से परमेश्वर के वचन को चुराने और हमारे विश्वास को नष्ट करने के लिये आती हैं। और वही विश्वास—न कि परीक्षाएँ—सोने से भी अधिक बहुमूल्य है।

परमेश्वर हमें परखने, हमें सामर्थी बनाने या हमें अधिक धैर्यवान बनाने के लिए परीक्षाएँ नहीं भेजता। परमेश्वर हमें अपने वचन के द्वारा परखता है और उसी के द्वारा हमें दृढ़ करता है। वह नए जन्म के द्वारा हमें धैर्य प्रदान करता है, और फिर जीवन की कठिनाइयों के बीच, अपने आत्मा के द्वारा—अपने वचन के माध्यम से—हमें भीतर से सामर्थ देता है, ताकि हम

उस धैर्य की क्षमता को प्रयोग में ला सकें और जीवन की चुनौतियों का सामना करते हुए स्थिर बने रहें।

10

क्लेश का एक उदाहरण

आइए नए नियम की एक घटना को देखें और समझें कि जिन बातों पर हमने चर्चा की है, वे एक कठिन परिस्थिति में कैसे लागू होती हैं। यीशु और उसके चेले गलील की झील को पार करने के लिए नाव में चढ़े। उसी समय एक भयानक आँधी आ गई और नाव में पानी भरने लगा। यीशु नाव के पिछले भाग में सो रहा था। चेलों ने उसे जगाया और उसने आँधी को शान्त कर दिया। यदि यीशु ने हस्तक्षेप न किया होता, तो सम्भव है कि वे सब मर जाते (मरकुस 4:35–41)।

क्यों?

यह घटना हम सबके सामने वह प्रश्न रखती है जिससे हम कठिन समय में जूझते हैं: "यह तूफ़ान क्यों आया?" हम जानते हैं कि परमेश्वर ने यह आँधी नहीं भेजी। हम यह कैसे जानते हैं? क्योंकि यीशु ने कहा कि परमेश्वर सबसे उत्तम सांसारिक पिता से भी उत्तम है। कोई अच्छा सांसारिक पिता जानबूझकर अपने बच्चों को किसी प्राणघातक परिस्थिति में नहीं डालेगा। इसके अतिरिक्त, यीशु ने आँधी को रोक दिया। यदि परमेश्वर ने आँधी भेजी होती, तो यीशु ने उसे रोककर परमेश्वर के कार्य को ही उलट दिया होता। वह तो अपने आप में विभाजित घर होता—और परमेश्वर अपने विरुद्ध कार्य नहीं करता।

क्या परमेश्वर ने आँधी को चलने दिया?

परमेश्वर ने आँधी को उसी प्रकार चलने दिया, जैसे वह लोगों को पाप करने और नरक में जाने की स्वतंत्रता देता है। वह इसके पक्ष में नहीं था और न ही किसी प्रकार से इसके पीछे था। विनाशकारी आँधियाँ पाप से क्षतिग्रस्त संसार में जीवन का हिस्सा हैं। वे आदम और हव्वा द्वारा अदन की वाटिका में किए गए चुनाव के परिणामों में से एक हैं। पाप के प्रवेश से पहले पृथ्वी को कुहासे से सींचा जाता था (उत्पत्ति 2:6)। उस समय घातक आँधियाँ

अस्तित्व में नहीं थीं। आदम के पाप ने पृथ्वी पर शाप को मुक्त किया—और उस शाप में विनाशकारी तूफ़ान भी सम्मिलित हैं।

क्या शैतान ने आँधी भेजी?

पवित्रशास्त्र से हम यह निश्चित रूप से नहीं कह सकते। परन्तु ब्रह्माण्ड का पहला विद्रोही होने के कारण वह अप्रत्यक्ष रूप से इसके लिए उत्तरदायी था, और जैसा हम देखेंगे, वह इस परिस्थिति में सक्रिय था। परमेश्वर ने किसी सार्वभौमिक उद्देश्य के लिए शैतान को चेलों के विरुद्ध काम करने की अनुमति नहीं दी। परमेश्वर और शैतान एक साथ मिलकर काम नहीं करते। शैतान परमेश्वर का "हिटमैन" नहीं है। वह परमेश्वर का कोई विशेष दण्ड-एजेंट भी नहीं है, जिसे उसके सर्वोत्तम सेवकों के लिए सुरक्षित रखा गया हो। और परमेश्वर ने "शैतान को रस्सी पर बाँध" कर नहीं रखा है। गलील की झील पर यह घातक आँधी इसलिए आई क्योंकि पाप से शापित पृथ्वी पर यही जीवन की वास्तविकता है।

इस घटना में हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि शैतान जीवन की कठिनाइयों के माध्यम से कैसे काम करता है ताकि मनुष्यों से परमेश्वर का वचन चुरा ले। जब चेले इस प्राणघातक आँधी में फँसे, उससे पहले यीशु उन्हें सिखा चुका था कि परमेश्वर एक ऐसा पिता है जो सबसे उत्तम सांसारिक पिता से भी उत्तम है। उसने उन्हें बताया था कि उनका स्वर्गीय पिता पक्षियों और फूलों की चिन्ता करता है और वे पक्षियों और फूलों से कहीं अधिक मूल्यवान हैं। यीशु ने उन्हें सिखाया था कि यदि उन्हें रोटी की आवश्यकता होगी, तो पिता उन्हें पत्थर नहीं देगा, और यदि मछली चाहिए होगी, तो साँप नहीं देगा। और अनेक चंगाइयों और छुटकारों के द्वारा यीशु पहले ही पिता की सहायता करने वाली सामर्थ को स्पष्ट रूप से प्रकट कर चुका था।

फिर भी, इस प्राणघातक परिस्थिति के बीच हम देखते हैं कि यीशु के मुख से निकले वे सब अद्भुत वचन चेलों के मन से जैसे चुरा लिए गए। यीशु से उनका पहला वाक्य था, "हे गुरू, क्या आपको हमारी चिन्ता नहीं? हम मरने पर हैं!" उन्होंने अपने स्वर्गीय पिता के प्रेम और देखभाल का कोई उल्लेख नहीं किया। उन्होंने यीशु के द्वारा प्रकट हुई पिता की सामर्थ का भी कोई उल्लेख नहीं किया। क्यों? क्योंकि परमेश्वर का वचन उनसे चुरा लिया गया था।

वचन कैसे चुराया गया?

चेले ऐसी परिस्थिति का सामना कर रहे थे जिससे यह प्रतीत होता था कि परमेश्वर को उनकी परवाह नहीं है। बढ़ती हुई भयानक आँधी को देखकर उन्होंने अच्छे स्वर्गीय पिता के विषय में परमेश्वर के वचन को अपने मन से फिसल जाने दिया। उन्होंने परमेश्वर की कही हुई बात के स्थान पर परिस्थिति की कही हुई बात से सहमति कर ली।

झूठों से सावधान रहिए

पवित्रशास्त्र से यह स्पष्ट नहीं है कि आँधी सीधे शैतान द्वारा उत्पन्न की गई थी या वह केवल आदम के पाप के कारण पृथ्वी पर आए शाप का परिणाम थी। एक अर्थ में, आँधी का प्रत्यक्ष कारण वास्तव में महत्त्वपूर्ण नहीं है। शैतान फिर भी उस परिस्थिति में सक्रिय था। चेलों के अपने शब्द—जब उन्होंने यीशु को पुकारा—हमें दिखाते हैं कि उन्होंने अपनी स्थिति के विषय में शैतान के झूठों को स्वीकार कर लिया था। शैतान कच्ची शक्ति से हम पर काम नहीं करता; वह झूठों के द्वारा काम करता है। हम पर उसका एकमात्र अधिकार यही है कि वह हमें झूठों पर विश्वास करने और उनके अनुसार कार्य करने के लिए प्रेरित करे। इसी प्रकार वह हमसे परमेश्वर का वचन चुरा लेता है। वह परमेश्वर के वचन का विरोध करता है। क्लेश, सताव और दुःख के बीच वह हमारे मन में फुसफुसाता है, "परमेश्वर को तुम्हारी परवाह नहीं है। उसने तुम्हें भुला दिया है। तुम डूबने वाले हो।"

बाइबल कहीं भी हमें शैतान की शक्ति से सावधान रहने को नहीं कहती, बल्कि उसकी मानसिक चालों से सावधान रहने को कहती है। "परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो…ताकि तुम शैतान की सब युक्तियों और छल के विरुद्ध खड़े रह सको" (इफिसियों 6:11)। परमेश्वर का हथियार उसका वचन है। "उसकी सच्ची प्रतिज्ञाएँ तुम्हारा हथियार हैं" (भजन 91:4)। हमें परमेश्वर के इस हथियार—उसके वचन—को लेकर अपनी परिस्थितियों के बीच शैतान के झूठों को प्रकट करना और उनका विरोध करना है।

शैतान के कुछ सबसे शक्तिशाली झूठ परमेश्वर के स्वभाव से जुड़े होते हैं—कि परमेश्वर वास्तव में कैसा है। मानव इतिहास के आरम्भ से ही शैतान की सबसे प्रभावी रणनीतियों में से एक परमेश्वर के चरित्र पर आक्रमण करना रही है। यही चाल उसने अदन की वाटिका में हव्वा के साथ चली। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाने से मना किया था और चेतावनी दी थी कि यदि वे ऐसा करेंगे तो मर जाएँगे। जब

शैतान हव्वा के पास आया, तो उसने परमेश्वर की बात का खण्डन किया: "'तुम निश्चय नहीं मरोगे,' सर्प ने स्त्री से कहा" (उत्पत्ति 3:4)। फिर उसने सीधे परमेश्वर के चरित्र पर आक्रमण किया: "क्योंकि परमेश्वर जानता है कि जिस दिन तुम उसे खाओगे, तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी और तुम परमेश्वर के समान हो जाओगे" (उत्पत्ति 3:5)। दूसरे शब्दों में, शैतान हव्वा से कह रहा था, "परमेश्वर तुम्हारे लिए कुछ रोककर रख रहा है। वह तुम्हें वंचित कर रहा है। वह जानता है कि यह फल तुम्हारे लिए अच्छा है, फिर भी वह तुम्हें खाने नहीं दे रहा। वास्तव में, परमेश्वर ही तुम्हारी समस्या है।" आज भी शैतान हमारे साथ यही रणनीति अपनाता है।

हमारा पिता हमारी सहायता करेगा

अब हम फिर से गलील की झील पर नाव में बैठे चेलों की ओर लौटते हैं। जब यीशु ने आँधी को रोक दिया, तो उसने चेलों को डाँटा: "और उसने उनसे कहा, तुम इतने डरपोक क्यों हो? तुम्हारे पास विश्वास क्यों नहीं?" (मरकुस 4:40)। ध्यान दीजिए—यीशु ने उनकी प्रतिक्रिया को "विश्वास की कमी" कहा। उन्होंने क्या किया था? उन्होंने आँधी पर कैसी प्रतिक्रिया दी थी? मैंने कुछ प्रचारकों को यह कहते सुना है कि इस घटना में यीशु इसलिए नाराज़ था क्योंकि वह चाहता था कि चेले स्वयं आँधी को रोकें। इसमें कुछ सच्चाई हो सकती है। परन्तु मेरा मानना है कि यीशु उनसे एक और भी बुनियादी कारण से खिन्न था। अब तक जो कुछ उसने उन्हें उनके स्वर्गीय पिता के विषय में सिखाया और दिखाया था, उसके बावजूद वे आँधी के बीच भी परमेश्वर की देखभाल पर सन्देह कर रहे थे। यीशु उनसे यह अपेक्षा करता था कि वे अपने पिता पर विश्वास के साथ प्रतिक्रिया दें: "यह परिस्थिति बहुत खराब दिख रही है। हमें नहीं पता क्या करना है। परन्तु हम जानते हैं कि स्वर्ग में हमारा एक भला पिता है जो हमसे प्रेम करता है और हमारी चिन्ता करता है, और वह हमें इस तूफ़ान से पार निकाल लेगा।"

यहाँ परमेश्वर के चरित्र के सही ज्ञान और प्रभावी विश्वास के बीच का सम्बन्ध देखिए। आप उस व्यक्ति पर दृढ़ विश्वास नहीं रख सकते जिस पर आप पूरी तरह भरोसा नहीं करते। यही कारण है कि शैतान लोगों को यह विश्वास दिलाने के लिए इतना परिश्रम करता है कि परमेश्वर लोगों के साथ बुरा करता है। यह भी ध्यान दीजिए कि क्योंकि चेले परमेश्वर के चरित्र के ज्ञान में दृढ़ नहीं थे, इसलिए जब परिस्थितियों ने ऐसा दिखाया मानो परमेश्वर को उनकी परवाह नहीं है, तो उन्होंने अपनी दृष्टि और भावनाओं की बात मान ली। यीशु ने उन पर दया की और फिर भी उनकी सहायता की। परन्तु उनकी प्रतिक्रिया से हम यह समझ

सकते हैं कि बाइबल से परमेश्वर के चरित्र की सही समझ विकसित करना क्यों अत्यन्त आवश्यक है।

निष्कर्ष

इस पुस्तक में दी गई जानकारी क्यों महत्वपूर्ण है? जैसा मैंने आरम्भ में कहा था, आपको यह समझना अनिवार्य है कि आपकी परेशानियाँ परमेश्वर से नहीं आतीं। यदि हम यह मान लें कि हमारी कठिनाइयों के पीछे परमेश्वर है, तो हम दो विनाशकारी परिणामों में से किसी एक के शिकार हो जाएँगे: निष्क्रियता या कड़वाहट। निष्क्रियता तब आती है जब हम यह समझ लेते हैं कि हमारी परीक्षाएँ परमेश्वर की ओर से हैं और परिणामस्वरूप हम उन चुनौतियों को स्वीकार कर लेते हैं जिनका हमें यीशु के नाम में विरोध करना चाहिए। दूसरी ओर, यदि हम यह मान लें कि परमेश्वर ने हमारी कठिनाइयों की योजना बनाई है या वह उनके पक्ष में है, तो हमारे भीतर परमेश्वर के प्रति कड़वाहट और क्रोध उत्पन्न हो सकता है।

इस समय कोई भी व्यक्ति पूरी तरह यह नहीं समझा सकता कि संसार में बुराई क्यों है या दुःख और पीड़ा मानव अस्तित्व का इतना बड़ा हिस्सा क्यों हैं। परन्तु जब आप जीवन की कठिनाइयों का सामना करते हैं, तो आपको बिना किसी सन्देह के यह जानना चाहिए कि आपकी परेशानियाँ परमेश्वर से नहीं आतीं। यह ज्ञान आपको उस मानसिक पीड़ा से मुक्त करेगा जो इन प्रश्नों से आती है: "परमेश्वर यह परीक्षा क्यों होने दे रहा है?" या "परमेश्वर मेरे जीवन में दुःख भेजकर क्या सिद्ध करना चाहता है?" ऐसे प्रश्न परमेश्वर पर आपके भरोसे को कमज़ोर करते हैं, जबकि वही परमेश्वर संकट के समय आपकी सहायता का स्रोत है। परमेश्वर के चरित्र का सही ज्ञान आपको जीवन की कठिनाइयों का सामना करने में सहायता करता है और "क्यों" वाले प्रश्नों को शांत कर देता है।

यदि आप जानते हैं कि परमेश्वर भला है—और भला का अर्थ वास्तव में भला ही है—और यदि आप इस बात के लिए पूरी तरह आश्वस्त हैं कि आपकी परेशानियों के पीछे किसी भी प्रकार से परमेश्वर नहीं है, तो आप जीवन की कठिनाइयों का सामना इस विश्वास के साथ कर सकते हैं: "मैं जिस परिस्थिति का सामना कर रहा हूँ, वह सचमुच बहुत बुरी है, परन्तु मैं जानता हूँ कि ये भयानक हालात परमेश्वर की ओर से नहीं आए हैं। मेरा पिता भला है और वह कभी ऐसी किसी बात के पीछे नहीं होगा। यह मेरे साथ क्यों हो रहा है? क्योंकि यह पाप से शापित पृथ्वी पर जीवन की वास्तविकता है। परन्तु परमेश्वर मुझे इससे होकर भी पार ले जाएगा और अन्ततः इससे बाहर भी निकालेगा। परमेश्वर इसे अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रयोग करेगा—अपने लिए अधिकतम महिमा और अधिक से अधिक लोगों के लिए अधिकतम भलाई—और वह वास्तविक बुराई में से सच्ची भलाई उत्पन्न करेगा। परमेश्वर अच्छा है…और अच्छे का अर्थ सचमुच अच्छा ही है।"

नोट्स

यीशु के कार्य

1. ये कुछ पद हैं जो बताते हैं कि यीशु ने अपने पिता के वचन बोले और अपने पिता के कार्य पिता की सामर्थ से किए: यूहन्ना 4:34; 5:36; 7:16; 8:28–29; 9:4; 10:32; 14:10; 17:4।

शैतान

2. शैतान एक स्वर्गदूत है। परमेश्वर ने स्वर्गदूतों को उसकी आज्ञा मानने, उसकी सेवा करने और उसकी उपासना करने के लिए रचा (अय्यूब 38:7; भजन 103:20–21)। स्वर्गदूतों को बुद्धि, सामर्थ और सुन्दरता दी गई थी (2 शमूएल 14:20; यहेजकेल 28:12; भजन 103:20)। पवित्रशास्त्र संकेत देता है कि उनके अलग-अलग पद, विशेषाधिकार और उत्तरदायित्व थे। भौतिक संसार और मनुष्य की सृष्टि से पहले परमेश्वर एक अदृश्य आत्मिक राज्य पर शासन करता था जो स्वर्गदूतों से भरा हुआ था। यहेजकेल 28:12–19 एक ऐसे स्वर्गदूत (करूब) का वर्णन करता है जिसका नाम लूसीफर था, जो अत्यन्त सुन्दर था और परमेश्वर के सिंहासन के सामने सेवा करता था। परन्तु लूसीफर घमण्डी हो गया। यशायाह 14:12–14 उन घटनाओं का वर्णन करता है जिनके कारण इस सुन्दर स्वर्गदूत का पतन हुआ। भविष्यवक्ता पहले बाबुल के राजा की बात करता है और फिर उस अदृश्य शक्ति की ओर संकेत करता है जो उसके पीछे कार्य कर रही थी—लूसीफर। लूसीफर का नाम इब्रानी में "ज्योति" या "चमक" के अर्थ में है। उसने परमेश्वर के विरुद्ध अपना अधिकार स्थापित करने और स्वयं राजा बनने का प्रयास किया। वह परमेश्वर का विरोधी बन गया—और "शैतान" का अर्थ ही "विरोधी" है। उसने स्वयं को एक वैकल्पिक राजा के रूप में प्रस्तुत किया और अनेक स्वर्गदूतों को अपने विद्रोह में सम्मिलित कर लिया, इस प्रकार उसने अदृश्य क्षेत्र में अपना नकली राज्य स्थापित किया। जो स्वर्गदूत उसके साथ विद्रोह में शामिल हुए, वे शैतान के राज्य के अधीन हो गए।

जब परमेश्वर ने पृथ्वी और मनुष्य की सृष्टि की, तो उसने मनुष्य को पृथ्वी पर अधिकार दिया (उत्पत्ति 1:26–28)। उसने पहले मनुष्य आदम को यह आज्ञा दी कि वह अच्छे और बुरे

के ज्ञान के वृक्ष का फल न खाए, ताकि मनुष्य को यह अवसर मिले कि वह ब्रह्माण्ड के सच्चे राजा—परमेश्वर—की सत्ता को पहचाने और उसके अधीन रहे। शैतान ने सर्प के द्वारा आदम और हव्वा को उस वर्जित वृक्ष का फल खाने के लिए उकसाया (उत्पत्ति 2:16–17; 3:1–6)। राजा की अवज्ञा करके आदम और हव्वा ने स्वयं को शैतान के शासन के अधीन कर दिया। शैतान का राज्य, जो पहले केवल स्वर्गीय क्षेत्रों में था, अब पृथ्वी पर स्थापित हो गया (लूका 4:6; 2 कुरिन्थियों 4:4)। उसका राज्य अराजकता, अधर्म, अन्धकार और छल से पहचाना जाता है। शैतान उस हर बात से घृणा करता है जिसे परमेश्वर प्रेम करता है।

शैतान, एक सृजित प्राणी होने के कारण, सर्वव्यापी नहीं है। वह अपने राज्य का कार्य अन्य गिरे हुए स्वर्गदूतों—जिन्हें दुष्टात्माएँ या दानव कहा जाता है—उन के द्वारा करता है। उसके राज्य में संगठन और श्रेणियाँ हैं (इफिसियों 2:2; 6:12)। "प्रधानताएँ" ऐसे प्राणी हैं जो मनुष्यों के द्वारा राष्ट्रों और बड़े क्षेत्रों पर प्रभाव डालते हैं। "अधिकार" उनसे कुछ कम श्रेणी के होते हैं और सम्भवतः शासन से जुड़े कार्य करते हैं। "इस संसार के अन्धकार के हाकिम" ऐसे प्राणी हैं जिनकी सेवकाई छल है—विशेष रूप से उन लोगों के विचारों को प्रभावित करना जो दूसरों की सोच को दिशा देते हैं। "आकाशी स्थानों में दुष्ट आत्माएँ" असंख्य दानव हैं जो मनुष्यों के साथ संपर्क में रहकर घोर पापों, धोखों, पशु-सदृश वासनाओं, कामुक इच्छाओं और धार्मिक छल को भड़काते हैं। शैतान और उसके अदृश्य अनुयायी छल, उत्पीड़न, आसक्ति और अधिकार के द्वारा मानवता को प्रभावित करते हैं—और यही संसार में बहुत-से दुःख और पीड़ा का कारण बनता है।

परमेश्वर ने शैतान का न्याय कर दिया है, परन्तु वह अभी पूरी तरह अधीन नहीं किया गया है। मसीह के सलीब पर शैतान का अधिकार टूट गया, परन्तु उसे अभी मनुष्यों से पूरी तरह अलग नहीं किया गया है। यीशु मसीह के पृथ्वी पर दुबारा आने पर हर घुटना झुकेगा और हर जीभ स्वीकार करेगी कि यीशु प्रभु है—जिसमें शैतान भी सम्मिलित है—और तब उसे मनुष्यों के साथ संपर्क से सदा के लिए हटा दिया जाएगा (यूहन्ना 12:31; यशायाह 14:15–17; प्रकाशितवाक्य 20:10)। इस समय शैतान के पास पृथ्वी पर कुछ समय शेष है और वह लोगों को निगलने की खोज में घूमता रहता है (1 पतरस 5:8)। इस पुस्तक में "शैतान" या "दुष्ट" शब्द का प्रयोग एक व्यापक अर्थ में किया गया है, जिसमें स्वयं शैतान और इस पृथ्वी के अदृश्य क्षेत्र में रहने वाली दुष्टात्माओं की भीड़ सम्मिलित है। शैतान जीवन की हर कठिनाई का कारण नहीं होता, परन्तु वह और उसकी दुष्टात्माएँ सक्रिय रूप से मनुष्यों के हृदय और मन को प्रभावित करती हैं, ताकि वे परमेश्वर और उसके राज्य की वास्तविकता के प्रति अन्धे बने रहें और ऐसे कार्य करते रहें जो परमेश्वर की इच्छा के विपरीत हों। इसके अतिरिक्त,

जीवन की कठिनाइयाँ और दुःख पाप के कारण हैं—जिसकी शुरुआत आदम के पाप से हुई—और अन्ततः वे ब्रह्माण्ड के पहले विद्रोही, शैतान तक ही जाकर जुड़ते हैं।

रोमियों 9

रोमियों 9, 10 और 11 में जिस विषय पर चर्चा हो रही है, वह है—परमेश्वर का इस्राएल राष्ट्र के साथ व्यवहार। ये अध्याय इस्राएल के साथ परमेश्वर के व्यवहार में उसकी प्रभुता और न्याय को दिखाते हैं। ये अध्याय व्यक्तिगत लोगों के जीवन में होने वाले दुःख की व्याख्या नहीं हैं। रोमियों 9 का यह संक्षिप्त सारांश ध्यान से देखिए, क्योंकि इसमें कई ऐसे पद हैं जिन्हें परमेश्वर की प्रभुता के नाम पर अक्सर गलत समझा और गलत लागू किया जाता है।

रोमियों 9:1–5 में पौलुस अपने लोगों—यहूदियों—के लिए अपना हृदय उँडेल देता है। उसे बड़ा शोक है, क्योंकि उनमें से अधिकांश ने मसीह को ठुकरा दिया है। पौलुस कहता है कि यद्यपि समूचे इस्राएल ने सुसमाचार को स्वीकार नहीं किया, फिर भी परमेश्वर का वचन असफल नहीं हुआ। अन्यजाति मसीह में विश्वास के द्वारा इब्राहीम की सन्तान बन गए हैं (रोमियों 9:6–8)। फिर पौलुस समझाता है कि परमेश्वर के लिए यह अन्यायपूर्ण नहीं है कि वह उन लोगों को—जो इब्राहीम की शारीरिक सन्तान नहीं हैं—अपना बना ले। पौलुस बताता है कि परमेश्वर ने जान-बूझकर एक विशेष वंश-रेखा चुनी, जिसके द्वारा अन्ततः उद्धारकर्ता आएगा—और यह इब्राहीम की बुलाहट से आरम्भ हुआ (रोमियों 9:9–12)।

परमेश्वर ने इब्राहीम और सारा को एक पुत्र देने की प्रतिज्ञा की थी। परन्तु सारा बाँझ थी, इसलिए प्रतिज्ञा के उत्तर में सारा और इब्राहीम ने अपनी ही योजना बना ली कि प्रतिज्ञा को अपने तरीके से पूरा करें। इब्राहीम सारा की दासी हाजिरा के पास गया और इस्माएल उत्पन्न हुआ। परन्तु अपनी ही रीति से प्रतिज्ञा को पूरा करने का उनका प्रयास परमेश्वर की योजना को रोक न सका। परमेश्वर ने इसहाक को चुना था, इस्माएल को नहीं—उसी "बीज" के रूप में जिसके द्वारा और जिसके माध्यम से उद्धारकर्ता की प्रतिज्ञा आगे बढ़ेगी (उत्पत्ति 26:1–5)। बहुत वर्षों बाद इसहाक ने रिबका से विवाह किया, और रिबका के गर्भ में जुड़वाँ बच्चे हुए—एसाव और याकूब। जुड़वाँ बच्चों के जन्म से पहले ही परमेश्वर ने याकूब को उस वंश-रेखा के रूप में चुन लिया जिसके द्वारा इब्राहीम को दी गई प्रतिज्ञाएँ पूरी होंगी।

रोमियों 9:13 में पौलुस मलाकी 1:2–3 को उद्‌धृत करता है जहाँ परमेश्वर कहता है, "मैंने याकूब से प्रेम किया, पर एसाव से बैर रखा।" यदि आप संदर्भ को नहीं समझते, तो यह पद उन अन्य पदों के विरोध में लगता है जो कहते हैं कि परमेश्वर सब मनुष्यों से प्रेम करता है। परन्तु रोमियों 9:11–13 में पौलुस व्यक्तियों की नहीं, राष्ट्रों की बात कर रहा है: "क्योंकि बच्चे अभी जन्मे न थे, न उन्होंने कुछ भला या बुरा किया था—ताकि परमेश्वर की चुनने की योजना कर्मों से नहीं, बल्कि बुलाने वाले से स्थिर रहे…रिबका से कहा गया, बड़ा छोटा की सेवा करेगा। जैसा लिखा है, याकूब से मैंने प्रेम किया, पर एसाव से बैर रखा।" यहाँ याकूब इस्राएल राष्ट्र है और एसाव एदोम राष्ट्र है। "बच्चे" शब्द मूल पाठ में नहीं है; इस संदर्भ में "राष्ट्र" अधिक अर्थपूर्ण है। इस्राएल राष्ट्र याकूब से निकला और एदोम राष्ट्र एसाव से। जब रिबका याकूब और एसाव के गर्भ में थी, तब परमेश्वर ने उससे कहा कि उसके गर्भ में दो राष्ट्र हैं (उत्पत्ति 25:22–23)। बात यह है कि किसी भी समूह ने ऐसा कुछ नहीं किया था जिससे वे परमेश्वर के विशेष लोग बनने के योग्य ठहरें। उद्‌धारकर्ता जिस वंश के द्‌वारा आएगा, उसे चुनना परमेश्वर का अधिकार था—और उसने याकूब (अर्थात इस्राएल राष्ट्र) को चुना।

परमेश्वर ने एदोम (एसाव) से "बैर" रखा, क्योंकि जब हम उनके इतिहास को देखते हैं, तो पाते हैं कि एदोम राष्ट्र निरन्तर इस्राएल (याकूब) का विरोध करता रहा। यहाँ "बैर" का अर्थ है "कम प्रेम करना" या "तुलनात्मक रूप से कम मान देना।" एम्प्लिफाइड अनुवाद इस अर्थ को अधिक स्पष्ट करता है: "जैसा लिखा है, याकूब से मैंने प्रेम किया, पर एसाव से मैंने बैर रखा [याकूब के प्रति मेरी भावना की तुलना में उसे तुलनात्मक रूप से कम महत्व दिया]" (रोमियों 9:13)।

रोमियों 9:14–16 में पौलुस प्रश्न उठाता है और उसका उत्तर देता है: "क्या परमेश्वर अन्यायी है कि उसने अपना आशीष एक विशेष समूह—अर्थात इब्राहीम, इसहाक और याकूब के वंशजों—पर रखा?" पौलुस उत्तर देता है, "नहीं, परमेश्वर जिस पर चाहे दया कर सकता है।" रोमियों 9:15 निर्गमन 33:19 का उद्‌धरण है, जहाँ परमेश्वर कहता है कि वह जिस पर चाहे दया करेगा—यहाँ तक कि उन यहूदियों पर भी जो निर्गमन 32 में उनकी भयानक मूर्तिपूजा के कारण काट डाले जाने के योग्य थे। दूसरे शब्दों में, इब्राहीम की आशीषें किस वंश-रेखा से होकर आगे जाएँगी—यह परमेश्वर का निर्णय था। प्रभुता रखने वाले प्रभु को यह अधिकार है कि वह जिसे चाहे आशीष दे।

अब रोमियों में आगे बढ़ते हुए हम एक और पद पर आते हैं जिसे बहुत व्यापक रूप से गलत समझा और गलत उपयोग किया गया है। रोमियों 9:17 कहता है, "क्योंकि पवित्रशास्त्र फिरौन से कहता है, 'मैंने तुझे इसी हेतु खड़ा किया कि तुझ में अपनी सामर्थ दिखाऊँ और मेरा नाम सारी पृथ्वी पर प्रसिद्ध हो।'" कुछ लोग कहते हैं कि इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर ने फिरौन को केवल इसलिए उठाया ताकि वह उसे कुचल दे—और क्योंकि परमेश्वर कुम्हार है और हम मिट्टी, इसलिए वह हमारे साथ भी ऐसा कर सकता है। परन्तु यह सही नहीं है। पद 17 निर्गमन 9:13–16 की ओर संकेत करता है, जहाँ परमेश्वर ने फिरौन को बताया कि उसकी प्रभुता-भरी दया ने ही फिरौन और मिस्रियों को पहले के विपत्तियों में पूर्ण नाश से बचाया था। निर्गमन में आगे लिखा है: "क्योंकि अब तक मैं अपना हाथ बढ़ाकर तुझे और तेरे लोगों को महामारी से मार डालता, और तू पृथ्वी से मिट जाता; परन्तु इसी कारण से मैंने तुझे रहने दिया कि मैं तुझे अपनी सामर्थ दिखाऊँ और मेरा नाम सारी पृथ्वी पर प्रसिद्ध हो" (निर्गमन 9:15–16)। मूल इब्रानी में अर्थ है, "मैंने तुझे खड़ा रहने दिया" या "मैंने तुझे टिकाए रखा।" परमेश्वर ने अपनी दया में मिस्रियों को बनाए रखा, ताकि उन्हें यह दिखाने का और अवसर मिले कि वही—यहोवा—सच्चा परमेश्वर है। जैसा हमने अध्याय 5 में उल्लेख किया, कुछ मिस्री लोगों ने परमेश्वर की ओर प्रतिक्रिया दी और परमेश्वर द्वारा मिस्र में किए गए सामर्थी कार्यों के कारण—जिनसे उसने इस्राएल को दासत्व से छुड़ाया—वे बचाए भी गए (निर्गमन 8:19; 9:20; 12:37–38; यहोशू 2:9–11)।

फिर पौलुस यह निष्कर्ष निकालता है कि परमेश्वर अपनी इच्छा और बुद्धि के अनुसार—मानवजाति के एक भाग को (पुराने नियम में यहूदियों को और नए नियम में अन्यजातियों को) आशीष देता है, और दूसरे भाग को उनके पापों के परिणाम भोगने देता है (पुराने नियम में मिस्रियों को और नए नियम में उन यहूदियों को जिन्होंने मसीह को ठुकराया)। रोमियों 9:18 कहता है, "इसलिये वह जिस पर चाहता है दया करता है, और जिसे चाहता है कठोर कर देता है।" कुछ लोग इस पद का अर्थ यह निकालते हैं कि परमेश्वर कभी-कभी लोगों के हृदय को कठोर कर देता है, क्योंकि वह कुम्हार है और जो चाहे कर सकता है—और वे यह भी कहते हैं कि आखिरकार परमेश्वर ने फिरौन का हृदय कठोर किया था। परन्तु "जिसे चाहता है कठोर कर देता है" वाक्य एक *हिब्रू- शैली का प्रयोग* है, जिसका हम अध्याय 5 में अध्ययन कर चुके हैं। इब्रानी भाषा में परमेश्वर के विषय में यह कहा जाता है कि उसने वह किया जो उसने केवल होने दिया। यदि हम फिरौन के विषय में लिखे सभी कथनों को सावधानी से पढ़ें, तो स्पष्ट होता है कि फिरौन ने स्वयं अपना हृदय परमेश्वर के प्रति कठोर किया (1 शमूएल 6:6), ठीक वैसे ही जैसे इस्राएल के बच्चों ने यीशु को ठुकराकर स्वयं अपना हृदय कठोर किया (मत्ती 13:13–15; यूहन्ना 12:37–38)।

रोमियों 9:19–20 में पौलुस कुछ प्रश्नों से निपटना आरम्भ करता है: "तू मुझसे कहेगा, 'फिर वह दोष क्यों लगाता है? उसकी इच्छा का कौन विरोध कर सकता है?' परन्तु हे मनुष्य, तू कौन है जो परमेश्वर का उत्तर देता है? क्या बनाया हुआ बनाने वाले से कहेगा, 'तूने मुझे ऐसा क्यों बनाया?'"। पौलुस कहता है कि कोई भी व्यक्ति यह अधिकार लेकर परमेश्वर से इस प्रकार प्रश्न नहीं कर सकता। संदर्भ में "बनाया हुआ" *राष्ट्र* हैं। फिर पौलुस यिर्मयाह 18:1–10 में कुम्हार के दृष्टान्त का उद्धरण देता है, जो इस्राएल के साथ परमेश्वर के व्यवहार की बात करता है। उस दृष्टान्त का सार यह है कि सर्वाधिकार रखने वाले कुम्हार के रूप में परमेश्वर को यह अधिकार है कि वह इस्राएल को उनकी वफादारी के आधार पर स्वीकार करे या अस्वीकार करे। इस दृष्टान्त का परमेश्वर द्वारा व्यक्तिगत लोगों को त्रासदियों और परीक्षाओं के द्वारा "गढ़ने" से कोई सम्बन्ध नहीं है।

यदि आप इन अंशों को संदर्भ से हटाकर पढ़ेंगे, तो गलत निष्कर्ष निकालना सम्भव है। कुछ लोग यह दावा करते हैं कि रोमियों 9 के अनुसार परमेश्वर कुछ लोगों को "क्रोध के पात्र" बनाता है जो विनाश के लिये हैं, और कुछ लोगों को "दया के पात्र" बनाता है जो महिमा के लिये हैं—क्योंकि वह कुम्हार है और हम मिट्टी हैं। पौलुस रोमियों 9:22 में आगे कहता है: "यदि परमेश्वर ने अपना क्रोध दिखाने और अपनी सामर्थ प्रगट करने की इच्छा रखते हुए भी विनाश के लिये तैयार किए गए क्रोध के पात्रों को बड़े धीरज से सहा..." यहाँ "क्रोध के पात्र" फिरौन (और मिस्री) तथा इस्राएल हैं। दोनों समूह परमेश्वर के सामने पापी थे—मिस्र मूर्तिपूजा के कारण और इस्राएल अपने मसीहा को ठुकराने के कारण। दोनों ने परमेश्वर की कृपा, सामर्थ और धीरज के महान प्रकटिकरणों के सामने अपने-अपने हृदय कठोर किए, और इस प्रकार उन्होंने अपने आपको विनाश के लिये "तैयार" किया।

रोमियों 9:23–24 में पौलुस कहता है: "और उसका यह अधिकार भी है कि वह हम जैसे लोगों पर—चाहे हम यहूदी हों या अन्यजाति—अपनी महिमा के धन उँडेलने की कृपा करे, ताकि सब लोग देखें कि उसकी महिमा कितनी महान है"। पौलुस अपने तर्क का निष्कर्ष यह बताकर करता है कि परमेश्वर कुम्हार के रूप में अब अन्यजातियों को भी विश्वास के द्वारा उद्धार देने का अधिकार रखता है, क्योंकि यहूदियों ने उसके उद्धार के प्रस्ताव को ठुकरा दिया है।

ये पद यह अर्थ नहीं दे सकते कि परमेश्वर कुछ लोगों को विनाश के लिये और कुछ को महिमा के लिये बनाता है, क्योंकि नया नियम सिखाता है कि व्यक्तिगत रूप से हम किस

प्रकार के “पात्र” होंगे—यह हमारे उत्तर पर निर्भर है, परमेश्वर के मनमाने निर्णय पर नहीं। 2 तीमुथियुस 2:20–21 कहता है: “बड़े घर में केवल सोने-चाँदी के ही नहीं, पर लकड़ी और मिट्टी के भी बरतन होते हैं; और कुछ आदर के लिये, और कुछ अनादर के लिये। इसलिए यदि कोई अपने आप को इनसे शुद्ध कर ले, तो वह आदर का पात्र ठहरेगा, पवित्र किया हुआ, स्वामी के उपयोग के योग्य, और हर भले काम के लिये तैयार।”

1 थिस्सलुनीकियों 4:3–4 कहता है: “क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यही है—तुम्हारा पवित्रीकरण—कि तुम व्यभिचार से बचे रहो; और तुम में से हर एक पवित्रता और आदर के साथ अपने बरतन (अर्थात अपने शरीर) को रखना जाने।” इसलिए आप “क्रोध का पात्र” होंगे या “आदर का पात्र”—यह परमेश्वर का निर्णय नहीं, आपका उत्तर है।

अनुमति के अर्थ में प्रयुक्त कारणवाचक क्रियाएँ

यह जानकारी इ.डब्ल्यू. बुलिंजर की पुस्तक *फ़िगर ऑफ़ स्पीच जो बाइबल में इस्तमाल की गई उस* में सत्यापित की जा सकती है। बुलिंजर बताता है कि जब कोई कारणवाचक क्रिया अनुमति के अर्थ में प्रयोग की जाती है, तो वह एक मुहावरा इडियम होता है और संदर्भ यह तय करता है कि क्रिया कारणवाचक है या अनुमति के अर्थ में (पृष्ठ 823)। मुहावरा वह अभिव्यक्ति है जिसका अर्थ सामान्य व्याकरणिक नियमों से या शब्दों के सामान्य अर्थों से सहज रूप से अनुमानित नहीं किया जा सकता (वेबस्टार की यूनिवर्सल कॉलेज डिक्शनरी)। अंग्रेज़ी भाषा में भी मुहावरे हैं। उदाहरण के लिए, “इट्स रेनिंग कैट्स एंड डॉग्स” का अर्थ है “बहुत तेज़ बारिश हो रही है।” सामान्यतः “बिल्लियों” और “कुत्तों” का बारिश से कोई सम्बन्ध नहीं होता, परन्तु संदर्भ में उसका अर्थ समझ आ जाता है। इब्रानी भाषा में भी ऐसा ही है।

आदम क्लेरेक की *क्लेरेक कॉमेंट्री , मैथ्यू –रिवलेशन* भी इस बात की पुष्टि करती है कि इब्रानी भाषा में कारणवाचक क्रियाएँ अनुमति के अर्थ में प्रयोग होती थीं। क्लेरेक प्रभु-प्रार्थना की पंक्ति “और हमें परीक्षा में न ला” के विषय में कहता है कि यह “एक साधारण हिब्रू-शैली है; परमेश्वर के विषय में कहा जाता है कि वह वह करता है जिसे वह केवल होने देता है या सहता है” (पृष्ठ 87)।

रॉबर्ट यंग की *यंग्स एनालेटिक्स कांकोर्डेंस* के एक पुराने संस्करण में परिशिष्ट (अपेंडेक्स) में इस क्रिया-प्रयोग पर चर्चा है। वह पुस्तक अब मुद्रण से बाहर है। उसी लेखक की *हिंट्स टू बाइबल इंटरप्रिटेशन* में भी इन क्रियाओं पर चर्चा मिलती है, और वह भी मुद्रण से बाहर है।

सुसमाचार के लिये सताव का दुःख

प्रेरितों के काम की पुस्तक में सुसमाचार प्रचार के कारण सताव सहने के कुछ अन्य उदाहरण हैं: प्रेरितों के काम 4:3–21; 6:9–15; 7:54–60; 8:1–4; 9:1–2; 12:1–11।

परमेश्वर अच्छा है।

...और अच्छा मतलब अच्छा है।